www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ... | पत्र नहीं; मित्र | संपर्क : deshbandhusgr@gmail.com

देशबन्धु

वर्ष – 8 । अंक–237 । सागर, सोमवार, 16 अक्टूबर 2023 । पृष्ठ –8 । मूल्य – 3.00 रुपए

नातीराजा, पज्जन चतुर्वेदी, नीरज, हरप्रसाद और रामसिया को दोबारा मौका पृष्ठ 3

▪ सिंधिया के खिलाफ बन गया यह चुनाव
▪ असम के मुख्यमंत्री सांप्रदायिक दिशा में चला रहे हैं भाजपा का चुनावी अभियान पृष्ठ 4

▪ यादवेन्द्र को टीकमगढ़, चंदा सिंह को खरगापुर, किरण को जतारा और नितेन्द्र को बनाया पृष्ठ 6

कांग्रेस की सूची जारी: पूर्व मंत्री सुरेंद्र चौधरी, हर्ष यादव, तरवर लोधी और नीरज शर्मा चुनाव मैदान में पृष्ठ 8

सार-समाचार

पत्रकार कमलेश पांडे नहीं रहे

आज गृह ग्राम गुधोरा में होगा अंतिम संस्कार

छतरपुर, देशबन्धु। वरिष्ठ पत्रकार और देशबंधु के ब्यूरो चीफ कमलेश पांडे का रविवार को इलाज के दौरान झांसी के एक अस्पताल में निधन हो गया। वे 49 वर्ष के थे। श्री पांडे 11 अक्टूबर को एक सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उनका अंतिम संस्कार 16 अक्टूबर को सुबह 9 बजे उनके गृह ग्राम गुधोरा में होगा।

लवकुशनगर क्षेत्र के ग्राम गुधोरा में 1 जून 1974 को जन्में श्री पांडे राज एक्सप्रेस सहित कई अखबारों से जुड़े रहे। वे अपने पीछे पत्नी और एक पुत्र को रोता बिलखता छोड़ गए हैं। पुत्र 11वीं में अध्ययनरत है।

जानकारी के मुताबिक श्री पांडे 11 अक्टूबर की शाम बाईक से लौट रहे थे तभी सड़क पर एक जानवर से बाइक टकरा जाने पर उनके सिर में गंभीर चोट आ गई थी। श्री पांडे को तत्काल जिला अस्पताल ले जाया गया था लेकिन हालत नाजुक होने से उन्हें ग्वालियर रेफर कर दिया गया था लेकिन परिजनों ने उनकी गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें झांसी में ही सरोज हॉस्पिटल में भर्ती करा दिया था जहां उनका सफल ऑपरेशन भी हो गया था। लेकिन इसके बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका और आज उनका निधन हो गया। श्री पांडे बेहद मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। पत्रकार कमलेश पांडे के आकस्मिक निधन की खबर मिलने पर पत्रकार जगत में शोक की लहर दौड़ गई। पत्रकारों, साहित्यकारों, नेताओं, व्यापारियों, अधिकारियों, कर्मचारियों सहित अनेक लोगों ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

कैंपस के अंदर बाइक दुर्घटना में जेएनयू छात्र की मौत

नई दिल्ली, एजेंसी। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में रविवार तड़के एक बाइक दुर्घटना में 22 वर्षीय एक छात्र की मौत हो गई, जबकि उसके साथ बाइक पर सवार उसका दोस्त घायल हो गया। बाइक दो पैदल छात्रों से टकरा गई थी। वे दोनों भी घायल हैं। पुलिस ने बताया कि दुर्घटना उस समय हुई जब केटीएम बाइक, जिस पर मृतक और उसका दोस्त यात्रा कर रहे थे, दो पैदल यात्रियों से टकरा गई। मृतक की पहचान बिहार के गया के मूल निवासी अंशू कुमार के रूप में हुई है।

जम्मू-कश्मीर के राजौरी में बारूदी सुरंग विस्फोट में सैनिक घायल

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा के पास रविवार को एक बारूदी सुरंग विस्फोट में एक सैनिक घायल हो गया। नौशेरा सेक्टर के कलसियान इलाके में नियंत्रण रेखा के पास बारूदी सुरंग विस्फोट में गुरचरण सिंह नामक एक सैनिक घायल हो गया। सैनिक सिख लाइट इन्फैंट्री का है। सूत्रों ने कहा, उन्हें नौशेरा में प्राथमिक उपचार दिया गया और फिर उधमपुर शहर में सेना के कमांड अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया।

श्रीलंकाई नौसेना ने तमिलनाडु के 27 मछुआरों को गिरफ्तार किया

चेन्नई, एजेंसी। श्रीलंकाई नौसेना ने रामेश्वरम और थंगाचीमादम से 27 मछुआरों को गिरफ्तार किया है, जबकि मछुआरों की पांच मैकेनिकल नौकाएं भी जब्त की हैं। चार नावों में रामेश्वरम घाट से कम से कम 23 मछुआरे और एक नाव में चार मछुआरे थंगाचीमादम से समुद्र में उतरे थे। तटीय पुलिस अधिकारियों ने कहा कि गिरफ्तार किए गए लोग कच्चाथीव और नेदुनथीवु के पास मछली पकड़ रहे थे। मछुआरों और उनकी नौकाओं को श्रीलंका के मन्नार और कनकेसन्थुराई बंदरगाहों पर ले जाया गया।

तमिलनाडु में 15.21 करोड़ का सोना जब्त

चेन्नई, एजेंसी। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) के अधिकारियों ने इस सप्ताह तमिलनाडु के चेन्नई और त्रिची में चलाए गए तीन अलग-अलग अभियानों में, 15.21 करोड़ मूल्य का 25 किलोग्राम तस्करी का सोना और 56.3 लाख रुपए मूल्य की भारतीय मुद्रा जब्त कीं। आधिकारिक जानकारी के मुताबिक डीआरआई के अधिकारियों को विशिष्ट खुफिया जानकारी प्राप्त हुई थी कि श्रीलंका से सोने की तस्करी की गई थी और इसे नागपट्टिनम जिले के तटीय क्षेत्र से होते हुए एक कार में चेन्नई ले जाया जा रहा था।

समृद्धि एक्सप्रेसवे पर 2 हादसे, 15 की मौत

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ने जताया शोक, मुआवजे की घोषणा

छत्रपति संभाजीनगर, एजेंसी। मुंबई-नागपुर समृद्धि एक्सप्रेसवे पर रविवार को तेज रफ्तार ट्रक, बस और एक निजी कार से हुई दो अलग-अलग दुर्घटनाओं में कम से कम 15 लोगों की मौत हो गई और 23 अन्य घायल हो गए। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, महाराष्ट्र के विपक्षी नेताओं और अन्य लोगों ने दुर्घटना में यात्रियों की मौत पर शोक व्यक्त किया है। पीएम मोदी ने प्रत्येक मृतक के परिजनों को 2 लाख रुपए और घायलों को 50,000 रुपए देने की घोषणा की, जबकि शिंदे ने इस त्रासदी में मारे गए लोगों के लिए 5 लाख रुपए मुआवजे और सभी घायलों के लिए पूर्ण मुफ्त इलाज की घोषणा की।

एक अधिकारी ने बताया कि पहली दुर्घटना देर रात करीब 1.15 बजे हुई जब एक यात्री मिनी बस तीर्थयात्रा के बाद बुलढाणा से छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) होते हुए नासिक जा रही थी। अधिकारी ने कहा कि बस बुलढाणा से छत्रपति संभाजीनगर आ रही थी और राजमार्ग के किनारे कुछ देर के लिए रुकी थी, अचानक ट्रक ने उसे पीछे से टक्कर मार दी। दुर्घटना में कम से कम 12 यात्रियों की मौत हो गई और 23 अन्य घायल हो गए। मुंबई-नागपुर समृद्धि एक्सप्रेसवे पर जामबरगांव टोल बूथ से थोड़ी दूरी पर हुई दुर्घटना में मरने वालों में दो नाबालिग बच्चे हैं और घायलों में आठ महिलाएं हैं। मृतकों की पहचान नासिक की तनुश्री सोल्से (5), संगीत अस्वाले (40), पंजाबी जगताप (38), काजल सोल्से (32), रजनी तापसे (32), हौसाबाई शिरसत (70), जुम्बार गांगुर्डे (58), अमोल गांगुर्डे (18), सारिका गांगुर्डे (40), मिलिंद पगारे (50), दीपक केकाने (47) तथा छत्रपति संभाजीनगर में वैजापुर के रतन जमदाडे (45) के रूप में हुई है। दूसरी दुर्घटना में, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) नेता के परिवार के सदस्यों को ले जा रही एक कार डिवाइडर से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई, जिससे उसमें सवार तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई।

दिल्ली में भूकंप के झटके

नई दिल्ली, देशबन्धु। दिल्ली-एनसीआर में रविवार दोपहर बाद भूकंप के झटके महसूस किए गए। राष्ट्रीय भूकंप केंद्र ने बताया कि स्थानीय समय के अनुसार दोपहर बाद लगभग 4:08 बजे भूकंप आया। इसकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3.1 मापी गई। इसका केंद्र हरियाणा के फरीदाबाद में था जो दिल्ली की सीमा से सटा हुआ है।

2 हफ्ते में तीसरी बार लगे झटके

भूकंप का केंद्र जमीन से 10 किलोमीटर की गहराई पर था। भूकंप के झटके आते ही लोग अपने घरों और कार्यालयों से भागकर बाहर निकल गए। लोगों ने बताया कि उन्होंने भूकंप के तेज झटके महसूस किए। कुछ दिन पहले भी राष्ट्रीय राजधानी, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में भूकंप आया था। उस समय भूकंप का केंद्र नेपाल था। दो हफ्ते में ये तीसरी बार दिल्ली में झटके महसूस किए गए हैं। इससे पहले तीन अक्टूबर को दिल्ली-एनसीआर समेत उत्तर भारत के कई स्थानों पर भूकंप के झटके महसूस हुए थे। दो अक्टूबर को भी दिल्ली-हरियाणा में झटके लगे थे। दो हफ्ते पहले एक दिन में दो बार हिली थी धरती 3 अक्टूबर को दिल्ली-एनसीआर उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान समेत मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में दोपहर 2.25 और 2.53 बजे भूकंप के झटके महसूस किए गए। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 4.6 रही। इसका केंद्र नेपाल के बझांग जिले में था।

ऑपरेशन अजय : इजरायल से 2 और उड़ानें दिल्ली पहुंचीं

नई दिल्ली, एजेंसी। युद्धग्रस्त इजरायल में फंसे भारतीय नागरिकों को निकालने के 'ऑपरेशन अजय' के तहत रविवार सुबह दो और उड़ानें राष्ट्रीय राजधानी में उतरीं। एक में 197 और दूसरी में 274 यात्री थे। तेल अवीव से 197 यात्रियों के साथ तीसरी उड़ान तड़के करीब चार बजे यहां आईजीआई हवाई अड्डे पर पहुंची।

एक में 197 और दूसरी में 274 यात्री थे सवार

केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर ने आगमन पर तिरंगे के साथ भारतीय नागरिकों का स्वागत किया। इजरायल से 274 भारतीय नागरिकों को लेकर चौथी उड़ान सुबह करीब सात बजे दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुंची। इससे पहले ऑपरेशन अजय के तहत 212 लोगों के साथ गुरुवार को एक उड़ान दिल्ली पहुंची थी जबकि दूसरी शनिवार को 235 भारतीय नागरिकों को इजरायल से लेकर आई थी। इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष के बीच विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा था कि सरकार का मुख्य ध्यान वहां फंसे 18 हजार भारतीयों को वापस लाना है। उन्होंने कहा, हमारा ध्यान उन भारतीयों को वापस लाने पर है जो इजराइल से बाहर आना चाहते हैं। वहां छात्रों सहित 18 हजार भारतीय हैं। सरकार ने युद्धग्रस्त इजराइल से भारतीय नागरिकों को वापस लाने के लिए 'ऑपरेशन अजय' शुरू किया है।

गाजा के अस्पतालों में बुनियादी चीजों की कमी

तेल अवीव, एजेंसी। हमास-इजरायल जंग के बीच गाजा के डॉक्टरों ने कहा है कि अस्पतालों में ईंधन और बुनियादी चीजों की कमी के कारण हजारों लोग मर सकते हैं। पिछले हफ्ते हमास के हमले के बाद से इजरायल उत्तरी गाजा में जवाबी कार्रवाई कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, आने वाले दो दिनों के भीतर गाजा के अस्पतालों में जनरेटर ईंधन खत्म होने की आशंका है, जिससे हजारों मरीजों की जान खतरे में पड़ जाएगी। हमास के हमले के बाद इजरायल की तरफ से 40 किमी लंबे क्षेत्र को पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। इस वजह से गाजा का एकमात्र पावर प्लांट ईंधन की कमी के कारण बंद हो गया।

इजरायल ने की है घेराबंदी

इजरायली घेराबंदी के कारण गाजा में पानी और चिकित्सा संबंधी चीजों की आपूर्ति नहीं हो पा रही है। पानी की कमी की वजह से वहां के लोग कुओं का गंदा पानी पीने के लिए मजबूर हैं। इससे पहले इजरायल की सेना ने उत्तरी गाजा के 10 लाख से ज्यादा लोगों को दक्षिण की ओर जाने की चेतावनी दी थी। इजरायली सेना का कहना है कि वह हमास आतंकियों के खिलाफ एक बड़े अभियान से पहले आम नागरिकों को वहां से हटाना चाहती है। इजरायल ने कहा है कि यह घेराबंदी तभी हटाई जाएगी जब हमास की तरफ से बंदी बनाए गए लोग वापस आ जाएंगे।

कांग्रेस की पहली सूची : ज्यादातर विधायकों पर जताया विश्वास, नए चेहरों को भी मौका

कमलनाथ छिंदवाड़ा, डॉ. गोविंद सिंह लहार से लड़ेंगे चुनाव

भोपाल, देशबन्धु। विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने 144 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी है। पार्टी ने ज्यादातर मौजूदा विधायक और पुराने चेहरों पर विश्वास जताया है। वहीं कुछ नए चेहरों को भी मौका दिया है। पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ छिंदवाड़ा से चुनाव लड़ेंगे। वहीं विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष डॉ. गोविंद सिंह को एक बार फिर लहार विधानसभा क्षेत्र से चुनाव मैदान में उतारा गया है। उम्मीदवारों की पहली सूची में पूर्व मंत्री अजय सिंह (चुरहट), रामनिवास रावत (विजयपुर), लाखन सिंह यादव (भितरवार), हर्ष यादव (देवरी), मुकेश नायक (पवई), कमलेश्वर पटेल (सिहावल), लखन घनघोरिया (जबलपुर-पूर्व), तरुण भनोट (जबलपुर-पश्चिम), ओंकार सिंह मरकाम (डिंडोरी), सुखदेव पांसे (मुलताई), सज्जन सिंह वर्मा (सोनकच्छ), विजय लक्ष्मी साधौ (महेश्वर), सचिन यादव (कसरावद), बाला बच्चन (राजपुर), जीतू पटवारी (राऊ), प्रियव्रत सिंह (खिलचीपुर) और नरेंद्र नाहटा (मनासा) शामिल हैं।

प्रदेश में सत्य और न्याय की सरकार चुने जनता : कमलनाथ

भोपाल, देशबन्धु। पूर्व मुख्यमंत्री एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने विधानसभा चुनाव के लिए आज घोषित पार्टी प्रत्याशियों को शुभकामनाएं देते हुए लोगों से आव्हान किया कि अब जनता राज्य में सत्य और न्याय की सरकार स्थापित करें। कमलनाथ ने एक्स पर पोस्ट किया, विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस पार्टी ने प्रत्याशियों की पहली सूची जारी की है। सभी प्रत्याशियों को बधाई। उन्होंने कहा, कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और मध्य प्रदेश की सम्मानित जनता का आह्वान करता हूं कि कांग्रेस के प्रत्याशियों को सफलता दिलाएं और मध्य प्रदेश में सत्य और न्याय की सरकार स्थापित करें।

39 प्रत्याशी पिछड़ा वर्ग से, 65 की आयु 50 वर्ष से कम

घोषित 144 प्रत्याशियों में से 39 प्रत्याशी पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति के 22 और आदिवासी वर्ग से 30 प्रत्याशी हैं, जबकि 6 अल्पसंख्यकों को भी टिकट दिया गया है। 144 में से 65 प्रत्याशियों की आयु 50 वर्ष से कम है।

शिवराज के खिलाफ मस्ताल को उतारा

कांग्रेस ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के खिलाफ बुधनी से अभिनेता विक्रम मस्ताल को चुनाव मैदान में उतारा है। मस्ताल एक टीवी सीरियल में हनुमान का किरदार निभा चुके हैं।

प्रजापति सहित 3 विधायकों को टिकट नहीं

भोपाल, देशबन्धु। पार्टी ने पूर्व विधानसभा अध्यक्ष नर्मदा प्रसाद प्रजापति सहित 3 विधायकों को टिकट नहीं दिया है। बताया जाता है कि श्री प्रजापति के बारे में सर्वे रिपोर्ट कमजोर पाई गई थी। गोटेगांव से प्रजापति की जगह शेखर चौधरी को उम्मीदवार बनाया है। वहीं झाबुआ से कांतिलाल भूरिया की जगह उनके बेटे विक्रांत भूरिया को टिकट दिया गया है। कांतिलाल भूरिया ने खुद की जगह बेटे को टिकट देने की मांग की थी। इसी तरह कटंगी से विधायक टाम लाल का टिकट काटकर पार्टी ने पूर्व सांसद बोधराम भगत को उम्मीदवार बनाया है। वे हाल ही में भाजपा से इस्तीफा देकर कांग्रेस में शामिल हुए थे।

20 नए चेहरों पर दांव

कांग्रेस ने 20 सीटों पर नए चेहरों पर दांव लगाया है। मेहगांव से विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष डॉ. गोविंद सिंह के भांजे राहुल भदौरिया, पिछोर से शैलेंद्र सिंह, बमोरी से ऋषि अग्रवाल, बिजावर से चरण सिंह यादव, हटा से प्रदीप खटीक, अनूपपुर से राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रहे रमेश सिंह, मलहरा साध्वी रामसिया भारती, सिहोरा से एकता ठाकुर, सिवनी से आनंद पंजवानी, घोड़ाडोंगरी से राहुल उइके, शमशाबाद से सिंधु विक्रम सिंह, अशोक नगर हरिबाबू राय, नरेला से मनोज शुक्ला, बुदनी से विक्रम मस्ताल, सीहोर से शशांक सक्सेना, आष्टा से कमल चौहान, बड़वाह नरेंद्र पटेल, इंदौर 2 से चिंतामणि चौकसे, इंदौर चार से राजा मंगवानी और मंदसौर से विपिन जैन को प्रत्याशी बनाया है।

19 महिलाओं को दिया टिकट

कांग्रेस ने पहली सूची में 19 मलिाओं को टिकट दिया है। इनमें- किरण अहिरवार को जतारा से, साध्वी राम सिया भारती को मलहरा से, कल्पना वर्मा को रैगांव से, रश्मि सिंह पटेल को नागौद से, बबीता साकेत को मनगांव से, रेनू शाह को सिंगरौली से, उमा धुर्वे को जैतपुर से, एकता ठाकुर को सिहोरा से, हिना कांवरी को लांजी से, जय श्री हरि किरण को बैरसिया से, रूपाली बारे को पंधाना से, झूमा सोलंकी को भीकनगांव से, सेना पटेल को जोबट से, रीना बोरासी को सांवेर से, माया राजेश त्रिवेदी को उज्जैन उत्तर से उम्मीदवार बनाया है।

(प्रत्याशियों की पूरी सूची पृष्ठ 5 पर)

भोपाल जिले की 3 सीटों पर प्रत्याशी घोषित

मसूद को फिर मिला मौका, मंत्री सारंग के मुकाबले मनोज शुक्ला को टिकट

भोपाल, देशबन्धु। कांग्रेस द्वारा आज घोषित पहली सूची में भोपाल की 3 सीटों पर प्रत्याशी घोषित किए गए हैं। इनमें भोपाल मध्य से मौजूदा विधायक आरिफ मसूद पर फिर भरोसा जताया गया है, वहीं नरेला से मंत्री विश्वास सारंग के खिलाफ युवा नेता मनोज शुक्ला को मैदान में उतारा गया है। जबकि बैरसिया विधानसभा क्षेत्र से जयश्री हरिकरण को फिर से टिकट दिया है। भाजपा पहले ही मध्य विधानसभा क्षेत्र से ध्रुव नारायण सिंह, नरेला से मंत्री विश्वास कैलाश सारंग और बैरसिया से विष्णु खत्री को चुनाव मैदान में उतार चुकी है। इधर, कांग्रेस ने गोविंदपुरा, हुजूर, उत्तर, दक्षिण-पश्चिम से प्रत्याशी घोषित नहीं किए हैं।

पीएमएलए मामले में ईडी की कार्रवाई

पूर्व राकांपा कोषाध्यक्ष से जुड़ी 315 करोड़ की संपत्ति कुर्क

नई दिल्ली, एजेंसी। एनसीपी के पूर्व कोषाध्यक्ष और पूर्व राज्यसभा सदस्य ईश्वरलाल शंकरलाल जैन और उनके बेटे मनीष ईश्वरलाल जैन लालवानी पर बड़ी कार्रवाई करते हुए ईडी ने रविवार को कहा कि उसने राजमल लखीचंद ज्वैलर्स प्राइवेट लिमिटेड, आर एल गोल्ड प्राइवेट लिमिटेड और मनराज ज्वैलर्स प्राइवेट लिमिटेड की 315.6 करोड़ रुपए की 70 अचल संपत्तियां कुर्क की हैं।

वित्तीय जांच एजेंसी ने एक बयान में कहा कि शनिवार को धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के तहत राजमल लखीचंद ज्वैलर्स प्राइवेट लिमिटेड, आर एल गोल्ड प्राइवेट लिमिटेड और मनराज ज्वैलर्स प्राइवेट लिमिटेड और अन्य के बैंक धोखाधड़ी मामले में ईडी ने महाराष्ट्र के जलगांव, मुंबई, ठाणे और सिल्लोड और गुजरात के कच्छ सहित अन्य क्षेत्रों में स्थित 70 अचल संपत्तियों और पवन चक्कियों, चांदी और हीरे के आभूषण या बुलियन और भारतीय मुद्रा जैसी चल संपत्तियों को जब्त कर लिया है।

सभी संपत्तियों का मूल्य 315.60 करोड़ रुपये है। ईडी ने कहा कि कुर्क की गई चल और अचल संपत्तियों में प्रमोटर ईश्वरलाल शंकरलाल जैन लालवानी, मनीष ईश्वरलाल जैन लालवानी और अन्य द्वारा अर्जित बेनामी संपत्तियां शामिल हैं।

बीआरएस ने महिलाओं को 3 हजार और 400 रुपये में गैस सिलेंडर का वादा किया

हैदराबाद, एजेंसी। तेलंगाना में अगले महीने विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। ऐसे में राजनीतिक दल जनता को लुभाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। इसी क्रम में भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में जनता से कई वादे किए हैं।

बीआरएस ने सत्ता में आने पर गरीब महिलाओं को 3,000 रुपये की वित्तीय सहायता, 400 रुपये में रसोई गैस सिलेंडर, प्रत्येक बीपीएल परिवार के लिए 5 लाख रुपये का बीमा, सामाजिक सुरक्षा पेंशन में वृद्धि और किसानों के लिए निवेश सहायता में वृद्धि का वादा किया है। लगातार तीसरी बार सत्ता में आने का लक्ष्य रखते हुए, बीआरएस ने पिछले महीने छह गारंटियों के तहत कांग्रेस द्वारा की गई घोषणा से कहीं अधिक वादे किए हैं। कांग्रेस ने प्रत्येक महिला को 2,500 रुपये की वित्तीय सहायता और 500 रुपये में रसोई गैस सिलेंडर देने का वादा किया था। इसने किसानों के लिए 15,000 रुपये प्रति एकड़ की वित्तीय सहायता और विभिन्न लाभार्थियों के लिए 4,000 रुपये की मासिक सामाजिक सुरक्षा पेंशन का भी वादा किया था।

भारतीय सेना के शीर्ष कमांडर्स का सम्मेलन आज से

सीमा की चुनौतियों व अपनी क्षमता की समीक्षा करेगी सेना

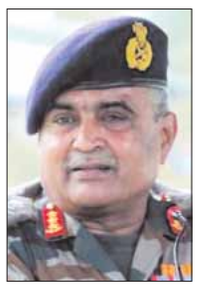

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय सेना चीन और पाकिस्तान से लगे अपने बॉर्डर की सुरक्षा चुनौतियों और फोर्स की क्षमता दक्षता समेत कई महत्वपूर्ण मुद्दों की समीक्षा करने जा रही है। यह समीक्षा सोमवार से शुरू की जाएगी। सोमवार से भारतीय सेना के शीर्ष कमांडर्स का पांच दिवसीय सम्मेलन शुरू होने जा रहा है। आर्मी कमांडर्स की यह कॉन्फ्रेंस सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे की अध्यक्षता में हो रही है। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह 18 अक्तूबर को सम्मेलन को संबोधित करेंगे। सेना की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, सेना के कमांडरों के सम्मेलन का आयोजन 20 अक्टूबर तक नई दिल्ली में निर्धारित है। यह शीर्ष-स्तरीय द्विवार्षिक कार्यक्रम वैचारिक आधार पर विचार-विमर्श के लिए भारतीय सेना को महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णयों की सुविधा प्रदान करने का एक संस्थागत मंच है। इस वर्ष लाए गए नए प्रारूप को जारी रखते हुए, आगामी निर्धारित, सेना कमांडरों का सम्मेलन भी हाइब्रिड प्रारूप में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें प्रथम दिवस सेना कमांडर और अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी वर्चुअल रूप से मिलेंगे, तत्पश्चात शेष विचार-विमर्श कार्य भौतिक प्रारूप में आयोजित किए जाएंगे।

सुरक्षा परिदृश्यों पर शीर्ष नेतृत्व करेगा विचार-विमर्श

इस अवसर पर रक्षा सेना प्रमुख जनरल अनिल चौहान, सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे और वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी.आर. चौधरी आयोजित सभा को संबोधित करेंगे। इस अवसर पर भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. अजय कुमार सूद भी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने पर एक संभाषण देंगे। भारतीय सेना की परिचालन तैयारियों की समीक्षा करने के अलावा वर्तमान व उभरते सुरक्षा परिदृश्यों पर शीर्ष नेतृत्व विचार-विमर्श करेगा। वे वर्तमान सुधार प्रक्रिया, प्रशिक्षण मामलों, मानव संसाधन प्रबंधन पहलुओं तथा सेवारत कर्मियों और सेवानिवृत्त सैनिकों को प्रभावित करने वाले विषयों की समीक्षा सहित महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा करेंगे। सेना के मुताबिक आर्मी कमांडरों का सम्मेलन, अपने व्यापक क्षेत्र के साथ, यह सुनिश्चित करता है कि भारतीय सेना प्रगतिशील, अग्रगामी, अनुकूलित और भविष्य के लिए तैयार रहे।

सार-समाचार

सी.विजिल एप से करें आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत

सागर, देशबन्धु। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी दीपक आर्य ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा नागरिकों के लिए सी.विजिल एप बनाया गया है। कोई भी नागरिक सी.विजिल एप के माध्यम से आदर्श आचरण संहिता के उल्लंघन की शिकायत कर सकता है। नागरिक स्मार्ट मोबाइल के गूगल प्ले स्टोर पर जाकर सी.विजिल एप को डाउनलोड कर सकते हैं।

पंचवालयति मंदिर के पंच कल्याणक हेतु पात्र चयन 19 अक्टूबर को

सागर, देशबन्धु। पंचवालयति दिगंबर जैन मंदिर के पंचकल्याणक महोत्सव हेतु पात्रों का चयन 19 अक्टूबर को होने जा रहा है। मुनिश्री अजित सागर एवं मुनिश्री निर्दोष सागर के ससंघ सानिध्य में आगामी 27 नवम्बर से 2 दिसंबर तक आयोजित पंचकल्याणक जिनविंब प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रतिष्ठाचार्य संजय भैया मुरैना होगें। महोत्सव की तैयारियों को लेकर समितियों का गठन कर दिया गया है, साथ ही महोत्सव की रूपरेखा हेतु मनोनीत पदाधिकारी एवं संयोजकों की बैठक भी रखी गई। आगामी 19 अक्टूबर को जिनालय में सुबह अभिषेक पूजन के उपरांत सुबह 8 बजे से मुनि संघ के सानिध्य में पात्रों का चयन किया जावेगा। पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजन मंदिर के समीप ही किया जा रहा है।

एसआई की कार ने बाइक को मारी टक्कर

खुरई, देशबन्धु। बायपास रोड स्थित घोरट चौराहे पर तेज रफ्तार पुलिस एसआई की कार ने बाइक सवार दादी-पोते को टक्कर मार दी। इलाज के दौरान दादी की मौत हो गई। जबकि पोते का इलाज सिविल अस्पताल में चल रहा है। जानकारी के मुताबिक अजय पिता धर्मेन्द्र अहिरवार निवासी घोरट जो बाइक क्रमांक एमपी 15 एनएम 1627 पर अपनी दादी गुड्डीबाई अहिरवार को बैठाकर खुरई से अपने गांव घोरट लौट रहा था कि जैसे ही वह अपनी बाइक से खुरई वायपास के घोरट चौराहा पर पहुंचा तो बीना तरफ से आ रही तेज रफ्तार एसआई की कार एमपी 07 सीई 5831 ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। इसमें बाइक सवाल दादी और पोता घायल हो गए।

घटना की जानकारी मिलते ही खुरई शहरी पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को खुरई सिविल अस्पताल में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान गुड्डीबाई अहिरवार की मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। घायल अजय अहिरवार ने बताया कि अपनी दादी को लेकर बाजार से कुछ सामान लेने और कियोस्क सेंटर से रुपए निकालने के लिए खुरई गया हुआ था। इसके बाद वह गांव लौट रहा था तभी यह घटना हो गई।

जिला बदर का उल्लंघन करने वाले आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बण्डा, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक द्वारा जिला बदर अनावेदको पर सतत निगरानी व उनके प्रतिबंधित क्षेत्रो में प्रवेश करने पर वैधानिक कार्यवाही करने के लिए निर्देशित दिये है। पुलिस अधीक्षक के आदेशानुसार अति. पुलिस अधीक्षक बीना, एसडीओपी बण्डा के निर्देशन में न्यायालय कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी के जिला बदर प्रकरण क्रमांक 20 जिला बदर 2023, आदेश क्रमांक /7194 रीडर/2023 दिनांक 31/08/2023 द्वारा अनावेदक रम्मू उर्फ रुपसिंह पिता सीताराम यादव उम्र 32 साल निवासी ग्राम बगरौदा थाना बरायठा जिला सागर की आपराधिक गतिविधियो पर अंकुश लगाने के लिये जिला दण्डाधिकारी के द्वारा राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5(क)(ख) 6 क के तहत जिला बदर की कार्यवाही की गई थी जो उक्त आदेश की तामीली पर अनावेदक रम्मू उर्फ रुपसिंह यादव को 11 अक्टूबर 23 को तामील कर सागर जिले की राजस्व सीमा तथा समीपवर्ती दमोह, छतरपुर, रायसेन, नरसिंहपुर, विदिशा, अशोकनगर एवं टीकमगढ़ की राजस्व सीमा से 12 माह की अवधि तक बाहर रहने की हिदायत दी गयी थी तथा हिदायत दी गई थी कि उक्त आदेश के उल्लंघन पर धारा 188 ताहि व मप्र राज्य सुरक्षा अधिनियम की धारा 14 के तहत कार्यवाही की जावेगी। जो रविवार 15 अक्टूबर को काम्बिग गश्त के दौरान मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि अनावेदक रम्मू उर्फ रुप सिंह यादव की ग्राम जासौडा में है, तस्दीक हेतु हमराह स्टाफ की मदद से अनावेदक रम्मू उर्फ रुप सिंह को उक्त जिला बदर आदेश का उल्लंघन कर प्रतिबंधित सीमा में प्रवेश करने पर पकडा गया एवं धारा 188 ताहि व धारा 14 मप्र राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 के तहत कार्यवाही कर गिरफ्तार किया गया। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी उनि मकसूद अली व हमराह स्टाफ अशोक तिवारी, प्यारे लाल, करन यादव, रामकुमार, अरविंद का सहयोग रहा।

नौ देवी मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर विधि विधान के साथ हुई प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा

बीना, देशबन्धु। नौगांव रोड स्थित गणेश वार्ड में नौ देवी दुर्गा मंदिर का निर्माण कार्य पूरा होने पर विधि विधान के साथ प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। इसके साथ ही कन्या भोज और सुंदर कांड पाठ का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम सभी प्रतिमाओं के साथ भैंसासुर बब्बा के मंदिर से धूमधाम से शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा नौगांव रोड से होती हुई माता मंदिर पहुंची। मंदिर पर पहुंचने पर सबसे पहले प्राचीन प्रतिमाओं का दूध, दही, गंगा जल, शहद आदि से अभिषेक किया गया। उसके बाद मां सिंह वाहन अष्टभुजी देवी की प्रतिमा का अभिषेक किया गया। इसके बाद सभी प्रतिमाओं की हवन और पूजन के साथ प्राण प्रतिष्ठा की गई। हवन, पूजन के बाद कन्या भोज और सुंदर कांड का आयोजन किया गया।

नाम निर्देशन के संबंध में कल प्रशिक्षण

सागर, देशबन्धु। विधानसभा निर्वाचन 2023 के अंतर्गत नाम निर्देशन एवं अन्य तैयारियों के संबंध में कल 17 अक्टूबर को प्रशिक्षण रखा गया है। इस प्रशिक्षण में समस्त रिटर्निंग अधिकारियों को दोपहर 3 बजे कलेक्टर सभाकक्ष में प्रशिक्षण दिया जाएगा।

रजत पालकी पर सवार होकर निकली मां जागेश्वरी

बीना, देशबन्धु। शारदीय नवरात्रि के पहले दिन बीना में मां जागेश्वरी पालकी पर सवार होकर नगर भ्रमण पर निकली। इसी के साथ देवी मंदिरों में भी भक्तों का तांता लगा रहा। नवरात्रि के प्रथम दिन शहर में मां जागेश्वरी को रजत पालकी में विराजमान कर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। बीना के कच्चा रोड़ पर स्थित मां जागेश्वरी मंदिर में नवरात्र पर मां का अभिषेक और पूजन किया। इसके बाद एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें बड़ी संख्या में भक्त शामिल हुए। रजत पालकी यात्रा में कई अखाड़े, बरेदी नृत्य, राजस्थानी नृत्य, सैरा पार्टी, डंडियों के अलावा कई प्रकार की झांकियां शोभायात्रा में शामिल हुए। शोभा यात्रा मां जागेश्वरी मंदिर से शुरू हुई जो कच्चा रोड, थाने के पीछे से होकर, सर्वोदय चौराहा, कॉलेज तिराहा, गांधी तिराहा, बड़ी बजरिया, महावीर चौक से होते हुए मंदिर पर शोभा यात्रा का समापन हुआ।

शोभायात्रा में नगर के अलावा बाहर से आए हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए। डॉ. प्रकाश अग्रवाल ने बताया कि पिछले 30 सालों से नगर में मां जागेश्वरी की पालकी शोभायात्रा निकाली जा रही है। पहले छोटे स्तर पर निकाली जाती थी लेकिन अब बड़े स्तर पर निकाली जाती है। जिसमें नगर सहित ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग पालकी शोभायात्रा को देखने के लिए आते हैं।

शांति कमेटी की बैठक, रात 10 बजे के बाद डीजे चलाने वालो पर होगी कार्यवाही

बण्डा, देशबन्धु। बण्डा थाना परिसर में आगामी त्यौहार नवरात्रि एवं दशहरा को लेकर शांति कमेटी की बैठक आहूत की गई बैठक की अध्यक्षता तहसीलदार खेमचंद राय ने की, बैठक में सभी दुर्गा उत्सव समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों को प्रशासन की ओर से बताया गया कि विधानसभा चुनाव की आदर्श आचार संहिता लागू है और हम सभी को प्रेम और स्नेह से आगामी त्यौहारों को संपन्न करना है जिसमें आप सब का सहयोग प्रार्थनीय है और हमें ख्याल रखना है कि आदर्श आचार संहिता का किसी भी प्रकार का उल्लंघन न होने पाए रात्रि 10 के बाद ध्वनि प्रदूषण पर प्रतिबंध रहेगा। डीजे पूर्णत: प्रतिबंधित रहेंगे रात्रि 10 के बाद जो भी डीजे बजता हुआ पाया जाएगा उसके विरुद्ध प्रशासन कानूनी कार्यवाही करेगा सभी समिति के सदस्यों एवं अध्यक्षों ने डीजे को रात्रि 10 बजे तक बंद करने का आश्वासन दिया। शांति समिति की बैठक में और भी कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए प्रशासन की ओर से कहा गया कि चल समारोह में किसी भी प्रकार के घातक हथियार लेकर नहीं चले एवं कोशिश करें कि किसी भी प्रकार से कोई नशा करने वाला हमारे चल समारोह में शामिल न हो सके नगर परिषद को बड़ी प्रतिमाएं होने के कारण कुंड की गहराई बढ़ाने हेतु एवं साफ सफाई व्यवस्था करने हेतु निर्देशित किया गया। बैठक में थाना प्रभारी नासिर फारुकी, संतोष सराफ, लोकेंद्र सिंह, बाबू सिंह मुडिया, अनिरुद्ध सिंह, श्रीकांत सराफ, राजेश आठिया, विवेक तिवारी सहित स्थानीय गणमान्य नागरिक पत्रकार एवं दुर्गा समिति के अध्यक्ष उपस्थिति रहें।

नगर पुलिस अधीक्षक ने पैदल भ्रमण कर नवदुर्गा उत्सव की तैयारियों का लिया जायजा

सागर, देशबन्धु। नगर पुलिस अधीक्षक द्वारा थाना प्रभारी कोतवाली एवं कोतवाली के बल के साथ थाना कोतवाली क्षेत्र पुरव्यऊ, बड़ा बाजार, काजी मुहाल, विजय टाकीज तिराहा, माता मढ़िया, बाहुबली कालोनी, राधा तिराहा, गुजराती बाजार, कटरा बाजार, तीनबत्ती, चकराघाट, एलिवेटेड कोरिडोर का पैदल भ्रमण कर नवदुर्गा उत्सव की तैयारियों का जायजा लिया। शहर के थाना प्रभारियों को आवश्यक निर्देश दिये की त्योहार के समय सभी अपने अपने क्षेत्र में लगातार पैदल भ्रमण करे। जहां-जहां माता विराजित की गई है सभी जगह पुलिस व्यवस्था लगाये साथ ही दुर्गा पंडाल में जो भी अधिकृत व्यक्ति हैं उनसे मिलकर आवश्यक व्यवस्थायें लगवाने हेतु बताएं यथासंभव सीसीटीवी कैमरे भी सभी से लगवाने हेतु बताया जावे देर रात तक जब तक पब्लिक का शहर में भ्रमण हो रहा है।

नौ दिवसीय अनुष्ठान प्रारंभ हुआ

पचमढ़ी, देशबन्धु। शारदीय नवरात्रि के पावन पर्व के शुभ अवसर पर माँ गायत्री प्रज्ञा पीठ पचमढ़ी में दिनांक 15-10-2023 से 23-10-23 तक नौ दिवसीय अनुष्ठान प्रारंभ हो गया है।जिसके अंतर्गत प्रात: 9.30 बजे से माँ गायत्री हवन शाम 7.00 बजे से महाआरती एवं महाप्रसाद वितरण होगा आज नवरात्रि के प्रथम दिवस पर प्रात: गायत्री हवन में मुख्य यजमान 1-प्रज्ञा धर्मेंद्र श्रीवास्तव, 2-अक्ष सोनू उपाध्याय3-महक सत्येंद्र गुप्ता एवं शाम महा आरती में मुख्य यजमान किरण साहू रही समस्त कार्यक्रम गायत्री प्रज्ञा पीठ की संरक्षक श्रीमती राजरानी गुप्ता जी के संरक्षण एवं अध्यक्ष संदीप गुप्ता के निर्देशन में होंगे प्रतिदिन हवन ओमप्रकाश साहू जी द्वारा कराया जाएगा कार्यक्रम की सफलता के लिए प्रमुख रूप से लक्ष्मी जाटव माया बैरागी अन्सूईया यादव जय श्री बोरसे हेमलता चिलहाटे बबीता ननकानी मालती यादव किरण साहू भगवती गोहिया उर्मिला पाल एवं अंकित शुक्ला का योगदान रहा।

आबकारी उड़नदस्ता द्वारा इटारसी क्षेत्र में अवैध शराब के विरुद्ध कार्यवाही

इटारसी, देशबन्धु। विधानसभा निर्वाचन पूर्व अवैध शराब के निर्माण, परिवहन, संग्रहण और विक्रय को रोकने के उद्देश्य से कलेक्टर नीरज कुमार सिंह के निर्देश पर एवं जिला आबकारी अधिकारी अरविंद सागर के मार्गदर्शन विशेष आबकारी उड़नदस्ते गठित किये गए। अवैध मदिरा के बिक्री, निर्माण, परिवहन एवं संधारण के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत आबकारी उड़नदस्ता टीम इटारसी ने सूरज गंज, बालाजी मंदिर एवम ग्राम जमानी क्षेत्र में आबकारी विभाग द्वारा अवैध शराब के विरुद्ध कार्यवाही में 1,500 किलो ग्राम लाहन और 42 लीटर हाथ भट्टी शराब जब्त कर आरोपियों के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के अंतर्गत 7 प्रकरण कायम किए। जप्त सामग्री की अनुमति कीमत 158400 रुपए है। कार्रवाई में सहायक जिला आबकारी अधिकारी एनपी सिंह, आबकारी उपनिरीक्षक राजेश साहू, केके पडरिया, रघुवीर सिंह राठौर, आबकारी मुख्य आरक्षक रघुवीर निमोदा, आरक्षक मदन रघुवंशी, राजेश गौर, दुर्गेश पठारिया, भावना यादव, प्रगति, नगर सैनिक रामावतार यादव, मोहन यादव तथा सभी स्टॉफ सदस्यों का योगदान रहा।

धूमधाम से निकली अग्रसेन की शोभायात्रा, समाज ने किया

इटारसी, देशबन्धु। अग्र कुल प्रवर्तक महाराज अग्रसेन जयंती अग्रवाल समाज द्वारा धूमधाम से मनाई गई। अग्रवाल भवन से निकली शोभायात्रा 11वी लाइन सराफा बाजार जयस्तंभ चौक से होते हुए वापस अग्रवाल भवन में समाप्त हुई शोभायात्रा का सामाजिक बंधुओ ने स्वागत किया साथ ही प्रसाद भी बांटा गया।अग्रवाल समाज के पुरुष एवम महिलाए पारंपरिक मारवाड़ी वस्त्रों निकले। यात्रा के आगे 18 घोड़ों के उपर अग्र कुल के 18 गोत्रों के रूप में बच्चे आगे आगे चल रहे थे। यात्रा का भव्य स्वागत जयस्तंभ चौक पर सामाजिक बंधुओ द्वारा किया गया, इस बार शोभायात्रा आदर्श आचार संहिता लागू होने के कारण सादगी से निकाली गई।

14 वर्षीय बालक वर्ग विकासखंड स्तरीय क्रिकेट चयन प्रतियोगिता हुई

इटारसी, देशबन्धु। शालेय बालक 14 वर्षीय विकास खंड क्रिकेट चयन प्रतियोगिता का आयोजन जीनियस प्लानेट स्कूल में हुआ। प्रतियोगिता में नर्मदापुरम विकासखंड के अंतर्गत आने वाले स्कूलों के लगभग 70 से अधिक विद्यार्धी शामिल हुए।

इस अवसर पर संयोजक जीनियस प्लानेट स्कूल के डायरेक्टर जाफर सिद्दीकी ने उपस्थित होकर सभी विद्यार्थियों को शुभकामनायें दी। विकासखंड स्तरीय बालक प्रतियोगिता के चयनकर्ता अर्पण दुबे, संजय यदुवंशी, अरविन्द ठाकुर ने सभी खिलाड़ियों का बारीकी से खेल परीक्षण किया। चयनकर्ताओं ने बताया कि नर्मदापुरम विकासखंड की टीम बनाई जाएगी जिसके बाद 17 अक्टूबर को पुन: इटारसी के जीनियस प्लानेट स्कूल में ही जिला स्तरीय प्रतियोगिता में खेलेगी। खिलाड़ियों के चयन में गोल्डी यादव, खेल शिक्षक सोनू रैकवार ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री गणेश, श्रीराम, माता सीता का पूजन कर श्रीराम लीला का मंचन शुरु

इटारसी। श्री रामलीला एवं दशहरा महोत्सव के अंतर्गत आज से गांधी मैदान में श्रीराम लीला का मंचन प्रारंभ हुआ। शहर में गांधी स्टेडियम और वीर सावरकर मैदान पर श्रीराम लीला का मंचन होगा। आज पहले दिन मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती रितु मेहरा एवं कार्यालय अधीक्षक संजय सोहनी, अजय यादव, कमलकांत, जगदीश पटेल सहित नगर पालिका के अन्य कर्मचारियों ने श्री गणेश, श्रीराम और माता सीता का पूजन कर रामलीला का मंचन प्रारंभ कराया।

रोहिणी एवं अनमोल ने प्रथम, निधि निकिता रही द्वितीय

मानस चैंपियंस लीग 2023 पुरस्कार वितरण समारोह

इटारसी, देशबन्धु। जिला स्तरीय मानस चैम्पियंस लीग 2023 का पुरस्कार वितरण रविवार को श्री प्रेमशंकर दुबे स्मृति पत्रकार भवन में संपन्न हुआ। समारोह में इटारसी के 78 छात्राओं को पुरस्कृत किया जिन्होंने प्रतियोगिता में 90 या उससे अभी अंक अर्जित किए थे। इस वर्ष बच्चो की सुविधाओ को ध्यान में रखते हुए मानस चैंपियन लीग का पुरस्कार वितरण दो पारियों में नर्मदापुरम के साथ इटारसी में भी कराया। इटारसी व आसपास के ग्रामीण स्कूलों के बच्चों का पुरस्कार वितरण समारोह इटारसी में ही पत्रकार भवन में किया। इस वर्ष इटारसी से प्रथम पुरस्कार 10000 रुपए, पुस्तक के अंकों व साक्षात्कार के योग के वरीयता अनुसार इटारसी के गुरु नानक स्कूल इटारसी कक्षा 10 वी के छात्र अनमोल जुनेजा तथा रोहिणी सिंह ने प्राप्त किया। द्वितीय पुरस्कार 5000 रुपए कुसुम मालपानी स्कूल कक्षा 12 वी की निधि यादव व निकिता मेहरा ने प्राप्त किए।

तृतीय पुरस्कार 3000 रुपए के विजेता खुशी सोलंकी शासकीय हाई सैकेंड्री स्कूल ग्राम कांदई, निकिता पटेल एमजीएम कॉलेज, मेघा मीना गवर्नमेंट हाई स्कूल रामपुर, आरशी कुरैशी कुसुम मालपानी स्कूल, हर्ष कुमार गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक कॉलेज व हैजल कदम नालंदा स्कूल ने जीते तथा इन्हें एक 1000 रुपए की नगद राशि, प्रमाण पत्र, ट्राफी एवं रामचरित मानस प्रदान की। शेष छात्र-छात्राओं को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। स्वागत भाषण में वरिष्ठ पत्रकार प्रमोद पगारे ने कहा कि प्रतियोगिता का आयोजन नई पीढ़ी के बच्चे, छात्र-छात्राओं को सनातन धर्म एवं संस्कृति से जोड़ने के उद्देश्य से किया जा रहा है। मुख्य अतिथि प्रोफेसर ज्ञानेंद्र पांडे, मधुसूदन शास्त्री, सेवानिवृत शिक्षक आरके दुबे, नर्मदापुरम पत्रकार संघ के संभागीय अध्यक्ष रोहित नागे, कार्यक्रम की व्यवस्था संभाल रहे भूपेंद्र चौहान रहे। मुख्य अतिथि प्रो. ज्ञानेंद्र पांडे ने विश्व के प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों, यूनिवर्सिटी, कॉलेज एवं स्कूलों में रामचरितमानस किस प्रकार उपयोगी एवं पठन-पाठन में शामिल किया है विषय पर कई बातें कहीं। उन्होंने सभी छात्र-छात्राओं पालकों एवं शिक्षकों से आग्रह किया कि वह अपने बच्चों को दिन में एक बार समय निकालकर रामचरितमानस पढ़ने के लिए प्रेरित करें। वरिष्ठ पत्रकार रोहित नागे ने साक्षात्कार दिवस के अनुभव साझा करते हुए सफल आयोजन के लिए आयोजन समिति को बधाई शुभकामनाएं दी। विप्र विद्वान पं. मधुसूदन शास्त्री ने रामचरितमानस की उपयोगिता उसमें निहित गुण, अच्छाइयां एवं जीवन में रामचरित्र अपनाने की विशेषताओं से छात्र-छात्राओं एवं पालकों को अवगत कराया। संचालन पत्रकार भूपेंद्र विश्वकर्मा ने किया। कार्यक्रम में एमजीएम कॉलेज की प्राचार्य डॉ राकेश मेहता, गर्ल्स कॉलेज के प्राचार्य आरएस मेहरा, सीएम राइज स्कूल के प्राचार्य एनपी चौधरी, पॉलिटेक्निक महाविद्यालय के प्राचार्य आरएस लौवंशी, उत्कृष्ट स्कूल केसला प्राचार्य सुनील सक्सेना, शिक्षक संतोष भारद्वाज, पत्रकार रोहित नागे, अरविंद शर्मा, राहुल शरण, इंद्रपाल सिंह, कृष्णा राजपूत, खेमराज परिहार, राजेश दुबे, ऋषभ दुबे, घनश्याम तिवारी सहित अन्य का भी सम्मान किया गया।

उल्लेखनीय है कि मानस चैंपियंस लीग का यह 8 वॉ वर्ष व 7 वॉ संस्करण है।

इस वर्ष जिले के सभी स्कूलों में लगभग 5000 प्रश्न पत्रों का वितरण किया था। जिले के सभी स्कूल के छात्र-छात्राओं ने बड़े ही उत्साह के साथ बढ़ चढ़ कर इस प्रतियोगिता में भाग लिया। श्री रामचरित मानस से संबधित 38 प्रश्नों को मानस चैंपियंस लीग में समाहित किया जिन्हें की 100 अंकों में विभाजित किया। मानस चैंपियंस लीग का आयोजन ऋषिकुल संस्कृत विद्यालय द्वारा किया जाता है। मानस चैंपियन लीग में इटारसी के वर्धमान स्कूल, शासकीय कन्या विद्यालय, गुरु नानक स्कूल, कुसुम मालपानी, प्रज्ञान हाई सेकेंडरी स्कूल, उत्कृष्ट हाई स्कूल केसला आदि ने सफल बनाने में विशेष भूमिका निभाई है।

सार समाचार

हाईवे के किनारे पड़ी मिली अज्ञात युवक की लाश

छतरपुर, देशबन्धु। कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत शहर के नौगांव रोड पर रिलायंस पेट्रोल पंप के समीप रविवार की सुबह एक अज्ञात युवक की लाश पड़ी मिली, जिसकी सूचना स्थानीय लोगों ने पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लिया और शिनाख्त के प्रयास शुरू किए हैं। बताया गया है कि मृतक की उम्र करीब 30 वर्ष है और उसने काले रंग का लोवर तथा गुलाबी रंग की टीशर्ट पहल नखी है। मृतक के पास ऐसा कोई दस्तावेज नहीं मिला है, जिससे उसकी पहचान हो सके। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू है।

जमीनी विवाद के चलते दो पक्षों में हुआ खूनी संघर्ष, एक दर्जन घायल

छतरपुर, देशबन्धु। जिले के चंदला थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम छठी बम्हौरी में रविवार को दो पक्षों के बीच जमीनी विवाद के चलते खूनी संघर्ष हो गया। विवाद में दोनों पक्षों के एक दर्जन से अधिक महिला-पुरुष घायल हुए हैं। पुलिस ने दोनों पक्षों की शिकायत लेकर विवेचना शुरू कर दी है, साथ ही घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया गया है कि छठी बम्हौरी में रविवार की दोपहर यह विवाद हुआ, जिसमें एक पक्ष के 5 और दूसरे पक्ष के 6 लोग घायल हैं। विवाद जमीन को लेकर हुआ था, जिसकी सूचना मिलने के बाद निरीक्षक हरी सिंह ठाकुर पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। डायल 100 से सभी घायलों को चंदला प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया जहां उनका उपचार जारी है। पहुंची ने घटना में प्रयुक्त लाठी-डंडे भी जप्त कर लिए हैं।

कांग्रेस ने सभी 6 सीटों पर किया प्रत्याशियों का ऐलान

नातीराजा, पज्जन चतुर्वेदी, नीरज, हरप्रसाद और रामसिया को दोबारा मौका

- बिजावर सीट पर नए चेहरे के रूप में चरण सिंह यादव को टिकिट

छतरपुर, देशबन्धु। विधानसभा चुनाव 2023 के लिए कांग्रेस ने नवरात्र के पहले दिन 144 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी है। इस सूची में छतरपुर जिले की सभी 6 सीटों पर प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया गया है। 6 में से 5 सीटें ऐसी हैं जहां कांग्रेस ने अपने पुराने मोहरों पर ही दांव खेला है। इनमें तीन वर्तमान विधायक नातीराज, पज्जन चतुर्वेदी और नीरज दीक्षित शामिल हैं तो वहीं दो हारे हुए प्रत्याशी हरप्रसाद अनुरागी और रामसिया भारती भी शामिल हैं। पार्टी ने बिजावर में नए प्रत्याशी के तौर पर बाहरी नेता और रेत कारोबारी के रूप में विख्यात चरण सिंह यादव को उतार दिया। इस सीट पर टिकिट की तैयारी कर रहे केशु राजा, राजेश शर्मा, मानवेन्द्र सिंह मोनू और राजेश पायक को खाली हाथ रहना पड़ा है। पार्टी के इस ऐलान के साथ ही कांग्रेस सेवादल के अध्यक्ष और टिकिट के दावेदार राजेश शर्मा ने नाराज होकर अपना इस्तीफा दे दिया है।

अब छतरपुर में मुकाबले की तस्वीर साफ

कांग्रेस प्रत्याशी की घोषणा के साथ छतरपुर विधानसभा सीट पर चुनावी मुकाबले की तस्वीर काफी हद तक साफ हो गई है। यहां कांग्रेस ने अपने वर्तमान विधायक आलोक चतुर्वेदी को दोबारा अवसर दिया है तो वहीं भाजपा पहले ही पूर्व मंत्री ललिता यादव को मैदान में उतार चुकी है। पूर्व कांग्रेसी बब्बूराजा भी बसपा के हाथी पर सवार होकर मैदान में ताल ठोक रहे हैं। ऐसे में इस सीट पर अब त्रिकोणीय संघर्ष की स्थिति बन रही है। हालांकि सीधा मुकाबला कांग्रेस और भाजपा के बीच है। रविवार को जब टिकिटों का ऐलान हुआ तब आलोक चतुर्वेदी खेलग्राम में अपना जन्मदिन मना रहे थे। ऐलान होते ही उनके समर्थकों ने छत्रसाल चौक पर आतिशबाजी की और दिन भर उन्हें जन्मदिन और टिकिट मिलने की शुभकामनाएं दी गईं।

नातीराजा फिर बने पार्टी की पसंद

चार बार के विधायक और तीन बार से राजनगर विधानसभा सीट पर अजेय बने हुए कांग्रेस नेता विक्रम सिंह नातीराजा को एक बार फिर पार्टी ने अपना प्रत्याशी बना दिया है। पूर्व विधायक मुन्नाराजा और उनके पुत्र सिद्धार्थ द्वारा दी जा रही कड़ी प्रतिस्पर्धा के बावजूद पार्टी ने नातीराजा को इस सीट पर दोबारा मैदान में उतारा है उनका सीधा मुकाबला वैसे तो भाजपा के प्रत्याशी अरविंद पटैरिया के साथ है लेकिन यहां भाजपा के बागी नेता और बसपा प्रत्याशी डॉ. घासीराम पटेल व सपा प्रत्याशी बबलू पटेल सभी का गणित बिगाड़ रहे हैं।

दौलत और निधि को नजरअंदाज कर पार्टी ने फिर दिया नीरज को मौका

जिले की महाराजपुर विधानसभा सीट पर पार्टी के साथ गद्दारी करने जैसे गंभीर आरोप झेल रहे वर्तमान कांग्रेस विधायक नीरज दीक्षित को एक बार फिर कांग्रेस ने अपना प्रत्याशी बना दिया है। इस सीट पर दिग्गज कांग्रेसी नेता निधि चतुर्वेदी और युवा कांग्रेसी नेता अजय दौलत तिवारी भी टिकिट की दौड़ में शामिल थे लेकिन पार्टी ने उन्हें तबज्जो न देकर अपने वर्तमान विधायक को ही रिपीट कर दिया है। नीरज दीक्षित का सीधा मुकाबला भाजपा प्रत्याशी कामाख्या प्रताप सिंह टीकाराजा के साथ संभव है। हालांकि अजय दौलत तिवारी भी पार्टी से बगावत कर चुनाव लड़ सकते हैं।

लगातार हार के बाद भी हरप्रसाद पर दांव

जिले की एक मात्र आरक्षित सीट चंदला विधानसभा में एक बार फिर कांग्रेस ने लगातार चुनाव हार रहे हरप्रसाद अनुरागी पर दांव लगा दिया। हरप्रसाद दो बार विधानसभा प्रत्याशी के तौर पर चुनाव हार चुके हैं जबकि एक साल पहले ही वे जिला पंचायत सदस्य का चुनाव भी हार गए थे। इसके बाद भी कांग्रेस ने उन्हें फिर से टिकिट दी है। उनका सीधा मुकाबला भाजपा के साथ होना तय है। इस सीट पर भाजपा की ओर से अब तक प्रत्याशी की घोषणा नहीं हुई है। सूत्र बताते हैं कि भाजपा वर्तमान विधायक राजेश प्रजापति को ही मौका दे सकती है। उधर कांग्रेस से टिकिट की दावेदारी कर रहे अनित्या सिंह, पुष्पेन्द्र अहिरवार और राजू प्रजापति को कांग्रेस ने तवज्जो नहीं दी है।

बड़ामलहरा में फिर से साध्वी को मौका

बड़ामलहरा विधानसभा सीट पर कांग्रेस ने एक बार फिर साध्वी रामसिया भारती को मैदान में उतारा है। रामसिया भारती 2021 में हुए विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस की प्रत्याशी रहते हुए भाजपा के प्रत्याशी प्रद्युम्न सिंह से चुनाव हार गई थीं। फिर भी उन्हें पार्टी ने दोबारा अवसर दिया है।

इस सीट पर भाजपा पहले ही प्रद्युम्न सिंह को अपना प्रत्याशी बना चुकी है। यहां कांग्रेस से टिकिट की तैयारी कर रहे रक्षपाल यादव, गगन यादव जैसे कई नेता दौड़ से बाहर हो गए हैं। भाजपा में भी करन सिंह लोधी और मनोज यादव दौड़ से बाहर हैं। यहां बागियों की भूमिका चुनाव परिणाम को तय करेगी। टिकिट मिलने के बाद रामसिया भारती ने अबारमाता मंदिर पहुंचकर माता के दर्शन किए और अपने चुनावी अभियान की शुरूआत कर दी।

बिजावर में चौकाने वाला नाम चरण सिंह यादव

बिजावर सीट पर कांग्रेस ने उप्र के चरण सिंह यादव को प्रत्याशी बनाकर सबको चौंका दिया है। चरण सिंह यादव मूलतः झांसी जिले के हैं। उनकी पहचान रेत माफिया और बड़े ठेकेदार के रूप में है। वे इसके पहले पन्ना जिले की पवई सीट से चुनाव लड़ चुके हैं। इस सीट पर कांग्रेस की ओर से केशु राजा, मानवेन्द्र सिंह मोनू, राजेश शर्मा और राजेश सिंह पायक चुनाव की तैयारी कर रहे थे लेकिन पार्टी ने इन चारों नेताओं को दरकिनार करते हुए एक बाहरी नेता को मैदान में उतार दिया। ऐसे में अब इस सीट पर नए समीकरण बन सकते हैं। हालांकि इस सीट पर अब तक भाजपा ने अपने प्रत्याशी का ऐलान नहीं किया है।

सूत्र बताते हैं कि पार्टी यहां से राजेश बबलू शुक्ला को ही टिकिट दे सकती है। उधर चरण सिंह के नाम का ऐलान होते ही कांग्रेस सेवादल के जिलाध्यक्ष और टिकिट की दौड़ में शामिल राजेश शर्मा सटई ने अपना इस्तीफा पार्टी को भेज दिया है।

खजुराहो में महाराजा अग्रसेन जयंती पर निकली भव्य शोभायात्रा

खजराहो, देशबन्धु। विश्व पर्यटन नगरी खजुराहो में श्री श्री 1008 महाराजा अग्रसेन जी की जयंती धूमधाम से मनाई गई इस मौके पर अग्रवाल समाज खजुराहो तथा राजनगर द्वारा बाईपास मार्ग स्थित कृष्णा जंगल रिसोर्ट परिसर में दिनांक 15 अक्टूबर को सुबह कार्यक्रम स्थल पर हवन पूजन होने के पश्चात दोपहर 3 बजे से महाराजा अग्रसेन की भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो अग्रसेन चौक स्थित महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा स्थल से प्रारंभ होकर बस स्टेंड, अम्बेडकर तिराहा, पुलिस थाना, सनसेट व्यू, पश्चिमी मंदिर समूह तिराहा, गोल मार्केट, राधारानी मार्केट, पुरानी बस्ती चौराहा, गांधी चौक सहित नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए जंगल रिसोर्ट में सम्पन्न हुई शोभायात्रा का नगर में जगह जगह भव्य स्वागत हुआ और महाराजा अग्रसेन की आरती उतारी गई शोभायात्रा में महाराजा अग्रसेन की बग्गी पर शाही सवारी तथा कुलदेवी माता महालक्ष्मी की झांकी आकर्षण का केंद्र रही शोभायात्रा में अग्रवाल समाज के लोग महाराजा अग्रसेन तथा देवी महालक्ष्मी के जयकारा लगाते हुए चल रहे थे तो वहीं बच्चे और महिलाएं नृत्य करते हुए चल रहे थे शोभायात्रा में डी.जे.की धुनों पर युवा थिरकते चल रहे थे शोभायात्रा का पश्चिमी मंदिर समूह तिराहे पर मतंगेश्वर दुर्गोत्सव समिति ने स्वागत किया,इस मौके पर महारानी कविता सिंह ने लक्ष्मी माता तथा महाराजा अग्रसेन जी की आरती उतारी और आशीर्वाद लिया, क्षेत्रीय विधायक नातीराजा ने माता लक्ष्मी तथा महाराजा अग्रसेन की झांकी को प्रणाम करते हुए अग्रवाल समाज के सभी लोगों को महाराजा अग्रसेन जयंती की शुभकामनाएं दी, शोभायात्रा का समापन पुनर्जंगल रिसोर्ट परिसर में हुआ, इस अवसर पर अग्रवाल समाज के अध्यक्ष-श्रीमन नारायण अग्रवाल, पत्रकार-आनंद अग्रवाल, सचिव-राजेन्द्र अग्रवाल, अमरीष अग्रवाल, जवाहर अग्रवाल, परमेन्द्र अग्रवाल, सौरभ अग्रवाल, संतोष अग्रवाल, राजेश अग्रवाल सहित समाज के सभी लोग शामिल रहे।

चुनाव प्रचार में बिना अनुमति वाहन का उपयोग नहीं कर सकेंगे

छतरपुर, देशबन्धु। छतरपुर जिले में विधानसभा निर्वाचन 2023 अंतर्गत आदर्श आचरण संहिता प्रभावशील है। जिसका कड़ाई से पालन कराने के लिए कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी संदीप जी.आर. द्वारा दण्डप्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 144 के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए जारी आदेशानुसार कोई भी व्यक्ति या समूह चुनाव प्रचार के लिए बिना अनुमति के प्रचार-प्रसार हेतु वाहन का उपयोग नहीं कर सकेंगे। न ही वाहन पर झण्डे, बैनर लगाकर कर चल सकेंगे। साथ ही बिना अनुमति के प्रचार सामग्री लेकर चलना भी प्रतिबंधित रहेगा। यह आदेश चुनाव सम्पन्न होने तक जिलेभर में प्रभावशील रहेगा।

श्रीमद्भागवत महायज्ञ के आयोजन की निकली भव्य कलशयात्रा

खजुराहो, देशबन्धु। नगर के पश्चिमी मंदिर समूह के सामने मकबरा परिसर में मतंगेश्वर उत्सव समिति द्वारा आश्विन माष की नवरात्रि पर्व के मौके पर श्रीमद्भागवत कथा तथा महायज्ञ का भव्य आयोजन किया है कथाव्यास आचार्य पंडित मुकेश शास्त्री द्वारा अपने मुखारविंद से 15 अक्टूबर से 21अक्टूबर तक संगीतमय व्याख्यान किया जाएगा,उक्त धार्मिक आयोजन श्रीमद्भागवत कथा की भव्य कलशयात्रा निकाली गई जो मतंगेश्वर मंदिर से प्रारंभ होकर नगर में निकली,कलशयात्रा में भगवान की झांकी आकर्षण का केंद्र रही,उक्त कलशयात्रा में महारानी कविता सिंह,युवराज आदित्य प्रताप सिंह सहित बड़ी संख्या में माताएं बहिनें और श्रद्धालुजन शामिल हुए।

पुलिस प्रशासन ने फ्लैग मार्च निकालकर की सहयोग की अपील

छतरपुर, देशबन्धु। आगामी विधानसभा चुनाव को दृष्टिगत रखते हुए रविवार को कलेक्टर संदीप जी आर एवं पुलिस अधीक्षक अमित सांघी के निर्देशन में नौगाँव एसडीएम सुश्री विशा माधवानी, नौगांव एसडीओपी चंचलेश मरकाम, नौगांव तहसीलदार, नौगांव टीआई के साथ पुलिस बल ने संयुक्त रूप से ग्राम ददरी, दौरिया, कस्बा नौगाँव एवं थाना अलीपुरा के ग्राम जोरन में फ्लैग मार्च निकालकर आम जनता से प्रशासन एवं पुलिस का सहयोग कर शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की। साथ ही आम जनता से संवाद कर चुनाव के दौरान शांति व्यवस्था बनाये रखने, पुलिस एवं प्रशासन का सहयोग करने एवं भय मुक्त होकर मतदान करने की अपील की गई।

बागेश्वर धाम पर चलाया गया सफाई अभियान

छतरपुर, देशबन्धु। श्रद्धालुओं और समिति ने रविवार को जिले के प्रमुख तीर्थ क्षेत्र बागेश्वर धाम पर स्वच्छता का महा अभियान चलाया। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पं. धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री के निर्देशन पर चलाए गए इस अभियान के दौरान धाम परिक्षेत्र से पॉलीथिन, प्लास्टिक सहित अन्य कचरा साफ किया गया। इस दौरान लगभग दो सौ ट्रॉली कचरे को एकत्रित कर फेंका गया। श्रद्धालुओं ने बागेश्वर धाम पर स्थित सरोवर की सफाई भी की। इस दौरान बागेश्वर धाम जनसेवा समिति के सदस्यों के अलावा बाहर से आए श्रद्धालु भी हाथ में झाड़ू लिए धाम परिक्षेत्र की सफाई करते हुए नजर आए।

शासकीय अधिकारी-कर्मचारी आदर्श आचरण संहिता का कड़ाई से पालन करें

छतरपुर, देशबन्धु। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा निर्वाचन 2023 का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। विधानसभा निर्वाचन के अंतर्गत छतरपुर जिले में 6 विधानसभा क्षेत्र महाराजपुर, चंदला, राजनगर, बिजावर, छतरपुर एवं मलहरा में विधानसभा आम निर्वाचन सम्पन्न कराए जा रहे हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी संदीप जी.आर. ने जिले में पदस्थ अधिकारी-कर्मचारियों को निर्देश दिए है कि आदर्श आचरण संहिता का कड़ाई से पालन करें। उन्होंने कहा है कि निर्वाचन के दौरान अपने आचरण और व्यवहार में पूर्ण पारदर्शिता और निष्पक्षता बरतें। आदर्श आचरण संहिता के उल्लंघन की जानकारी मिलने पर संबंधितों के विरूद्ध दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगा। इस संबंध में सभी विभाग प्रमुख, रिटर्निंग अधिकारी, सहा. रिटर्निंग अधिकारी, सीईओ जनपद पंचायत, सीएमओ नगरीय निकाय को आवश्यक दिशा निर्देश जारी किये गए है।

अवैध शराब, कट्टा, जिला बदर सहित अन्य अपराधों में लिप्त लोगों पर की गई कार्यवाही

लवकुशनगर, देशबन्धु। म.प्र. विधानसभा चुनाव 2023 का आदर्श आचार संहिता प्रभावशील होने के उपरांत पुलिस अधीक्षक द्वारा चलाये जा रहे जिले में विशेष अभियान के दौरान पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में तथा एसडीओपी के मार्गदर्शन में अब तक थाना लवकुशनगर में आरोपी सुनील पिता बृजमोहन अहिरवार निवासी देवनगर के कब्जे से 25 क्वाटर अवैध शराब इसी प्रकार आरोपी भूपत पिता मुरलीधर पाल निवासी बिगपुर के कब्जे से 22 क्वाटर रोपी छविलाल पिता तुलैया अहिरवार के कब्जे से 20 क्वाटर एवं आरोपी करन पिता अजुद्धी चढार निवासी बगसोई जिला टीकमगढ के कब्जे से 20 क्वाटर आरोपी महेन्द्र सेन पिता किशन सेन निवासी गुलाट थाना बिजावर के कब्जे से 22 क्वाटर अवैध शराब जप्त कर धारा 34 (1) आबकारी एक्ट के तहत कार्यवाही की गई है एवं थाना क्षेत्र मे दहशथ फैलाने के उद्देश्य से जिला बदर आरोपी हर्ष वर्धन पिता पप्पू उर्फ रामदरस शुक्ला निवासी लवकुशनगर तथा आरोपी दीपेन्द्र उर्फ बोला तिवारी पिता शिव कुमार तिवारी निवासी लवकुशनगर द्वारा अवैध कट्टा लिये घूमते पाये जाने पर आरोपीगणो के कब्जे से 01-01 अदद 315 बोर के देशी कट्टा व एक एक जिंदा कारतूस जप्त कर आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही की गई तथा आरोपी शकील खान पिता बब्बू खान निवासी सुभाष नगर कबरई एवं आरोपी साहिल उर्फ सोहित पिता भगवत नारायण उपाध्याय निवासी लवकुशनगर के कब्जे से एक एक अदद लोहे के छुरा अवैध रूप से लिये पाये जाने पर जप्त कर आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही की गई तथा थाना क्षेत्र के आदतन अपराधी हीरू उर्फ धीरू उर्फ बबलू पिता बलवान उर्फ मेनन सिंह ठाकुर निवासी गुढाकला एवं घप्पू उर्फ राजबाहदुर पिता बलवान सिंह निवासी गुढाकला, प्रमोद पिता रामसेवक मिश्रा निवासी गुढाकला तथा सुन्दर पिता देवेन्द्र कुमार अहिरवार निवासी लवकुशनगर के विरूद्ध धारा 110 जा0फौ0के तहत 04 आदत्र अपराधियों पर कार्यवाही की जाकर बाउण्ड ओवर के प्रारम्भिक आदेश जारी कराये गये है। तथा क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाये रखने हेतु धारा 107,116(3) जा0फौ0 के तहत 108 प्रकरण तैयार कर 170 व्यक्तियों पर कार्यवाही की जाकर तहसील न्यायालय में पेश कर प्रारम्भिक नोटिस जारी कराये जा चुके है जिन्हे शीघ्र बाउन्डओवर कराये जाने की कार्यवाही की जा रही है।

उक्त कार्यवाही थाना प्रभारी प्रशांत कुमार सेन के नेतृत्व में की गयी। कार्यवाही में उप. निरी. सत्येन्द्र यादव स. उ. नि. जे.पी अहिरवार का. प्र. आर. 722 अनीस अहमद का. प्र. आर. 267 महेन्द्र यादव का. प्र. आर. 370 बुद्ध सिंह का. प्र. आर. 1084 माताबदल पटेल आर. 1065 सुभम सेन आर. 1096 रमाकांत तिवारी आर. सूरज शर्मा आर. 365 चांद खा आर. 1227 उमेस बर्मा का सराहनीय योगदान रहा।

धूमधाम से निकली महाराजा अग्रसेन की भव्य शोभायात्रा

छतरपुर, देशबन्धु। अग्रवाल समाज के कुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन की 5147 वीं जयंती रविवार को पूरे जिले में हर्षोल्लास से मनाई गई। इस अवसर पर शहर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई। इसी के साथ पिछले एक सप्ताह से चल रहे अग्रसेन जयंती महोत्सव के कार्यक्रमों का समापन हो गया।

जिला अग्रवाल समाज के मीडिया प्रभारी रामकिशोर अग्रवाल ने बताया कि जिला मुख्यालय छतरपुर में महाराजा अग्रसेन की भव्य शोभायात्रा दोपहर ढ़ाई बजे महालक्ष्मी मंदिर से प्रारंभ हुई जो चौक बाजार, महल रोड, छत्रसाल चौक, पुराना रोजगार कार्यालय, बस स्टैंड, हटवारा होते हुए शिल्पशाला मार्ग स्थित अग्रसेन विद्या मंदिर पहुंच कर महाआरती के साथ संपन्न हो गई। शोभायात्रा में महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों यानि गोत्र के रूप में 18 घोड़ों पर सवार युवा सबसे आगे चल थे। शोभायात्रा में अग्रवालों की कुल देवी माता महालक्ष्मी की जीवंत झांकी के साथ महाराजा अग्रसेन की जीवंत झांकी और एक बग्घी में महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा आकर्षण का केंद्र रही। शोभायात्रा में बैंड बाजे, डीजे की धुन पर नारी शक्ति नृत्य करते चल रही थी। रास्ते में जगह जगह शोभायात्रा का पुष्प वर्षा कर आत्मीय स्वागत किया गया। स्वागत के लिए आकर्षक स्वागत द्वार बनाए गए थे। शोभायात्रा का विभिन्न समाजों और संगठनों द्वारा स्वागत कर उत्साहवर्धन किया गया।

शोभायात्रा में अग्रवाल समाज के जिलाध्यक्ष प्रभात सर्राफ, नगर अध्यक्ष मनीष अग्रवाल, अग्रसेन महिला विकास समिति की अध्यक्ष सोनम अग्रवाल, नवयुवक मंडल अध्यक्ष शिवम शानू, अग्रवाल महासभा के संभाग अध्यक्ष आनंद अग्रवाल, जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम अग्रवाल, महिला महासभा की जिलाध्यक्ष ज्ञानू अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में नारी शक्ति, बच्चे, युवा और बुजुर्गों ने सहभागिता की।

शुरू हुई देवी मां की आरधना, मंदिरों में उमड़ा भक्तों का सैलाब

छतरपुर, देशबन्धु। शारदीय नवरात्र शुरू होते ही मंदिरों में श्रद्धालुओं का तांता लगना शुरू हो गया है। पहले दिन रविवार को श्रद्धालुओं ने देवी मां की विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर नौ दिन के व्रतों का शुभारंभ किया। शहर के प्रसिद्ध खेरे की देवी मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ देखने को मिली। भक्तों ने मंदिर पहुंचकर विशेष पूजा-अर्चना की।

मंदिर के पुजारी ने बताया कि इस मंदिर की स्थापना शहर की स्थापना के वक्त की गई थी। कई दशकों से यह मंदिर शहर के लोगों के लिए आस्था केन्द्र है और बड़ी संख्या में भक्तगण पूजा-अर्चना करने पहुंच रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रत्येक नवरात्रि में नौ दिनों तक खेरे की देवी मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना और भंडारे का आयोजन किया जाता है, और उसी क्रम में इस वर्ष भी आयोजन किया जा रहा है। इसके अलावा शहर के अन्य मंदिरों में भी भक्तों की भीड़ देखने को मिली। लोगों ने मां को जल अर्पण कर सुख-समृद्धि की कामना की।

इसके पहले सभी अग्र बंधुओं, नारी शक्ति और बच्चों को शोभायात्रा में शामिल होने के लिए प्रेरित करने सुबह पूरे नगर में दो पहिया वाहन से प्रभात फेरी निकाली गई। इसके पहले सुबह 7 बजे हरिओम गौशाला में गौसेवा की गई। महालक्ष्मी मंदिर में रामायण पाठ पूर्ण होने पर सुबह 8 बजे हवन पूजन हुआ। तत्पश्चात 9 बजे कन्या भोज और सुबह 10 बजे समाजजन भंडारे का आयोजन किया गया।

सागर, सोमवार 16 अक्टूबर 2023

संस्थापक-संपादक : स्व. माया राम सुरजन

इज़राइल-फिलिस्तीन झगड़े में विश्वगुरु बनने की चाहत!

इज़राइल और फिलिस्तीन के बीच छिड़ी जंग से कट्टर हिन्दू और कट्टर मुसलमान दोनों बहुत खुश हैं। ऐसे हिन्दुओं को इस बात में मज़ा आ रहा है कि मुसलमान मारे जा रहे हैं और मुसलमानों को इस बात में कि उनके लोग यहूदियों को सबक सिखा रहे हैं। इन दोनों फिरकों को कतई ये बुरा नहीं लग रहा है कि आखिर क़त्ल तो बेगुनाह इंसानों का ही हो रहा है। दिक्कत ये है कि हमास को आतंकवादी संगठन कहने पर मुसलमान नाराज़ हो जाते हैं और इज़राइल को आक्रान्ता बताने पर हिंदूवादी। दोनों ही भूल जाते हैं कि युद्ध किसी चीज़ का समाधान नहीं है, बल्कि वह समस्याएं ही पैदा करता है और उन्हें बढ़ाता भी है। लगभग डेढ़ साल से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध का अभी तक तो कोई नतीजा निकला नहीं है और न ही निकट भविष्य में ऐसा होता दिखाई देता है।

इधर हिन्दूवादियों को इस युद्ध ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ एक और कुतर्क दे दिया है जिसके मुताबिक मुसलमान अगर ये मानते हैं कि इज़राइल ने उनकी ज़मीन हथिया ली है और वो उन्हें वापस मिलनी चाहिये तो फिर वे अयोध्या, काशी और मथुरा हिन्दुओं को वापस क्यों नहीं दे देते। राजनीतिक रूप से निरक्षर लोगों को यह बात सही लग सकती है लेकिन वास्तव में इज़राइल-फिलिस्तीन मामले की तुलना भारत के इन धर्मस्थलों से करना सिरे से ग़लत है। क्योंकि इनको लेकर विवाद थे नहीं, पैदा किये गये हैं और इनका निपटारा देश की अदालतें देर-सबेर कर ही देंगी। दूसरा- तमाम मतभेदों के बावजूद और कभी-कभार के तनाव या टकराव को छोड़ सभी धर्मों के मानने वाले शांति और भाईचारे के साथ इस देश में रहते आये हैं जबकि इज़राइल ने फिलिस्तीनी आबादी को बहुत छोटे से इलाके में रहने को मजबूर कर रखा है और उस पर भी वह लगातार हमले करता रहता है।

इस युद्ध के साथ कांग्रेस के ख़िलाफ़ भी दुष्प्रचार का नया सिलसिला चल निकला है। कांग्रेस ने पहले ही दिन निर्दोष इज़राइली नागरिकों की हत्या पर गहरा दु:ख व्यक्त किया, उनकी भर्त्सना की और युद्धविराम की अपील भी की। लेकिन फिलिस्तीन के अधिकारों की बात करते ही उस पर हमास समर्थक होने का लेबल चस्पा कर दिया गया क्योंकि कांग्रेस ने हमास की निंदा नहीं की। एक झूठ यह भी फैलाया जा रहा है कि फिलिस्तीनी नेता यासिर अराफ़ात एक आतंकवादी थे, जिन्हें इंदिरा और राजीव गांधी ने सर-आंखों पर बैठाया। इंदिरा गांधी ने मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए सबसे पहले फिलिस्तीन को मान्यता दी और अराफ़ात को 'नेहरू शांति पुरस्कार' दिया, उन्हें एक करोड़ रुपये और सोने की ढाल भेंट की जबकि राजीव गांधी ने उन्हें 'इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार' दिया। इतना ही नहीं, राजीव ने उन्हें दुनिया भर में घूमने के लिए बोइंग जहाज भी भेंट किया था। कहने की ज़रूरत नहीं कि बेसिर पैर की ऐसी बातें कहां और क्यों गढ़ी जाती है।

दो और दो को पांच बनाने में माहिर भारतीय जनता पार्टी को बताना चाहिए कि अटल बिहारी वाजपेयी ने 1977 में रामलीला मैदान पर फिलिस्तीन के समर्थन में जो कहा था, उससे वह सहमत है या नहीं। उसकी नज़र में हमास और फिलिस्तीन अगर एक ही हैं तो उसे साफ़ करना चाहिए कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फिलिस्तीन क्यों गए थे और क्यों उन्होंने वहां का सर्वोच्च नागरिक सम्मान स्वीकार किया, क्यों यासिर अराफ़ात की कब्र पर उन्होंने फूल चढ़ाये। और अब विदेश मंत्रालय को यह कहने की ज़रूरत क्यों पड़ी कि भारत ने हमेशा से ही एक अलग और स्वतंत्र फ़िलिस्तीन राज्य का समर्थन किया है। साथ ही शांतिपूर्ण समाधान के लिए सीधी बातचीत की वकालत भी की है। क्या इज़राइल के साथ खड़े होने का ट्वीट करने के चार दिन बाद सरकार को अहसास हुआ कि उसे तटस्थ रहना चाहिये?

मज़े की बात है कि फिलिस्तीन पर सरकार की नीति को लेकर उससे पूछे गये सवालों पर जो सफाई भाजपा या सरकार को देनी थी, वह गोदी मीडिया ने दी कि भारत तो इज़राइल और फिलिस्तीन के मामले में हमेशा से तटस्थ रहा है और मोदीजी ने फिलिस्तीन का नहीं, बल्कि फिलिस्तीन के चरमपंथी संगठन हमास और उसके हमले का विरोध किया है। इस तरह के हमलों के ख़िलाफ़ भारत की जो ज़ीरो टॉलरेंस की नीति है, मोदीजी के नेतृत्व में भारत उसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। अच्छा है यदि सचमुच ऐसा हो रहा हो, लेकिन इज़राइल-फिलिस्तीन मामले में जब दूसरे तमाम देश प्रतिक्रिया देने के लिये सही समय का इंतज़ार कर रहे थे तब हमारी सरकार को किस बात की जल्दबाज़ी थी? क्या विश्वगुरु बनने की महत्वाकांक्षा इतनी प्रबल थी कि थोड़ी देर के लिये ही सही, हर कसौटी पर जांची-परखी हुई अपनी विदेश नीति को हमने दरकिनार कर दिया?

सिंधिया के खिलाफ बन गया यह चुनाव

लोग पूछते हैं पांचों राज्यों में कांग्रेस सबसे ज्यादा सीटें कहां जीतेगी? मतलब कांग्रेस की जीत की संभावना सब जगह है लेकिन लोग इसमें से सबसे अच्छी जीत जानना चाहते हैं। मुश्किल सवाल है! लेकिन अब राहुल को मुश्किल सवाल हल करने में मजा आने लगा है इसलिए वे हर जगह मध्य प्रदेश को सबसे ऊपर रख रहे हैं। कह रहे हैं 150।

रविवार को पहले नवरात्रि से कांग्रेस ने टिकटों की घोषणा करना शुरू कर दी। पहली लिस्ट मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ और तेलंगाना के टिकटों की निकाली है। मध्य प्रदेश की आधी से ज्यादा सीटों के उम्मीदवार घोषित कर दिए। 230 में से 144। बिना गुटबाजी के केवल जीत सकने की संभावना वाले उम्मीदवार। मध्य प्रदेश में पिछले 20 सालों में यह पहला मौका है जब कांग्रेस में कोई गुटबाजी नहीं है। नहीं तो 2003 के बाद हर विधानसभा चुनाव कांग्रेस खुद को ही हराती रही है। मध्यप्रदेश में यह मजाक खूब किया जाता रहा है कि जनता तो कांग्रेस को जिताना चाहती है मगर कांग्रेसी भी पक्के हैं अड़ जाते हैं कि नहीं जीतेंगे!

पिछले 2018 के चुनाव में भारी गुटबाजी थी। ज्योतिरादियत्य सिंधिया सीईसी (केन्द्रीय चुनाव समिति) की बैठकों में किसी का लिहाज नहीं करते थे। परिवार के विशेष कृपापात्र थे इसलिए सोनिया और राहुल जो उस समय कांग्रेस अध्यक्ष थे के सामने कमलनाथ और दिग्विजय से उलझ जाते थे। अपने सबसे ज्यादा टिकट करवाए और फिर उनको लेकर भाजपा में चले गए। अब कांग्रेस से वह समस्या खत्म हो गई है। हमेशा के लिए तो नहीं कह सकते। सिंधिया कब वापस आ जाएं इसका भरोसा नहीं है। फिलहाल तो राहुल ने कहा है कि नहीं लेंगे। मगर जैसा कि अभी पुरानी संसद के केन्द्रीय कक्ष में सोनिया गांधी के पास आकर बैठ गए थे तो ऐसे वे कभी भी सोनिया गांधी से माफी मांगकर उनका मन पिघला सकते हैं।

खैर वह बाद की बात है अभी तो कांग्रेस के लिए राहत की बात यह है कि राज्य के दोनों वरिष्ठ नेता कमलनाथ और दिग्विजय एक साथ हैं। राज्य में कोई गुट नहीं है। जबकि इसके विपरीत मध्य प्रदेश भाजपा में पहली बार इतनी भयंकर गुटबाजी देखी जा रही है। सबसे मेहनती और लोकप्रिय भी शिवराज सिंह चौहान को मुख्यमंत्री होते हुए भी किनारे धकेला जा रहा है। मैसेज साफ है कि अगर भाजपा जीत भी गई तो शिवराज इस बार मुख्ययमंत्री नहीं बनेंगे। और इस दीवार पर लिखे सत्य ने भाजपा के नेताओं की 20 साल से दबी हसरतों को फिर से उभार दिया है। कैलाश विजयवर्गीय, गोपाल भार्गव तो खुलेआम खुद को मुख्यमंत्री का दावेदार बताने लगे हैं। लेकिन जो चुप हैं वे केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र तोमर, ज्योतिरादित्य सिंधिया भी अपनी संभावनाएं देखने लगे हैं।

मजेदार यह है कि केन्द्रीय नेतृत्व को भी इससे कोई परेशानी नहीं है। वह गुटबाजी को रोकने की कोई कोशिश नहीं कर रही है। सीधा संकेत दे रही है कि चुनाव खुद मोदी जी लड़ रहे हैं। बाकी सब सामान्य

शकील अख्तर

> अभी तो कांग्रेस के लिए राहत की बात यह है कि राज्य के दोनों वरिष्ठ नेता कमलनाथ और दिग्विजय एक साथ हैं। राज्य में कोई गुट नहीं है। जबकि इसके विपरीत मध्य प्रदेश भाजपा में पहली बार इतनी भयंकर गुटबाजी देखी जा रही है। सबसे मेहनती और लोकप्रिय भी शिवराज सिंह चौहान को मुख्यमंत्री होते हुए भी किनारे धकेला जा रहा है। मैसेज साफ है कि अगर भाजपा जीत भी गई तो शिवराज इस बार मुख्ययमंत्री नहीं बनेंगे।

केंडिडेट या नेता हैं। केन्द्रीय मंत्रियों और सांसदों को चुनाव लड़ाकर भाजपा यही संदेश दे रही है कि शिवराज की सरकार जीत के काबिल नहीं है इसलिए बाहरी फौज उतारना पड़ी है।

शिवराज भी थोड़ी चुनौती देने की मुद्रा में आ गए हैं। करीब 18 साल से मुख्यमंत्री हैं। बहुत दबते हैं मगर एक सीमा होती है जब आदमी का स्वाभिमान बाहर आ जाता है। चुनाव की घोषणा के साथ ही शिवराज राज्य छोड़कर गंगा तट पर चले गए। वहां फोटो शूट करवाया। हाथ में नोटबुक लेकर हिसाब किताब लिखने का। अब किसका हिसाब लिख रहे हैं यह तो पता नहीं मगर कैमरा फेस मोदी जी की तरह ही बहुत कान्फिडेंस से किया।

अब शायद बीजेपी में पार्टी विथ डिफरेंस का मतलब यह हो गया है कि अलग-अलग कोणों से कौन अपने फोटो और वीडियो ज्यादा बेहतर बनवाता है। फोटो विथ डिफरेंस! मामा डिफरेंट रोल में आने लगे हैं। इतना साहस कि पूछ रहे हैं कि मुझे मुख्यमंत्री रहना चाहिए या नहीं। साथ ही ऐसा सवाल प्रधानमंत्री मोदी के लिए भी पूछकर और ज्यादा दुस्साहस दिखा रहे हैं। कह रहे हैं कि मोदी जी को फिर प्रधानमंत्री बनना चाहिए कि नहीं?

यह अपनी सीमाओं से बाहर जाकर सवाल पूछना है। भाजपा में इतना साहस किस का है जो मोदी बनेंगे या नहीं सोच भी सकता है। आज की तारीख में जो सोचना है वह मोदी जी को ही सोचना है। किसी नेता की तो बात छोड़िये पार्टी या संघ में भी इतनी ताकत नहीं बची है कि वह मोदी जी के बारे में कोई फैसला कर पाए। फैसला खुद मोदी जी ही करेंगे। ऐसे में शिवराज सिंह चौहान का यह दुस्साहस ही कहा जाएगा कि वे पूछ रहे हैं कि मोदी जी को बनाना चाहिए या नहीं!

नहीं कहने का अधिकार तो किसी के पास नहीं है। लेकिन शिवराज अप्रत्यक्ष रूप से मोदी जी को भी चुनौती दे रहे हैं। इसलिए मध्य प्रदेश का चुनाव अब बहुत दिलचस्प हो गया है। बीजेपी की आन्तरिक फूट और कांग्रेस की एकता इस चुनाव के अहम मुद्दे हैं। बाकी सिद्धांत, नीतियां, घोषणाएं अलग बात है। कांग्रेस ने बेहिचक भाजपा से आए हुए नेताओं को टिकट दे दिए।

सबसे महत्वपूर्ण तो दतिया में राज्य के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा के खिलाफ भाजपा से आए अवधेश नायक को टिकट देना रहा। नरोत्तम दतिया से तीन चुनाव लगातार जीत चुके हैं। इससे पहले वे डबरा जिला ग्वालियर से लड़ते थे। मगर वह सीट रिजर्व होने के बाद 2008 से दतिया से लड़ रहे हैं। यहां कांग्रेस से उन्हें चुनौती देने वाला कोई नहीं था। मगर इस बार दिग्विजय सिंह और कमलनाथ ने संघ से आए नेता अवधेश नायक को उनके मुकाबले उतारकर चुनाव दिलचस्प बना दिया है। नरोत्तम पिछला चुनाव कम वोटों से जीते थे। ऐसे ही कुछ और सीटों से भी कांग्रेस ने भाजपा से आए नेताओं को टिकट दिया है। मतलब साफ है जीत ही प्रमुख है। लंबे अरसे के बाद कांग्रेस ऐसा सोच रही है।

दरअसल इस चुनाव में कांग्रेस के मन में एक बात और है। ज्योतिरादित्य सिंधिया को सबक सिखाने की भावना। आम तौर पर कांग्रेस में ऐसा होता नहीं है। लेकिन सिंधिया के विश्वासघात से जिस तरह यहां कांग्रेस सरकार गई है वह कांग्रेसी तो कांग्रेसी जनता भी नहीं भूली है। ग्वालियर चंबल संभाग जिसे सिंधिया अपना घर कहते हैं वहां इसे विश्वासघात जैसा किताबी लफ्ज़ नहीं कहा जा रहा। सीधा गद्दारी बोला जा रहा है। इसलिए ज्योतिरादित्य खुद चुनाव लड़ने से डर रहे हैं। भाजपा ने तीन केन्द्रीय मंत्रियों को चुनाव मैदान में उतार दिया है। जिसमें ग्वालियर चंबल संभाग से ही आने वाले नरेन्द्र सिंह तोमर भी हैं। ऐसे में सिंधिया का चुनाव लड़ने से बचना मुश्किल ही लग रहा है। उधर कांग्रेस के नेता उन्हें लगातार चुनाव लड़ने की चुनौती दे रहे हैं। विधानसभा में विपक्ष के नेता डॉ. गोविन्द सिंह ने उन्हें अपने खिलाफ लहार जिला भिंड, ग्वालियर चंबल इलाके से ही लड़ने की चुनौती दी है।

सिंधिया बहुत असमंजस में हैं। खुद को चुनाव लड़ने से बचाने की कोशिश के साथ ही उन्हें अपने साथ भाजपा में आए लोगों को टिकट दिलाने का भी बड़ा काम करना है। भाजपा अभी तक 136 उम्मीवार घोषित कर चुकी है। मगर ग्वालियर चंबल संभाग में सिंधिया समर्थक चार मंत्रियों और एक विधायक को अभी तक टिकट नहीं मिला है।

सिंधिया के लिए केवल कांग्रेस ही समस्या नहीं है भाजपा के नेता भी उन्हें निपटाने में उसी ताकत से लगे हैं। पुराने नेता अपनी सीटें सिंधिया के लोगों के लिए छोड़ने को तैयार नहीं है। सिंधिया के लिए दोई दीन से गए वाली हालत हो गई है। न हलवा मिल रहा है न मांडे!

असम के मुख्यमंत्री सांप्रदायिक दिशा में चला रहे हैं भाजपा का चुनावी अभियान

■ आशीष विश्वास

असम में, मुख्यमंत्री हिमंत विस्वा शर्मा ने विपक्ष के भ्रष्टाचार के नये आरोपों का जवाब देते हुए, 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए चुनाव पूर्व अभियान में विशेष रूप से कांग्रेस पार्टी पर निशाना साधते हुए तीखा जवाबी हमला किया है। अन्य राज्यों के विपरीत, असम में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अपने प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में थोड़ी बेहतर स्थिति में है, विभाजित विपक्ष के भीतर एकजुटता की निरंतर कमी से कुछ हद तक इसमें मदद मिली है।

भाजपा ने सांप्रदायिक आधार पर मतदाताओं के बीच ध्रुवीकरण के लिए एक उच्च-स्तरीय अभियान शुरू कर दिया है। इसके नेता कांग्रेसियों पर निशाना साध रहे हैं, जिसे उनकी पुरानी 'मुसलमानों के तुष्टिकरण की नीति' के रूप में वर्णित किया गया है। हाल ही में कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) के बयान में गाजा में इजरायली बलों और सशस्त्र मुस्लिम हमास समूह के बीच संघर्ष को समाप्त करने का आह्वान किया गया है, जिसने भाजपा को विपक्ष को मात देने के लिए एक और छड़ी प्रदान की है।

जहां एक ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमास द्वारा उसके क्षेत्र पर हमले के बाद इजरायल के लिए भारत के समर्थन को जोरदार ढंग से रेखांकित किया है, तथा फिलिस्तीन समर्थक भावनाओं को कोई रियायत नहीं दी है, वहीं दूसरी ओर, सीडब्ल्यूसी की अपील में गाजा पट्टी पर संकटग्रस्त 23लाख मुस्लिम आबादी की लंबे समय से चली आ रही शिकायतों का उल्लेख किया गया है। वे वर्षों से कठोर इज़रायली कब्जे वाली सेना के अधीन रह रहे हैं।

> छोटी पार्टियां,जैसे रायसर दल और असम जातीय परिषद भाजपा का विरोध करते हैं लेकिन अभी तक व्यापक गठबंधन का हिस्सा नहीं हैं। दिलचस्प बात यह है कि आम आदमी पार्टी (आप), जिसने कुछ समय पहले गुवाहाटी नगर निगम चुनावों में एक वार्ड जीतकर असम में अपना कदम रखा था, ने कमल मेधी, जो पहले रायसर दल के नेता थे, को अपने पाले में करने में कामयाब रही है

इस प्रक्रिया में, श्री मोदी ने किसी भी स्तर पर किसी भी परामर्श के बिना, स्थायी अरब-इजरायल संघर्ष के प्रति भारत की विदेश नीति के पारंपरिक गुटनिरपेक्ष जोर को उलट दिया। कई दिनों बाद 12अक्टूबर को, भारत के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने, स्पष्ट रूप से मुस्लिम राष्ट्रों के बड़े समूह पर संभावित नकारात्मक प्रभाव के बारे में सोचते हुए, फिलिस्तीनी संघर्ष के लिए भारत सरकार के पुराने समर्थन की पुष्टि करके मामले को संतुलित किया।

यह प्रधानमंत्री मोदी के पहले एकतरफा इजरायल समर्थक बयान से भाजपा के अस्थायी रूप से पीछे हटने का एक दुर्लभ उदाहरण था, इसका तेजी से टालमटोल वाला कदम निस्संदेह कांग्रेस के शांत रुख से प्रभावित था। सीडब्ल्यूसी द्वारा फिलिस्तीनियों के प्रति सहानुभूति और समर्थन की भारत की पिछली प्रतिबद्धता को दोहराने के साथ कांग्रेस की प्रतिक्रिया एक अपेक्षित मार्ग का पालन कर रही है।

ऐसा नहीं है कि चुनाव पूर्व अभियान के वर्तमान चरण के दौरान असम में इस तरह के सूक्ष्म सामरिक बदलावों से बहुत फर्क पड़ता है। श्री शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश भाजपा विपक्ष पर हमला करने में लगातार अपने केंद्रीय नेतृत्व से भी आगे रहती है।

एक उदाहरण: भाजपा ने पश्चिम एशियाई संघर्ष पर मुस्लिम वोट-बैंक के विचारों के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए एक बार फिर कांग्रेस की निंदा की तथा राज्यवर्धन राठौड़ जैसे नेताओं ने एक आरोप लगाया। यह कांग्रेस के बयान को इंगित करने के लिए असम में भाजपा पर छोड़ दिया गया था जो पाकिस्तानी नेताओं द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं से अलग नहीं था।

यह चाल इस मायने में कारगर साबित हुई कि शर्मा के आलोचकों को भी यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि चुनाव पूर्व चरण में कड़वी बहस के स्तर को अप्रत्याशित रूप से बढ़ाकर, प्रदेश भाजपा ने विपक्ष को एक कोने में धकेल दिया। कांग्रेस नेता गौरव गोगोई ने एक प्रभावी उत्तर देते हुए बताया कि कैसे पूर्व भाजपा प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कांग्रेस द्वारा तैयार की गई गुटनिरपेक्ष विदेश नीति को जारी रखा था। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त क्षेत्र के लिए फिलिस्तीनियों के संघर्ष को भारत के निरंतर समर्थन को रिकॉर्ड में रखा था।

लेकिन असम या अन्य जगहों पर कट्टरपंथी भाजपा नेता श्री गोगोई के तथ्यात्मक रूप से सही जवाब से प्रभावित नहीं हुए। उन्होंने कहा कि 'हर कोई जानता है कि वर्तमान भाजपा, दिवंगत वाजपेयी या अब भी एल.के. अडवाणी जैसे नेताओं के प्रति दिखावा करती है'। पश्चिम बंगाल में पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा, 'आडवाणी ने संसद के अंदर और बाहर या आधिकारिक नीति-निर्माण में व्यवहार के बहुलवादी मानदंडों का ईमानदारी से पालन करने वाली अपनी पिछली कार्यशैली को बिना सोचे-समझे त्याग दिया है।' श्री गोगोई इस बारे में शायद ही नासमझ थे।

जहां तक नये इंडिया गठबंधन के तत्वावधान में बहुचर्चित विपक्षी एकजुटता की बात है, तो असम में बहुत अधिक प्रगति नहीं हुई है। राज्य स्थित टीएमसी ने सुझाव दिया कि कांग्रेस और गैर-भाजपा दलों के साथ सीट समायोजन पर बातचीत शुरू होनी चाहिए, लेकिन इंडिया के घटकों की ओर से कोई हलचल नहीं हुई है, हालांकि वे जानते हैं कि भाजपा चुनावी लड़ाई के लिए तैयार है।

दुर्भाग्य से, प्रदेश कांग्रेस बेहद झगड़ालू गुटों में बंटी हुई है, भूपेन बोरा जैसे वरिष्ठ नेता पार्टी भी अंदरूनी झगड़ों में उलझे हुए हैं। सांसद बदरुद्दीन अजमल के नेतृत्व वाले अल्पसंख्यक-आधारित ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (एआईयूडीएफ) ने कांग्रेस के साथ सीट समायोजन पर बातचीत शुरू करने का प्रयास किया था, लेकिन कांग्रेस ने अब तक कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई है।

उनके आलोचकों के अनुसार, पूर्वोत्तर क्षेत्र में सबसे बड़े मुस्लिम नेता के रूप में उभरने के अपने सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, अजमल ने हाल के वर्षों में कुछ और प्रभाव खो दिया है। एआईयूडीएफ की किस्मत में गिरावट हाल के चुनावों में पार्टी की हार में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई है।

छोटी पार्टियां,जैसे रायसर दल और असम जातीय परिषद भाजपा का विरोध करते हैं लेकिन अभी तक व्यापक गठबंधन का हिस्सा नहीं हैं। दिलचस्प बात यह है कि आम आदमी पार्टी (आप), जिसने कुछ समय पहले गुवाहाटी नगर निगम चुनावों में एक वार्ड जीतकर असम में अपना कदम रखा था, ने कमल मेधी, जो पहले रायसर दल के नेता थे, को अपने पाले में करने में कामयाब रही है।दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल सहित आप के शीर्ष नेताओं के असम अभियान में सक्रिय रूप से शामिल होने के साथ, स्थानीय पार्टी नेताओं को भरोसा है कि उच्च स्तर के भ्रष्टाचार और भाजपा की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ उनका अभियान क्षेत्र में नये, युवा मतदाताओं और नौकरी के इच्छुक उम्मीदवारों को पसंद आयेगा।

कांग्रेस नेताओं के एक वर्ग ने कुछ दिन पहले ही एक सार्वजनिक समारोह में अन्य विपक्षी दलों के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं का अपने खेमे में शामिल होने के लिए स्वागत करने के विचार का समर्थन किया था। कुछ नेताओं को असम गण परिषद के नेताओं के साथ जुड़ने की उम्मीद थी। यह भाजपा के लिए एक बड़ा झटका होता, जिसकी अगप एक मजबूत सहयोगी है।

दुर्भाग्य से, दूसरी पंक्ति के स्थानीय क्षेत्र के नेताओं को छोड़कर, कुछ अन्य पार्टियों से, कोई भी महत्वपूर्ण या प्रतिष्ठित व्यक्ति कांग्रेस में शामिल नहीं हुआ, जिससे कांग्रेसियों का छुपा हुआ मोहभंग हुआ।

हालांकि, जैसा कि चुनाव पूर्व अभियान जारी है, विपक्षी नेताओं को उम्मीद है कि चुनाव आने तक, आम लोगों के लिए अपने विशिष्ट राजनीतिक कार्यक्रमों और परियोजनाओं के साथ एक व्यापक भाजपा विरोधी राजनीतिक मंच तैयार हो जायेगा।

गुरवाणी विचार

लेखे छोड़ि अलेखे छूटे हम निर्गुण लेहो उबारी

बारह माह महिना कार्तिक
कतिकि करम कमावने दोस न काहू जोगु
परमेसर ते भुआं-विआपन सभै रोग
वेमुख होवे राम ते लगनि जनम विजोग
खिन माई कौड़े होय गये जितड़े माइआ भोग
कीता कछु न होवई-लिखिया-धुर संजोग
वड़भागी मेरा प्रभु मिलै- तां उतरहि सभ वियोग
नानक कौ पभु राख लेहो-मेरे साहिब बंदी मोच
कातिकि होवे साध संग विनसहि सभै सोच।

गुरवाणी की यह पंक्तियां राग मांझ के बारह माह से ली गई है जो गुरुग्रंथ के बारह माह से ली गई है के 135 अंग पर सुशोभित है। इन पंक्तियों द्वारा पांचवें नानक गुरु अर्जुन देव जी मानव मन को कातिक माह का उदाहरण देकर समझा रहे हैं कि हम जैसे भी कर्म करते हैं। उस किए गए कर्म के हिसाब से हमें प्रभु परमात्मा दंड या इनाम तजवीज करते हैं क्योंकि प्रभु परमात्मा के दरबार में धर्मराज की कचहरी में चित्रगुप्त द्वारा रखा जा रहा है तो फिर हम दोष किसे देवेंगे। हमने कर्म किया होगा उसी के हिसाब से हमें दंड या इनाम मिलने वाला है। दंड के रूप में फिर वापिस धरा पर कीड़े मकौड़े की योनि में जनम हो सकता है और इनाम के रूप में प्रभु के सांचे दरबार में स्थान प्राप्त हो सकता है जहां फिर सदा आनंद ही आनंद अनुभूति होती रहेगी। इसीलिए इंसान को चाहिए कि हमेशा प्रभु परमात्मा का सिमरन करते रहे।

परमेश्वर को विसारने पर हर प्रकार की व्याधि हमें आ घेरती है। जहां से हमने प्रभु परमात्मा की सिमरन बंदगी से मुंह मोड़ा वहीं से हमें तरह-तरह की व्याधियां आ घेरती हैं। हर प्रकार के सुख-सुविधा के साधन हमें क्षण मात्र में छोड़ देते हैं। इसका दोष हम किसे दें। दोष तो हमारे द्वारा किए गए कर्मों का है। जिसके कारण हमें तरह-तरह के कष्टों का सामना करना पड़ता है। उसका कोई उपचार भी नहीं है जो धुर से लिखा हुआ है, वहीं होना है। गीता द्वारा भी हमें यही बात समझाई गई है। जैसा कर्म करेगा वैसा फल देगा इसीलिए गुरवाणी द्वारा भी हमें समझाया गया है कि-

कदा दोष न देहू काहू दोष करमां आपनिया।
जो किया सो मैं पाया दोष न दीजै अवर जना।।

इसीलिए गुरवाणी द्वारा हमें समझाया गया है कि हमेशा नेक कर्म करना चाहिए। प्रभु भक्ति में मन रमाना चाहिए तभी हमें प्रभु परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है और प्रभु की कृपा दृष्टि प्राप्त हो जाए तो फिर हमें किसी भी प्रकार की फिकर चिन्ता नहीं रह जाएगी। इसीलिए हमें हर वक्त प्रभु परमात्मा से अरदास करते रहना चाहिए।

हे प्रभु, ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर।
सदा सदा तुध धियाईं।।

पर हमारे बड़े अच्छे भाग होंगे तभी हमें इस तरह की बुद्धि प्रभु कृपा से प्राप्त हो पाएगी। इसीलिए हर वक्त प्रभु परमात्मा से विनती करते रहना चाहिए कि अगर प्रभु परमात्मा हमारे द्वारा गए गए कर्मों का हिसाब करने लग जाएंगे तो फिर हमें कहीं जगह नहीं मिलेगी।

लेखे छोड़ि अलेखे छूटे हम निर्गुण लेहो उबारी।
नानक दास संत पाछे परियो राख लेहो ऐह बारी।।

प्रभु परमात्मा हमारे पर तरस करते हुए हमारे द्वारा किए कर्मों का लेखा-जोखा न करे और हमें अपनी शरण में लेकर अपने चरणों में स्थान दे देवें तभी हमारा मानव जीवन पाकर आना सार्थक हो पाएगा।

इंदर सिंह आहुजा

आपके पत्र

दुर्गम गांव में नेटवर्क भी मुश्किल

कभी कभी ऐसा लगता है कि एक भारत में दो देश बस रहा है। एक वह भारत जो शहरीकरण का रूप है। जहां आधुनिक टेक्नालॉजी से सुसज्जित सभी सुविधाएं मौजूद हैं। जहां जीने की सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं। जहां उन्नत सड़कें, अस्पताल, बच्चों के लिए स्कूल, आवागमन के सभी साधन, बिजली और पानी जैसी ज़रूरत की सभी चीज़ें उपलब्ध हैं। जहां नेटवर्क इतनी तेज़ सुविधा है कि एक क्लिक में आप अपनी मनपसंद की चीज़ें मंगवा सकते हैं। लेकिन इसी भारत का एक दूसरा रूप ग्रामीण क्षेत्र है। जो अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिए भी तरसता है। शहरों से सटे ग्रामीण क्षेत्रों में फिर भी विकास हुआ है, लेकिन दूर दराज़ के कई ऐसे गांव हैं जहां अन्य सुविधाओं की बात तो दूर, नेटवर्क जैसी सुविधा तक मयस्सर नहीं है। इन इलाकों के लोग जहां अपनों से बात करने के लिए तरस जाते हैं वहीं युवा और छात्र रोज़गार और शिक्षा में पिछड़ रहे हैं।

इस संबंध में 11वीं में पढ़ने वाली गांव की एक छात्रा योगिता कहती हैं कि मुझे अपनी पढ़ाई से संबंधित नवीनतम जानकारियों के लिए इंटरनेट का सहारा लेना पड़ता है। कई बार क्लासें ऑनलाइन भी हो जाती हैं। लेकिन नेटवर्क की कमी के कारण न तो मुझे कोई जानकारी उपलब्ध हो पाती है और न ही मैं अपने विषय में अपडेट रह पाती हूं। कई बार ऑनलाइन क्लास में शामिल होने के लिए मुझे घर से बहुत दूर पहाड़ों पर जाना पड़ता है। यदि गांव में नेटवर्क की पूरी सुविधा होती तो मुझे ऑनलाइन क्लास के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। वहीं गांव के एक युवा बताते हैं कि आजकल नौकरी के लिए विज्ञापन से लेकर आवेदन भरने तक सभी चीज़ें ऑनलाइन हो गई हैं। गांव में नेटवर्क की सुविधा नहीं होने के कारण कई बार हमें विज्ञापन के प्रकाशित होने की सूचना तब मिलती है जब उसकी अंतिम तिथि होती है या वह निकल चुकी होती है। युवा आवेदन भरने के लिए शहरों के साइबर कैफे जाते हैं लेकिन हम जैसे आर्थिक रूप से कमज़ोर आवेदकों के लिए बार बार पैसे खर्च करके शहर जाना बहुत मुश्किल होता है।

40 वर्षीय किशन कहते हैं कि मैं पेयजल विभाग में काम करता हूं। पानी से संबंधित लोगों की शिकायतों को दूर करना मेरी ज़िम्मेदारी है। लेकिन गांव में नेटवर्क की समस्या होने के कारण लोग मुझे कॉल नहीं कर पाते हैं। कई बार उनके संदेश मुझ तक पहुंच भी नहीं पाते हैं और उन्हें अकारण ही कई दिनों तक समस्याओं से जूझना पड़ता है। किशन कहते हैं कि दैनिक दिनचर्या में पानी कितना महत्वपूर्ण है, मैं भी समझता हूं, इसलिए सूचना मिलते ही मैं समस्या के निवारण के लिए निकल पड़ता हूं। लेकिन नेटवर्क की समस्या के कारण लोग मुझसे संपर्क नहीं कर पाते हैं तो इसमें मेरा क्या दोष है? वह कहते हैं कि यदि गांव में नेटवर्क की समस्या दूर हो जाए तो गांव वालों की आधी परेशानी ख़त्म हो जायेगी। बहरहाल, सवाल यह उठता है कि आखिर उनके गांव के साथ ऐसा व्यवहार क्यों? उन लोगों को नेटवर्क जैसी सुविधाओं से भी वंचित क्यों रखा जाता है? उनकी समस्याओं पर स्थानीय प्रशासन या जनप्रतिनिधि गंभीरता से ध्यान क्यों नहीं देते हैं?

निशा दानू, कपकोट, उत्तराखंड

मध्यप्रदेश : कांग्रेस के 144 प्रत्याशियों की पहली सूची

भोपाल, देशबन्धु। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी प्रत्याशियों की पहली सूची जारी कर दी गई। पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को छिंदवाड़ा से प्रत्याशी बनाया गया है। पार्टी की इस पहली सूची में 144 प्रत्याशियों के नाम शामिल हैं। अधिकतर मौजूदा विधायकों की सीटों को यथावत रखा गया है। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष डॉ.गोविंद सिंह को लहार से, पूर्व मंत्री जीतू पटवारी को राऊ, लाखन सिंह यादव को भितरवार, जयवर्धन सिंह को राघौगढ़ और कमलेश्वर पटेल को सिंहावल से प्रत्याशी बनाया गया है। बुधनी विधानसभा सीट से पार्टी ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के सामने पिछले दिनों कांग्रेस में शामिल हुए टीवी अभिनेता विक्रम मस्ताल को चुनावी मैदान में उतारा है। पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह राहुल चुरहट, पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष राजेंद्र सिंह अमरपाटन और डॉ.हिना कांवरे लांजी से प्रत्याशी बनाई गई हैं। पूर्व मंत्री बाला बच्चन राजपुर (अजा) से, लखन घनघोरिया जबलपुर पूर्व (अजजा), तरुण भनोत जबलपुर पश्चिम, ओंकार सिंह मरकाम डिंडोरी (अजा), सुखदेव पांसे मुलताई, प्रियव्रत सिंह खिलचीपुर, हुकुम सिंह कराड़ा शाजापुर, सज्जन सिंह वर्मा सोनकच्छ (अजा), डॉ. विजय लक्ष्मी सिंह साधौ महेश्वर (अजा), सचिन यादव कसारवद, उमंग सिंघार गंधवानी (अजजा) और सुरेंद्र सिंह बघेल कुक्षी (अजजा) से चुनावी मैदान में उतरेंगे। पार्टी ने भोपाल मध्य से मौजूदा विधायक आरिफ मसूद और नरेला से मनोज शुक्ला को प्रत्याशी बनाया है।

वहीं इंदौर-एक से संजय शुक्ला, इंदौर-दो से चिंतामणि चौकसे चिंटू और इंदौर-चार से राजा मंधवानी चुनाव लड़ेंगे। चंदेरी से गोपाल सिंह चौहान, मुंगावली से राव यादवेंद्र यादव, सुरखी से नीरज शर्मा, देवरी से हर्ष यादव, नरयवायली (अजा) से सुरेंद्र चौधरी, बंडा से तरवर सिंह लोधी, टीकमगढ़ से यादवेंद्र सिंह, जतारा (अजा) से किरण अहिरवार, पृथ्वीपुर से नितेंद्र सिंह राठौर और खरगापुर से चंदा सिंह गौर को उम्मीदवार घोषित किया गया है। महाराजपुर से नीरज दीक्षित, चंदला (अजा) से हरप्रसाद अनुरागी, राजनगर से विक्रम सिंह नातीराजा, छतरपुर से आलोक चतुर्वेदी, बिजावर से चरण सिंह यादव, मलहरा से साधवी राम सिया भारती, पथरिया से राव ब्रजेंद्र सिंह और जबेरा से प्रताप सिंह लोधी प्रत्याशी होंगे। हटा (अजा) से प्रदीप खटीक, पवई से मुकेश नायक, गुन्नौर (अजा) से जीवन लाल सिद्धार्थ, चित्रकूट से नीलांशु चतुर्वेदी, रैगांव (अजा) से कल्पना वर्मा, सतना से सिद्धार्थ कुशवाह, नागौद से डॉ.रश्मि सिंह पटेल, अमरपाटन से राजेंद्र कुमार सिंह, त्योंथर से रामशंकर सिंह पटेल, मऊगंज से सुखेंद्र सिंह बना, मनगवां (अजा) से बबिता साकेत, गुढ़ से कपिध्वज सिंह, चुरहट से अजय सिंह और सिहावल से कमलेश्वर पटेल उम्मीदवार घोषित हुए हैं। चितरंगी (अजजा) से मानिक सिंह, सिंगरौली से रेणु सिंह, जैतपुर (अजजा) से उमा धुर्वे, अनूपपुर (अजजा) से रमेश सिंह, पुष्पराजगढ़ (अजजा) से फुंदेलाल मार्को, बड़वारा (अजजा) से विजय राघवेंद्र सिंह, पाटन से नीलेश अवस्थी, बरगी से संजय यादव, जबलपुर पूर्व (अजा) से लखन घनघोरिया, जबलपुर उत्तर से विनय सक्सेना और जबलपुर पश्चिम से तरुण भनोत प्रत्याशी रहेंगे। सिहोरा (अजजा) से एकता ठाकुर, शाहपुरा (अजजा) भूपेंद्र मरावी, डिंडोरी (अजजा) से ओंकार सिंह मरकाम, बिछिया (अजजा) से नारायण सिंह पट्टा, बैहर (अजजा) से संजय उइके, लांजी से हिना कांवरे, परसवाड़ा से मधु भगत, बालाघाट से अनुभा मुंजारे, कटंगी से बोध सिंह भगत, बरघाट (अजजा) से अर्जुन सिंह काकोड़िया, सिवनी से आनंद पंजवानी, केवलारी से रजनीश सिंह, लखनादौन (अजजा) से योगेंद्र सिंह बाबा, गोटेगांव (अजा) से शेखर चौधरी, नरसिंहपुर से लखन सिंह पटेल, तेंदूखेड़ा से संजय शर्मा, छिंदवाड़ा से कमलनाथ, मुलताई से सुखदेव पांसे, बैतूल से निलय डागा और घोड़ाडोंगरी (अजजा) से राहुल उइके उम्मीदवार बनाए गए हैं। भैंसदेही (अजजा) से धरमू सिंह सिरसाम, टिमनरी (अजजा) से अभिजीत सिंह, हरदा से रामकिशोर डोगने, उदयपुरा से देवेंद्र पटेल गदरवास, सिलवानी से देवेंद्र पटेल, विदिशा से शशांक भार्गव, गंजबासौदा से निशंक जैन, शमशाबाद से सिंधू विक्रम सिंह, बैरसिया (अजा) से जयश्री हरिकिरण, नरेला से मनोज शुक्ला, भोपाल मध्य से आरिफ मसूद, बुधनी से विक्रम मस्ताल, आष्टा (अजा) से कमल चौहान, सीहोर से शशांक सक्सेना, राजगढ़ से बापू सिंह तंवर, खिलचीपुर से प्रियव्रत सिंह, सुसनेर से भेरू सिंह बापू और आगर (अजा) से विपिन बानखेड़े प्रत्याशी घोषित किए गए हैं। शाजापुर से हुकुम सिंह कराड़ा, कालापीपल से कुनाल चौधरी, सोनकच्छ (अजा) सज्जन सिंह वर्मा, हाटपिपल्या से राजवीर सिंह बघेल, मांधाता से उत्तम पाल सिंह, पंधाना (अजजा) से रूपाली बरे, भिकनगांव (अजजा) से झूमा सोलंकी, दतिया से अवधेश नायक, मुंगावली से राव यादवेंद्र सिंह, कटंगी से पूर्व बीजेपी सांसद बोध सिंह भगत और सुरखी से नीरज शर्मा। बड़वाह से नरेंद्र पटेल और महेश्वर (अजा) से डॉ.विजय लक्ष्मी साधौ, कसरावद से सचिन यादव और खरगोन से रवि जोशी प्रत्याशी हैं। भगवानपुरा (अजजा) से केदार डावर, राजपुर (अजजा) से बाला बच्चन, बड़वानी (अजजा) से राजन मंडलोई, अलीराजपुर (अजजा) से मुकेश पटेल, जोबट (अजजा) से सेना पटेल, झाबुआ (अजजा) से डॉ.विक्रांत भूरिया, थांदला (अजजा) से वीर सिंह भूरिया, पेटलावद (अजजा) वाल सिंह मेड़ा, सरदारपुर (अजजा) प्रताप ग्रेवाल, गंधवानी (अजजा) से उमंग सिंघार, कुक्षी (अजजा) सुरेंद्र सिंह बघेल, धरमपुरी (अजजा) पांचीलाल मेड़ा, देपालपुर (अजजा) से विशाल पटेल और इंदौर एक से संजय शुक्ला प्रत्याशी घोषित किए गए हैं। इसके अलावा इंदौर दो से चिंतामणि चौकसे चिंटू, इंदौर चार से राजा मंधवानी, राऊ से जीतू पटवारी, सांवेर (अजा) से रीना बौरासी, नागदा से दिलीप सिंह गुर्जर, महिदपुर दिनेश जैन बॉस, तराना (अजा) महेश परमार, घट्टिया (अजा) से रामलाल मालवीय, उज्जैन उत्तर से माया राजेश त्रिवेदी, सैलाना (अजजा) से हर्ष विजय गेहलोत, आलोट (अजा) मनोज चावला, मंदसौर से विपिन जैन, सुवासरा से राकेश पाटीदार और मनासा से नरेंद्र नाहटा को चुनावी रण में उतारने का फैसला लिया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा - तोमर जी को ऐसी जीत दिलाएं कि दुनिया देखती रह जाए

हर कार्यकर्ता नरेन्द्र सिंह तोमर बनकर मैदान में उतर जाएं

भोपाल, देशबन्धु। आज नवरात्र के पहले दिन हम चुनाव प्रचार का श्री गणेश कर रहे हैं। आप सब लोग 17 नवंबर को भारतीय जनता पार्टी को ऐसा समर्थन दें कि 3 दिसंबर को मतगणना के दिन पूरे क्षेत्र में कमल ही कमल खिले। यह बात मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं केंद्रीय मंत्री, भाजपा चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक व दिमनी विधानसभा क्षेत्र से पार्टी प्रत्याशी श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने रविवार को दिमनी में कार्यकर्ता सम्मेलन एवं जनसभा को संबोधित करते हुए कही। पार्टी नेताओं ने कार्यकर्ताओं और जनता से भारतीय जनता पार्टी को भारी मतों से जिताने की अपील की।

तोमर जी को जिताएं, वो इस क्षेत्र में विकास का इतिहास बना देंगे- मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कार्यकर्ताओं से कहा कि मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मैं इसे ग्वालियर-चंबल क्षेत्र का सौभाग्य मानता हूं कि श्री नरेंद्र सिंह तोमर जैसे बड़े नेता आज इस क्षेत्र से विधानसभा का चुनाव लड़ रहे हैं।

श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी के पास बड़ी जिम्मेदारी है, पूरा प्रदेश देखना है, वे हमारे चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक भी हैं। ऐसे में पूरे प्रदेश में दौरे करने हैं। मैं आप लोगों से अपील करता हूं कि आप सब श्री नरेंद्र सिंह तोमर बनकर चुनाव प्रचार में उतर जाएं और ऐसी जीत दिलाएं कि दुनिया देखती रह जाए। श्री तोमर आपका स्वाभिमान और सम्मान हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि श्री तोमर जी को आप यहां से विजयश्री दिलाएं, वे ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में विकास का नया इतिहास बना देंगे।

कांग्रेस कर रही लाड़ली बहना योजना को लेकर शिकायत

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि लाड़ली बहना योजना को लेकर कांग्रेस चुनाव आयोग से हमारी शिकायत कर रही है कि, यह आचार संहिता का उल्लंघन है, मामा चुपके से बहनों के खातो में पैसा डालेगा। लेकिन मैं चुपके से नहीं डंके की चोट पर लाड़ली बहनों के खातो में पैसा डालूंगा। एक करोड़ 32 लाख से अधिक लाड़ली बहनों को 1250 रूपए प्रतिमाह देने के साथ कन्याओं की शादी के लिए भी पैसे दे रहे हैं। अभी स्कूटी देना भी मामा ने शुरू किया है। एक लाख सरकारी पदों पर भर्तियां की जा रही हैं। उन्होंने सभा में उपस्थित जनता से कहा कि आप सब मुझे वचन दो कि प्रदेश में सबसे अधिक वोटों से नरेंद्र सिंह तोमर जी को जिताकर भेजेंगे।

श्योपुर-मुरैना क्षेत्र में विकास के सभी विकास कार्य भाजपा सरकार में हुए हैं : तोमर

केंद्रीय कृषि मंत्री व भाजपा चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक और दिमनी विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि 2003 से पहले श्योपुर और मुरैना क्षेत्र में बिजली कभी-कभार आती थी, सड़कें नहीं थीं। इस क्षेत्र में जितने भी विकास कार्य हुए हैं, सब भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने किए हैं। उन्होंने कहा कि पहले मैं यहां चुनाव प्रचार करने आता था, इस बार अलग भूमिका में आप लोगों के मध्य उपस्थित हुआ हूं। भाजपा सरकार ने श्योपुर-मुरैना क्षेत्र में सड़क, बिजली के साथ मेडिकल कॉलेज, हॉर्टिकल्चर कॉलेज के साथ क्षेत्र का चहुंमुखी विकास किया है। सौभाग्य योजना के अंतर्गत हर गरीब के घर में बिजली पहुंचाने का मामला हो या लाड़ली बहना योजना के तहत महिलाओं को 1250 रूपए प्रतिमाह देने का कार्य हो, भाजपा सरकार ने ही किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पीएम किसान सम्मान निधि में 6 हजार रूपए प्रति किसान और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भी हर किसान को 6 हजार रूपए प्रतिवर्ष देने का कार्य कर रहे हैं। श्री तोमर ने कहा कि पिछले दो चुनाव में आप लोगों ने मुझे प्रत्याशी के रूप में स्वीकार कर सांसद बनाया और इस क्षेत्र के विकास का मौका दिया। इस बार पार्टी ने मुझे फिर दिमनी विधानसभा की जनता की सेवा के लिए प्रत्याशी घोषित किया है। मैं आप लोगों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इस बार आप मुझे अपना प्रतिनिधि बनाओगे तो मैं आपकी आन, बान और शान को बढ़ाने का कार्य करूंगा। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रदेश का ऐसा विकास किया है कि दूसरे राज्य की सरकारों ने भी मध्यप्रदेश सरकार की योजनाओं की नकल करके अपने राज्यों की जनता का कल्याण कर रही हैं।

केंद्रीय मंत्री तोमर ने बौद्ध धर्मगुरूओं से लिया आशीर्वाद

केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने रविवार को दिमनी विधानसभा कार्यालय का शुभारंभ किया, जिसके पश्चात् बौद्ध बिहार पहुंचे और बौद्ध धर्मगुरुओं से आशीर्वाद लिया। श्री तोमर ने बौद्ध बिहार का अवलोकन किया और आसपास में रहने वाले लोगों से मुलाकात की है। इससे पहले श्री तोमर संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर अम्बाह के विधायक कमलेश जाटव भी मौजूद थे।

दिग्विजय का फर्जी इस्तीफा वायरल, कांग्रेस ने सायबर सेल में की शिकायत

भोपाल, देशबन्धु। वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह का फर्जी इस्तीफा वायरल होने के बाद कांग्रेस की ओर से इसकी शिकायत सायबर सेल में की गई है। इस मामले को लेकर प्रदेश कांग्रेस मीडिया विभाग के प्रमुख केके मिश्रा के नेतृत्व में कांग्रेस का एक प्रतिनिधिमंडल साइबर सेल थाना कोहेफिजा पहुंचा है। कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल ने हितेश वाजपेई के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करवाई है। शिकायती पत्र में उन्होंने आरोप लगाया कि राज्यसभा सांसद और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह की छवि को धूमिल करने के उद्देश्य से भाजपा प्रवक्ता डॉ. हितेश बाजपेयी ने अपने ट्यूटर हेण्डल से दिग्विजय सिंह का षड्यंत्रपूर्वक लेटरहेड बनाकर उनके फर्जी हस्ताक्षर कर कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को संबोधित करते हुए कांग्रेस पार्टी के सभी पदों से त्याग पत्र देने के संबंध में कूट रचित पत्र सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। भाजपा प्रवक्ता वाजपेई ने कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय नेता की पार्टी के प्रति वर्षों से निष्ठा को बदनाम करने का षड्यंत्र कर एक आपराधिक कृत्य किया है। कांग्रेस प्रतिनिधि मंडल का आरोप है कि प्रदेश में विधानसभा चुनाव में अपनी पराजय को देखते हुए भाजपा ओछी राजनीति पर उतर आई है, लेकिन भाजपा द्वारा इस की मानसिकता से उनके मंसूबे पूरे नहीं होंगे। कांग्रेस ने इस मामले में सूचना व प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 66 के अंतर्गत प्रकरण दर्ज कर तत्काल कार्यवाही करने की मांग की हैं।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री पी.सी. शर्मा, प्रदेश कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष के.के. मिश्रा, कांग्रेस पदाधिकारी जे.पी. धनोपिया, आनंद तारण, मृणाल पंत, योगेन्द्र सिंह परिहार, फरहाना खान, राहुल राठौर, रवि वर्मा, प्रवीण धौलपुर, प्रकाश चौकसे, निकेश चौहान, सै. मुजफ्फर अली, विवेक सोनी, विजेन्द्र शुक्ला, रमेश पांडे सहित अन्य कांग्रेसजन उपस्थित थे।

जीवन की आखिरी साँस तक कांग्रेस में रहूँगा

साथ ही दिग्विजय सिंह ने ट्वीट कर कांग्रेस में अपनी आस्था दोहराई है। उन्होंने लिखा है कि 'भाजपा झूठ बोलने में माहिर है। मैंने 1971 में कांग्रेस की सदस्यता ली थी। पद के लिए नहीं बल्कि विचारधारा से प्रभावित हो कर जुड़ा था और जीवन की आखिरी साँस तक कांग्रेस में रहूँगा। इस झूठ की मैं पुलिस में शिकायत दर्ज कर रहा हूँ।

कांग्रेस की पहली सूची आते ही बुलंद हुए विरोध के स्वर

टिकट न मिलने पर कांग्रेस के मीडिया उपाध्यक्ष यादव ने दिया इस्तीफा

भोपाल, देशबन्धु। कांग्रेस प्रत्याशियों की पहली सूची आने के साथ ही पार्टी के भीतर बगावती सुर सुनाई देने लगे हैं। टिकट न मिलने से नाराज नेताओं ने अपने समर्थकों के साथ इस्तीफा देना शुरू कर दिया है।

टीकमगढ़ की खरगापुर विधानसभा से टिकट के दावेदार और प्रदेश कांग्रेस मीडिया विभाग के उपाध्यक्ष अजय यादव ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ को भेज दिया है। इसके अलावा ग्वालियर की ग्रामीण, दतिया, डबरा और पवई सहित कुछ और सीटों पर दावेदार और उनके समर्थक खुलकर सामने आ आए हैं।

जानकारी के मुताबिक कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में ग्वालियर ग्रामीण विधानसभा से साहब सिंह गुर्जर के नाम की घोषणा से कांग्रेस ग्रामीण के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष कल्याण सिंह और उनके भाई केदार सिंह नाराज हो गए और उन्होंने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। नागोद में कांग्रेस नेता गजेंद्र सिंह सिप्पू और उचेहरा किसान कांग्रेस के ब्लाक अध्यक्ष आनंद बहादुर सिंह ने अपने पद से दिया इस्तीफा। यादवेंद्र सिंह को प्रत्याशी न बनाए जाने नाराज होकर उन्होंने यह कदम उठाया। कांग्रेस ने यहां से रश्मि पटेल को प्रत्याशी बनाया है। इधर बिजावर से चरण सिंह यादव को प्रत्याशी बनाए जाने से नाराज सेवादल के राजेश शर्मा ने भी नाराज होकर पार्टी से इस्तीफा दे दिया। साथ ही दतिया में अवधेश नायक के खिलाफ भी नारेबाज़ी देखने को मिली। जबकि नरियावली विधानसभा से सुरेन्द्र चौधरी को टिकट देने पर शारदा खटीक ने कांग्रेस छोड़ दी है।

लॉक कांग्रेस कार्यकारिणी का गठन

सारनी, देशबन्धु। सारनी ब्लॉक की कार्यकारिणी की घोषणा रविवार को ब्लॉक अध्यक्ष किशोर चौहान ने की। कार्यकारिणी की घोषणा मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के निर्देश,पूर्व कैबिनेट मंत्री सुखदेव पांसे कि सहमति और संगठन प्रभारी चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी की अनुशंसा पर की गई है। जिसमें अध्यक्ष किशोर चौहान एवं उपाध्यक्ष राजेश बातव,धनराज पवार,उमाशंकर सोनी, सोमालाल पाल,किशोर खेड़ाउ,रामआश्रय वर्मा, किशतराम,दिनेश डोईफोडे को नियुक्त किया गया हैजबकि ब्लॉक महामंत्री के पद पर पंकज मालवीय, डीडी देशमुख,गोविंद एरोलू,राशिद खान, शांतिलाल पाल,श्याम चौरे,मनोज वगद्रे को नियुक्ति किया गया। सारणी ब्लॉक सचिन के पद पर संदीप पंडोले, लक्ष्मी नारायण झारबडे, दीपक गोहिमा,हरीश पटेल,जयप्रकाश यादव, सनोज देशमुख,नईम खान,आसिफ खान,बंटी करोसिया को बनाया गया है। ब्लॉक सहसचिव के पद पर परसराम सराठे,रमेश मान्नासे,विजय कुशवाहा, श्याम यादव,राजेश लोखंडे,नितेश हाथिया, निलेश रायपुरे,मधुकर मालवीय,लक्ष्मीचंद पाटिल की नियुक्ति की गई है।जबकि ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के पद पर कांग्रेस के प्रवक्ता के रूप में वजीर अंसारी को नियुक्त किया गया है।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने स्ट्रांग रूम, मतदान केन्द्र और मतगणना स्थल का लिया जायजा

अधिकारियों से चर्चा में दिया मतदान प्रतिशत बढ़ाने पर जोर

भोपाल, देशबन्धु। चुनावी तैयारियों को परखने के लिए रविवार को मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ग्वालियर पहुंचे। यहां उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय (एमएलबी) पहुंचकर स्ट्रांग रूम, मतगणना केंद्र का अवलोकन किया। अधिकारियों से चर्चा करते हुए उन्होंने स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण मतदान की तैयारियों पर चर्चा की। इस दौरान श्री राजन ने मतदान दलों की रवानगी और मतदान समाप्ति के बाद मतदान दलों द्वारा सामग्री जमा करने संबंधी व्यवस्था के बारे में जानकारी ली। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने यहां अधिक से अधिक मतदान पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इसके लिए मतदाता जागरुकता अभियान चलाकर नए मतदाता और दिव्यांग मतदाता भी अपने मताधिकार का उपयोग के बारे में बताए। उन्होंने इस अभियान को निरंतर चलाएं की बात भी कही।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने मतदाताओं की सुविधा के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाताओं के लिए उपलब्ध कराई गई ऑनलाइन सुविधाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार की आवश्यता जताई। इस दौरान डीआईजी चंबल सुश्री कृष्णावेणी देशावतु, कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजेश चंदेल सहित अन्य अधिकारी

मतगणना स्थल का मुआयना कर दिए अधिकारियों को दिशा निर्देश

भोपाल, देशबन्धु। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने रविवार को दतिया पहुंचकर विधानसभा चुनाव की तैयारियों के बारे में जानकारी ली। साथ ही श्री राजन ने चुनावी कार्य में लगे कलेक्टर और जिला निर्वाचन अधिकारी संदीप कुमार माकिन तथा पुलिस अधीक्षक प्रदीप शर्मा को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने शासकीय पॉलीटेक्निक महाविद्यालय दतिया में सेवढ़ा, भांडेर और दतिया विधानसभा क्षेत्र के लिए बनाए गए स्ट्रॉग रूम का निरीक्षण किाय। उन्होंने मतगणना स्थल और सीलिंग कक्षों का निरीक्षण किया। मतगणना केन्द्र पर की जाने वाली मूलभूत सुविधाओं के साथ मतदान केन्द्रों पर मतगणना अभिकर्ता, मतगणनाकर्मियों आदि के प्रवेश एवं मतगणना कक्षों में बैठक व्यवस्था भी देखी।

बहुजन समाज पार्टी के खिसकते जनाधार पर चंद्रशेखर की नजर

बसपा को टक्कर देकर सियासी जमीन पाने में जुटी आजाद समाज पार्टी

राजस्थान व मध्यप्रदेश में अपने प्रत्याशी उतारकर इसकी शुरुआत की

लखनऊ, एजेंसी। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के खिसक रहे जनाधार को देखते हुए आजाद समाज पार्टी अपने को नए विकल्प के तौर पर पेश करने में जुटी है। इसी कारण पार्टी ने पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में दो राज्यों , राजस्थान और मध्यप्रदेश में अपने प्रत्याशी उतारकर इसकी शुरुआत कर दी है। राजनीतिक जानकार बताते हैं कि लोकसभा चुनाव 2024 के लिए सभी दल अपने-अपने हिसाब से जातीय समीकरण दुरुस्त करने में जुट गए हैं। सर्वाधिक 80 सीटों वाले यूपी में जातीय राजनीति आज भी काफी असरकारी है। इसे देखते हुए ही सियासी पार्टियों ने जातीय प्रभाव रखने वाले क्षेत्रीय दलों को अपने साथ रखा है। जहां तक बसपा का सवाल है, वो लोकसभा के चुनावी मैदान में अकेले उतरने का एलान कर चुकी है। 2012 में सत्ता से बेदखल होने के बाद चुनावी प्रदर्शन में बसपा का ग्राफ लगातार गिर रहा है। मायावती भी सियासी जमीन पर बहुत ज्यादा सक्रिय नजर नहीं आ रही हैं।

2022 चुनाव के बाद मायावती ने कोई रैली नहीं की

2022 के चुनाव के बाद उन्होंने कोई भी रैली नहीं की है। इतना ही नहीं बसपा प्रमुख ने प्रदेश के किसी भी जिले का दौरा भी नहीं किया है, जिससे पार्टी के कोर वोटबैंक दलित समुदाय के छिटकने की बातें सामने आई है। यही वजह है कि आजाद समाज पार्टी के मुखिया चंद्रशेखर आजाद न केवल कांशीराम की सियासी विरासत के सहारे दलितों के दिल में जगह बनाने, बल्कि बसपा के सिकुड़ने से खाली हो रही सियासी जमीन को अपने पाले में लाने में जुटे हैं। उनकी इस मेहनत के बाद दलित वोट, खासकर जाटव, किसके पक्ष में आते हैं, यह राजस्थान और मध्यप्रदेश के चुनाव परिणामों से स्पष्ट हो जाएगा। संविधान संरक्षण मंच के मुखिया और दलित विषयों के जानकर गौतम राणे सागर ने बताया कि बसपा की स्वीकार्यता का ग्राफ गिर रहा है। जिनके दम पर बसपा बनी थी, उन्होंने मनसा वाचा कर्मणा का मूल मंत्र दिया था।

परिणाम देखें तो बसपा के कर्मों में किस तरह से जंग लग गई है सभी जान रहे हैं।। घर में बैठकर परिवर्तन हो रहा है। काडर वोट बचा नहीं है। इमोशनल वोटर जो बचा है वो भी संवादहीनता के चलते छिटक रहा है। चंद्रशेखर विकल्प नहीं बन पाएंगे। उनके साथ विचारधारा की बहुत बड़ी कमी है। कैसे संगठन चलता है, कैसे विचार रखे जाते हैं, इसका अभाव दिखता है। भीड़ उनके पास बेरोजगार लड़कों की है, जिन्हें कहीं काम करने का अवसर नहीं मिलता है, वे भीम आर्मी में जुड़कर नीला पटका पहनकर भीड़ बढ़ा देते हैं। वोट में तब्दील होने वाला संदेश नहीं दे पाते हैं।

पोस्टर्स, पेंटिंग, मेंहदी एवं रंगोली प्रतियोगिता आयोजित कर मनाया मतदाता दिवस

बैतूल,देशबन्धु। बैतूल करेगा शत-प्रतिशत मतदान की भावना से जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर अमनबीर सिंह बैंस के निर्देशानुसार शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में मतदाता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य नगर पालिका अधिकारी ओपीएस भदौरिया ने बताया कि बेटियों के माध्यम से मतदान के महत्व और मतदाता के अधिकारों को विभिन्न माध्यमों से जन जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। अधिक से अधिक मतदान कर मतदान में बैतूल को नंबर वन बनाने के लिए एकीकृत शाला शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल गंज की छात्राओं के मध्य विभिन्न खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई।

कांग्रेस ने 5 में से 4 विधानसभा सीट पर घोषित किए उम्मीदवार

बैतूल से फिर निलय डागा को ही मिला टिकिट

बैतूल, देशबन्धु। शारदेय नवरात्र पर शुरू होते ही कांग्रेस ने जिले की पांच विधान सभाओं में से अपने चार उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। बैतूल विधानसभा से कांग्रेस ने एक बार फिर मौजूदा विधायक निलय विनोद डागा के नाम पर मुहर लगा दी है।पूरी तैयारी के साथ निलय डागा चुनावी रन में उतर चुके हैं। शनिवार रात जारी सूची में बैतूल विधायक निलय डागा के अलावा कांग्रेस ने मुलताई विधान सभा से सुखदेव पांसे, भैसदेही से धरमु सिंह सिरसाम और घोड़ाडोंगरी से नए चेहरे राहुल उइके को कांग्रेस ने चुनावी मैदान में उतारा है। इधर आमला सारणी विधान सभा मे कांग्रेस उम्मीदवार जहां होल्ड पर हैं तो वहीं बैतूल विधान सभा में भाजपा की उम्मीदवारी भी होल्ड पर है। लगभग प्रमुख राजनीतिक दल भाजपा और कांग्रेस दोनो ही दलों ने बैतूल जिले की तीन विधान सभाओं में चुनावी तस्वीर साफ कर दी है। अब बची बैतूल और आमला सारणी में भी जल्द निर्णय ले लिया जाएगा कि मुकाबला आखिर किन योद्धाओं के बीच होना है।

घोड़ाडोंगरी, भैसदेही, मुलताई में शुरू हुआ चुनावी घमासान: तीन विधान सभाओं में दोनों पार्टियों के उम्मीदवारों के नामों पर मुहर लगने केबाद इन विधान सभाओं में चुनावी घमासान शुरू हो चुका है। घोड़ाडोंगरी, भैसदेही और मुलताई में अब सीधा मुकाबला होगा मुलताई में सुखदेव और चंद्रशेखर देशमुख के बीच रस्साकशी चलती नजर आएगी तो वहीं घोड़ाडोंगरी में पूर्व विधायक स्व. सज्जन सिंह उइके की पत्नी गंगा उइके और कांग्रेस के युवा चेहरे राहुल उइके के बीच सीधा मुकाबला होगा। भैंसदेही में एक बार फिर कांग्रेस के धरमु सिंह का मुकाबला भाजपा के महेंद्र सिंह चौहान से होने जा रहा है।

आमला से कांग्रेस में 3 नामों पर चल रहा मंथन: जिले की चार विधान सभाओं में उम्मीदवारी लगभग तय हो चुकी है, अब सबकी नजरें आमला विधान सभा के कांग्रेस उम्मीदवार पर टिकी हुई हैं कि आखिर कांग्रेस किस पर भरोसा करती है। वैसे अपुष्ट सूत्रों की माने तो स्क्रीनिंग कमेटी दिल्ली में तीन नामों पर विचार किया जा रहा है। इसमें डिप्टी कलेक्टर निशा बांगरे, जिला पंचायत सदस्य हितेश निरापुरे और 2018 मे विधान सभा चुनाव लड़ चुके मनोज मालवे के नाम पर मन्थन किया जा रहा है। निशा की दावेदारी तो तगड़ी है लेकिन इस्तीफे के पेंच फंसने के चलते मामला अटका हुआ है। जिला महिला कांग्रेस अध्यक्ष मोनिका निरापुरे ने भी इस विधानसभा से अपनी दावेदारी कर रखी है, लेकिन अंतिम फैसला सिर्फ एक ही नाम पर किया जाना है जिसका आमला सारणी विधानसभा की जनता बेसब्री से इंतजार कर रही है।

कांग्रेस ने किए उम्मीदवारों के नाम घोषित

यादवेन्द्र को टीकमगढ़, चंदा सिंह को खरगापुर, किरण को जतारा और नितेन्द्र को बनाया प्रथ्वीपुर से उम्मीदवार

निवाड़ी विधानसभा के लिए मंथन जारी

टीकमगढ़, देशबन्धु। आगामी 17 नवम्बर को होने जा रहे मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव की सरगर्मियां तेज हो चली है। एक ओर प्रशासन निष्पक्ष मतदान कराने के लिए तैयारियां में जुटा हुआ है, तो वहीं दूसरी ओर राजनैतिक दल प्रदेश में सरकार बनाने के लिए अपने दमदार उम्मीदवारों के चयन में जुटी हुई है। टीकमगढ़ और निवाड़ी जिले की पांच विधानसभा सीटों के लिए उम्मीदवारों का चयन किया जा रहा है। जिसमें निवाड़ी छोडकर कांग्रेस ने सभी सीटों के लिए अपने उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं।

बताया गया है कि प्रथ्वीपुर विधानसभा क्षेत्र से पूर्व मंत्री बृजेन्द्र सिंह राठौर के पुत्र नितेन्द्र सिंह राठौर को एक बार फिर उम्मीदवार बनाया गया है। इसी प्रकार टीकमगढ़ जिले की तीनों विधानसभा सीटों के लिए कांग्रेस ने अपने उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। इनमें टीकमगढ़ से पूर्व आबकारी मंत्री यादवेन्द्र सिंह को एक बार फिर अपना उम्मीदवार घोषित किया है। हालांकि पूर्व मंत्री श्री सिंह का टिकट पूर्व से ही पक्का माना जा रहा था। वह चुनाव प्रचार में भी जुटे हुए थे। अब तक उन्होंने कई ग्रामों में अपना जनसंपर्क भी पूरा कर लिया है। श्री सिंह को कांग्रेस से उम्मीदवार बनाए जाने पर बधाईयों का सिलसिला जारी बना हुआ है।

इसी प्रकार खरगापुर विधानसभा से श्रीमती चंदा-सुरेन्द्र सिंह गौर को उम्मीवार बनाया गया है, वह पूर्व में भी खरगापुर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। गौर बंधुओं की स्थिति यहां मजबूत मानी जाती रही है। श्रीमति गौर की उम्मीदवारी से उनके समर्थकों में भारी उत्साह बना हुआ है। श्रीमती गौर को बधाईयां देने वालों का तांता लगा हुआ है। बताया गया है कि श्रीमती किरण अहिरवार को कांग्रेस

हाईकमान ने जतारा विधानसभा सीट से अपना उम्मीदवार बनाया है। जबकि यहां स्थानीय उम्मीदवार का मुद्दा छाया हुआ था। जतारा विस पर कांग्रेस के फैसले को जोखिम भरा माना जा रहा है। अब देखना है कि किरण अहिरवार कांग्रेस पार्टी के भरोसे को कहां तक पूरा कर पाती हैं। यहां से फिलहाल बीजेपी अपना उम्मीदवार अब तक घोषित नहीं कर सकी है। यह सीट बीजेपी के कब्जे में अब तक रही है। यहां से बीजेपी के प्रदेश महामंत्री हरिशंकर खटीक विधायक रहे हैं। कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवारों का चयन जनता की भावनाओं के अनुरूप माना जा रहा है। जिले की अधिकांश सीटों पर कांटे की टक्टर होने के आसार अभी से नजर आने लगे हैं। कांग्रेस पार्टी के टिकट घोषित होते ही कुछ लोगों का विरोध नजर आने लगा है।

कांग्रेस पार्टी से अपनी दावेदारी करते आ रहे अजय यादव को टिकट न मिलते ही उन्होंने अपना इस्तीफा दे दिया है। वह इसे पिछड़ा वर्ग का अपमान बताने लगे हैं। खरगापुर विस से मजबूत प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतारे जाने से कांग्रेस खेमें में उत्साह बना हुआ है,वहीं श्री यादव के इस्तीफे के बाद से कोई खास असर नजर नहीं आ रहा है। चुनाव के दौरान लोगों की नाराजगी और खुशी का नजर आना कोई बढ़ी बात नहीं है। इस संबन्ध में कांग्रेस के जिलाध्यक्ष नवीन साहू ने खुशी जाहिर करते हुए कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित अन्य पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया है।

उन्होंने कहा कि उम्मीदवारों के चयन में पूरी सावधानी बरती गई है। जीतने वाले उम्मीदवारों को ही टिकट दिया गया है। श्री साहू ने दावा किया है कि कांग्रेस सभी सीटों पर चुनाव जीतेगी और मध्यप्रदेश में फिर सरकार बनाएगी। वहीं उन्होंने जतारा में बाहरी उम्मीदवार के मुद्दे पर स्पष्ट करते हुए कहा कि श्रीमती किरण अहिरवार बाहरी उम्मीदवार नहीं है,वह जतारा विधानसभा क्षेत्र से जुड़े ग्राम मडिया की हैं। उनके प्रत्याशी बनाए जाने से बाहरी प्रत्याशी के मुद्दे का कोई असर होने वाला नहीं है। वहीं उन्होंने कहा कि वह यहां से पूर्व में लोकसभा चुनाव लड़ चुकी हैं, इसलिए भी वह किसी परिचय की मुंहताज नहीं हैं। श्री साहू ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने बेहतर उम्मीदवारों का चयन करने के साथ ही लोगों की भावनाओं का भी सम्मान किया है। उन्होंने कांग्रेस के उम्मीदवार बनाए गए पूर्व मंत्री यादवेन्द्र सिंह टीकमगढ़, श्रीमती चंदा-सुरेन्द्र सिंह गौर खरगापुर, श्रीमती किरण अहिरवार जतारा,नितेन्द्र सिंह प्रथ्वीपुर को भी बधाईयां दी हैं।

कांग्रेस प्रत्याशियों की सूची आते ही बौखला, नेता विरोध शुरू

मीडिया विभाग के प्रदेश उपाध्यक्ष ने दिया इस्तीफा, पिछड़ा वर्ग की उपेक्षा के लगाए आरोप

टीकमगढ़, देशबन्धु। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशियों की सूची जारी होते ही विरोध के स्वर उठाना शुरू हो गए हैं। जिले के खरगापुर विधानसभा से दावेदारी जाता रहे अजय सिंह यादव ने टिकट नहीं मिलने पर पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने कांग्रेस पार्टी पर पिछड़ा वर्ग की अपेक्षा के आरोप लगाए हैं। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रदेश उपाध्यक्ष और पीसीसी डेलीगेट अजय सिंह यादव ने पूर्व सीएम कमलनाथ को पत्र भेजा है। पत्र के माध्यम से उन्होंने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए सभी पदों से इस्तीफा देने की घोषणा की है। साथ ही सोशल मीडिया पर अपना बयान भी जारी किया है। जिसमें उन्होंने कहा है कि पूर्व सीएम कमलनाथ ने विश्वास दिलाया था कि इस बार उम्मीदवार चयन में पिछड़े वर्गों को उनका हक और अधिकार दिया जाएगा। जिले में पिछड़े वर्ग के 70 प्रतिशत से ज्यादा मतदाता है, लेकिन आज जिले के तीनों सामान्य सीटों पर एक ही वर्ग के व्यक्तियों को उम्मीदवार बनाया गया है। जिनकी केवल दो प्रतिशत से भी कम संख्या है।

तीनों प्रत्याशी पिछला चुनाव भी हारे हुए हैं। यह पूरी तरह अन्यायपूर्ण निर्णय है। मैं इस अन्याय का साथ नहीं दे सकता। उन्होंने पत्र में कहा है कि मेरे दादाजी स्वर्गीय ठाकुरदास यादव पूर्व विधायक ने अपना पूरा जीवन कांग्रेस पार्टी के लिए समर्पित किया। आज जिस तरह का अन्याय किया गया है, उससे बहुत दुखी मन से में मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी मीडिया विभाग के उपाध्यक्ष और जिले की खरगापुर विधानसभा के पलेरा ब्लॉक से पीसीसी डेलीगेट के पद से इस्तीफा देता हूं।

भाजपा नेताओं की मानी जाती हैं करीबी

वर्षो से पदस्थ पलेरा तहसीलदार आखिर कैसे करवाएंगी निष्पक्ष चुनाव

पलेरा। पलेरा तहसीलदार डॉक्टर अवंतिका तिवारी से वर्ष 2021 से पलेरा तहसील में पदस्थ है और यह पंचायत चुनाव सहित नगरीय चुनाव भी करवा चुकी हैं वहीं पलेरा तहसीलदार से आगामी विधानसभा चुनाव निष्पक्ष रूप से करवाने की उम्मीद लगाना संभव नहीं है क्योंकि यह है भाजपा नेताओं की करीबी मानी जाती हैं जिससे चुनाव प्रभावित हो सकते हैं दो वर्षों के लंबे समय से यह पलेरा तहसील कार्यालय में पदस्थ है जिससे उनकी पकड़ ग्रामीण क्षेत्र में पूरी तरह है और यह भाजपा नेताओं की खास मानी जाती है इसलिए यह वोटरों पर दबाव बना सकती हैं और चुनाव प्रभावित कर सकते हैं जिससे चुनाव आयोग को यह मामला संज्ञान में लेना होगा ताकि मध्य प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव निष्पक्ष रूप से हो सके कांग्रेस नेताओं का कहना है कि खरगापुर विधानसभा में कई ऐसे अधिकारी कर्मचारी सालों से एक ही जगह पर पदस्थ हैं क्योंकि वह भाजपा नेताओं के खास हैं और चुनाव में भी हुआ है भाजपा नेताओं की कठपुतली बनकर कार्य करेंगे जिससे चुनाव प्रभावित होगा कांग्रेस नेताओं ने चुनाव आयोग से मांग की है कि विधानसभा चुनाव पूर्ण रूप से निष्पक्ष हो जिसे जनता चुने वही जीत कर आए प्रशासन की ओर से किसी भी मतदाता पर दबाव न बनाया जाए जिसको लेकर उन्होंने कहा है कि जो बर्षो से कर्मचारी पदस्थ हैं उन्हें हटाया जाए।

मन्नू तलैया मामले में भी पलेरा तहसीलदार को दिया गया था नोटिस-पलेरा नगर में एक बहुचर्चित मामला सामने आया था जिसमें पलेरा तहसीलदार की कार्यशैली पर सवाल खड़े हुए थे लेकिन विभाग के द्वारा अपनी ही कर्मचारियों का बचाव करते हुए पूरे मामले की लीपा पोती की गई है मन्नू तलैया मामले में जिस व्यक्ति के द्वारा वृक्ष काटे गए थे उसे पर अभी तक कोई कार्यवाही पलेरा तहसीलदार के द्वारा लिखित में नहीं कराई गई है साथ ही बधान तोड़ने वाले व्यक्तियों पर भी कोई कार्रवाई नहीं की गई वही तत्कालीन कलेक्टर सुभाष कुमार द्विवेदी के द्वारा उक्त मामले को लेकर पलेरा तहसीलदार को एक नोटिस भी जारी किया गया था ना ही उक्त नोटिस के संबंध में आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है मन्नू तलैया के तार कहीं ना कहीं भाजपा नेताओं से जुड़े हुए थे जिस कारण से पूरे मामले को घुमा फिरा कर दबाया गया है और भाजपा नेताओं को बचाया गया है।

नगरीय चुनाव में लापरवाही के कारण हुई थी विवाद की स्थिति-मध्य प्रदेश में नगरीय चुनाव के दौरान पलेरा नगर परिषद के चुनाव में एक विवाद की स्थिति उत्पन्न हुई थी जिसमें अधिकारी व कर्मचारियों की लापरवाही भी सामने आई थी लेकिन भाजपा नेताओं का संरक्षण होने के कारण किसी भी अधिकारी पर कोई कार्यवाही नहीं की गई थी उसे समय तत्कालीन तहसीलदार डॉक्टर अवंतिका तिवारी थी जिनके द्वारा निर्वाचन के कार्य को शांतिपूर्ण तरीके से कराया जाए ऐसी कोई ठोस व्यवस्थाएं नहीं की गई थी जिस कारण से कांग्रेस व भाजपा के गुट आमने-सामने आ गए थे नौबत यहां तक आई थी कि दोनों पक्षों में हातापाई भी हुई थी वहीं पुलिस ने मोर्चा संभालते हुए मामले को शांत करवाया था लेकिन पलेरा तहसीलदार की लापरवाही के कारण कहीं विधानसभा चुनाव में भी कोई अप्रिय घटना ना घटे जिस कारण उन्हें क्षेत्र से हटाने की मांग आम लोगों सहित समस्त विपक्षी दलों के द्वारा की जा रही है ताकि आगामी विधानसभा चुनाव निष्पक्ष व शांतिपूर्ण तरीके से हो सके।

दिगौड़ा पुलिस ने बीरऊ व बर्माडांग से अवैध कच्ची शराब को जप्त कर आरोपियों के खिलाफमामला दर्ज किया

दिगौड़ा, देशबन्धु। दिगौड़ा पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर कार्यवाही करते हुए ग्राम बीरऊ व बर्माडांग से अवैध देशी शराब को जप्त कर आरोपियों के खिलाफ धारा 34 आबकारी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। थाना प्रभारी अनुमेहा गुप्ता ने बताया कि क्षेत्र भ्रमण व गश्त के दौरान मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम ने शनिवार की रात में कार्यवाही करते हुए ग्राम बीरऊ व बर्माडांग के दो लोगों के कब्जे से अवैध कच्ची शराब को जप्त किया है। पुलिस टीम ने मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए ग्राम बर्माडांग में आरोपी अमर सिंह घोष निवासी बर्माडांग के कब्जे से 5 लीटर देशी कच्ची महुआ से बनी हुई अवैध शराब को जप्त किया। इसके अलावा ग्राम बीरऊ में पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए आरोपी बाबू लाल कुशवाहा निवासी बीरऊ के कब्जे से 5 लीटर महुआ से बनी हुई अवैध कच्ची शराब को जप्त किया। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी अनुमेहा गुप्ता, एएसआई कल्याण सिंह, प्रधान आरक्षक विजय सिंह, मुकेश राय, एनआरएस हरदयाल यादव की अहम भूमिका रही।

खेत में बिजली की डोरी डालने पर पीड़ित व्यक्ति से दो लोगों ने किया विवाद

दिगौड़ा, देशबन्धु। दिगौड़ा थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम टुडयन खिरक खरोई में बिजली की डोरी डालने पर फरियादी का दो लोगों से विवाद हो गया। फरियादी कृष्ण प्रताप उर्फ पप्पू यादव पिता श्याम लाल यादव उम्र 50 साल निवासी टुडयन खिरक खरोई ने पुलिस थाने में आकर रिपोर्ट की गईए जिसके अनुसार 14 अक्टूबर की दोपहर करीब 12 बजे बल्लू यादव और सुरेश यादव उर्फदरोगा फरियादी के खेत पूनोल हार में डीपी से लाइट की डोरी नहीं डालने दे रहे, जबकि फरियादी का डीपी से शामिल कनेक्शन है। फरियादी ने उनसे बिजली की डोरी डालने के लिए बोला तो वह गाली गलौज व विवाद करने लगे। विवाद बढ़ता देख फ रियादी ने पुलिस थाने में रिपोर्ट की गई। पुलिस ने जांच शुरू कर दी।

त्योहार को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित

टीकमगढ़, देशबन्धु। आगामी शारदीय नवरात्रि एवं दशहरा त्योहार को देखते हुए खरगापुर थाना प्रांगण में आगामी त्योहारों को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। जिसमें नगर के सभी गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। प्रभारी तहसीलदार ओमप्रकाश गुप्ता,अरविंद तिवारी, थाना प्रभारी मुकेश शाक्य सहित तमाम स्टाफ की उपस्थिति मैं थांना प्रांगण में शनिवार की शाम शांति समिति की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के समस्त गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। थाना प्रभारी मुकेश शाक्य ने कहा कि आगामी त्योहार नवरात्रि एवं दशहरा त्योहार सौहार्द सद्भाव शांति पूर्वक आपसी भाईचारे के साथ मनाएं। विधानसभा चुनाव की आचार संहिता लगने से आगामी त्योहार में आचार संहिता के नियमों का पालन किया जाए।

मां दुर्गा की मूर्ति स्थापना को लेकर पंडालों में लाउडस्पीकर की अनुविभागीय अधिकारी राजस्व बल्देवगढ़ से सभी की परमिशन ली जाए। इसके साथ ही अन्य नियमों की बात कही गई है। इस दौरान राजेंद्र कुमार जैन, अय्यूब मस्ताना, समाजसेवी देवकीनंदन अग्रवाल, खुमानदास कांची कोरी, राम किशोर विश्वकर्मा, युवा समाजसेवी हीरालाल सेन,शेख कल्लन,साबिर खान रहे है।

17 नवम्बर को अवश्य करे मतदान

स्काउड-गाइड के छात्र-छात्राओं ने निकाली मतदाता जागरूकता रैली

टीकमगढ़, देशबन्धु। जिले में आगामी निर्वाचन में शत-प्रतिशत मतदान हेतु एवं लोगों को मतदान का महत्व बताने के उद्देश्य से कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अवधेश शर्मा के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में मतदान की गतिविधियां आयोजित की जा रही है। इसी तारतम्य में आज स्काउड/गाइड मध्यप्रदेश की जिला संघ टीकमगढ़ के छात्र-छात्राओं द्वारा मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई। मतदाता जागरूकता रैली के दौरान स्कूली छात्र-छात्राओं ने लोकतंत्र में हर वोट कीमती है, आगामी 17 नवम्बर को होने जा रहे चुनाव में मतदान अवष्य करें सारे काम छोड़ दो, सबसे पहले वोट दो, मतदान करने को रहें तैयार, यह हम सबका अधिकार के नारे भी लगाए। साथ ही मतदाताओं को बताया गया कि ,जो भी व्यक्ति मतदान करता है उसे खुद ही निर्णय लेना चाहिए किसी के बहकावे में नहीं आना चाहिए, हमारा भारत देश एक लोकंत्रात्मक देश है, जहां हर व्यस्क नागरिक को अपने वोट का इस्तेमाल करने का अधिकार प्राप्त है।

देवी मंदिरों में नवरात्र पर्व की धूम- शुभ मुहूर्त में घटस्थापना, आस्था की ज्योत से जगमग मां का दरबार

पलेरा, देशबन्धु। देवी आराधना का महापर्व शारदीय नवरात्र रविवार 15 अक्टूबर से शुरू हो गया है। इसे लेकर देवी मंदिरों में तैयारी पूरी हो चुकी है। सुबह शुभ मुहूर्त में घटस्थापना के साथ ज्योति कलश प्रज्वलित किए गए। आस्था की दीप जलते ही मां का दरबार जगमग हो गया। नगर के पंडित नितेंद्र मिश्रा बताते हैं कि हिंदू धर्म में नवदुर्गा के त्यौहार को दुर्गा के नौ रूपों की अभिव्यक्ति माना जाता है। देवी दुर्गा के नौ रूप शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धात्री हैं। नवरात्रि में प्रत्येक दिन देवी दुर्गा के एक रूप की पूजा की जाती है। हिंदू धर्म के अधिकांश त्योहारों का संबंध पौराणिक कथाओं और संबंधित त्योहारों की धार्मिक कथाओं की शानदार घटनाओं से है। नवरात्रि का अर्थ है नौ रातें, संस्कृत में नव का अर्थ नौ और रात्रि का अर्थ है रात। यह एक ऐसा त्योहार है जहां हम देवी दुर्गा को नौ अलग-अलग रूपों में मनाते हैं और उनकी पूजा करते हैं। यह ब्रह्मांड की शक्ति के रूप में महिलाओं की पूजा करने का त्योहार है। यह पर्व देवी दुर्गा की राक्षस महिषासुर के ऊपर विजय के रूप में मनाया जाता है और यह अंधकार पर प्रकाश, बुराई पर अच्छाई की प्रतीक है। शरद ऋतु के मौसम के आगमन से इस त्योहार की शुरुआत होती है। इसे शरद नवरात्रि या महानवरात्रि कहा जाता है। वसंत ऋतु के दौरान चैत्र नवरात्रि होती है। शरद नवरात्रि की शुरुआत शरद ऋतु की पहली अमावस्या को होती है और दसवें दिन दशहरे के उत्सव के साथ समाप्त होती है।

आचार संहिता के उल्लंघन पर जतारा अनुभाग अंतर्गत 8 एफआईआर की गईं

टीकमगढ़, देशबन्धु। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मध्यप्रदेश में राज्य विधानसभा के सामान्य निर्वाचन की घोषणा किये जाने के फ लस्वरूप जिले में निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण हेतु गठित दल यथा-स्थैतिक निगरानी, दल, उड़न दस्ता, वीडियो अवलोकन दल आदि प्रभावी भूमिका में आ गये है।

इसीक्रम में आज आचार संहिता के उल्लघन पर जतारा अनुभाग अंतर्गत कुल 8 एफ आईआर की गईं जिसमें से एफ एसटी टीम द्वारा जतारा विधान सभा में 4 (दो जतारा थाना, एक बम्होरी कलां, एक लिधौरा थाना), संपात्ति विरूपण अधिनियम के अंतर्गत शाश्कीये संपात्ति को विरूपित करने के कारण की गईं। पृथ्वीपुर विधान सभा अंतर्गत मोहनगढ़ तहसील में आवश्यक वस्तु अधिनियम के अंतर्गत डीजल का अवैध परिवहन करने के कारण एक एफ एसटी की गई इसके साथ ही एक्साईज (मगपबेम) एक्ट के अंर्तगत पुलिस द्वारा एक एफ आईआर की गई। घुंघटा घाट (यूपी बॉर्डर) पर एसएसटी टीम द्वारा 1.50 लाख रुपये जब्त किए गए। इसके अतिरिक्त जतारा अनुभाग के पलेरा तहसील में 2 एफआईआर आईपीसी की धारा 188 में की गई।

बिना प्रिंट लाईन के प्रकाशित नहीं हो सकेगी कोई भी सामग्री

टीकमगढ़, देशबन्धु। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान कोई भी ऐसी सामग्री का प्रकाशन या प्रसारण नहीं किया जा सकेगा, जिसमें उसके मुद्रक व प्रकाशक का नाम, पता अंकित न हों तथा कोई भी मुद्रक बिना पहचान पत्र प्राप्त किए किसी भी व्यक्ति द्वारा प्रदत्त सामग्री का मुद्रण नहीं कर सकेगा। जिसका उपयोग विधानसभा चुनाव के दौरान प्रचार साहित्य के रूप में किया जाना हो। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अवधेश शर्मा ने कहा कि जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा 127(क) के अंतर्गत कोई भी व्यक्ति ऐसी निर्वाचन पुस्तिका जिसके मुख्य पृष्ठ पर उसके मुद्रक और प्रकाशक का नाम और पता न हो मुद्रित और प्रकाशित नहीं करेगा और न ही मुद्रित और प्रकाशित कराएगा। इसके लिए प्रकाशन कराने आए व्यक्ति का पहचान पत्र व दो अन्य व्यक्तियों की गवाही के आधार पर ही सामग्री का मुद्रण कर सकता है। प्रेस मालिक मुद्रित कराने आई सामग्री का अपने स्तर पर भी अध्ययन करें कि उस सामग्री में कोई भी ऐसी बात सम्मलित न की गई हो जो संविधान की मूल अवधारण के विरूद्ध हो और समाज में धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र के आधार पर द्वेष फैलाने वाली हो। श्री शर्मा ने बताया कि सभी मुद्रक प्रकाशित सामग्री की एक प्रति अनिवार्य रूप से जिला निर्वाचन अधिकारी को उपलब्ध करायेंगे तथा मुद्रित सामग्री की संख्या व प्रकाशित कराने वाले प्राप्त राशि के बारे में भी बतायेंगे। सभी लेन-देन चेक के माध्यम से ही किये जायें, जिसकी जानकारी भी निर्वाचन कार्यालय को उपलब्ध कराई जाये। एक्ट के प्रावधानों का उल्लघंन करने की स्थिति में संबंधित मुद्रक के खिलाफदो हजार रूपये का जुर्माना 6 माह का कारावास या दोनों का प्रावधान किया गया है। उन्होंने सभी मुद्रकों से एक्ट के प्रावधानों का पूर्णता: पालन करने की अपेक्षा की।

50 लाख से अधिक का मिला हिसाब किताब

क्रिकेट मैच में सट्टा खिलाने वाला आनन्द जडिया गिरफ्तार

पन्ना, देशबन्धु। नगर में वर्षो से बडे स्तर पर सट्टा का कारोबार चलाने वाले बड़ा बाजार निवासी आनन्द जडिया पिता राजेन्द्र जडिया को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इस दौरान आनन्द का मोबाईल जप्त किया गया है। जिसमे 50 लाख से अधिक का हिसाब किताब बरामद किया गया है, साथ ही सट्टा का हिसाब लिखने वाला रजिस्टर भी जप्त किया गया है। पूर्व में तत्कालीन पुलिस अधीक्षक तथा नगर निरीक्षक के संरक्षण में लगातार उसका कारोबार चलता रहा। लेकिन जैसे ही पुलिस महकमा में बदलाव हुआ अवैध कारोबार करने वालो पर पुलिस ने शिंकजा कसना शुरू कर दिया है। पुलिस अधीक्षक एस साई कृष्ण थोटा के सख्त रूख एवं कार्यवाही तथा नगर एसडीओपी एसपी सिंह बघेल के निर्देशन में नगर निरीक्षक रोहित मिश्रा द्वारा लगातार जुआ, सट्टा, अवैध शराब पर कार्यवाही की जा रही है। इसी का परिणाम है कि बडे सटोरिया पर पुलिस ने कार्यवाही की है। अभी कुछ और बडे सट्टा खिलाने वाले पुलिस की नजर में है जिन्हे जल्द ही पुलिस गिरफ्तार करेगी।

किक्रेट सट्टे पर पुलिस ने की कार्रवाई

दमोह देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक दमोह के निर्देशन में एवं अति0 पुलिस अधीक्षक दमोह के मार्गदर्शन में जिले में अवैध किक्रेट सट्टा पर अंकुश लगाने हेतु निर्देशित किया गया है रक्षित निरीक्षक हेमंत बरहैया के नेतृत्व में, थाना प्रभारी कोतवाली एवं सायबर सेल टीम दमोह के द्वारा मुखबिर की सूचना पर वर्ल्डकप क्रिकेट मैंच का सट्टा खिलाने की सूचना 12/10/2023 को आरोपी चिन्टू उर्फ रोहित खरे एवं भोला उर्फदिब्बेश जैन जो की आस्ट्रेलिया एवं साऊथ आफ्रीका के बीच चल रहे क्रिकेट मैच पर सट्टा खेलते हुये पाये गये जिनके कब्जे से 1650 रूपये नगद, 02 मोबाईल एवं लाखो का हिसाब-किताव पाया गया जिस पर थाना कोतवाली में अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। दिनांक 14/10/2023 को वल्डकप क्रिकेट मैच भारत - पाकिस्तान के बीच चल रहे मैंच का सट्टा खिलाने की मिली मुखबिर की सूचना पर आरोपी मोहित सोनी के कब्जे से 600 रूपये नगद एवं 01 मोबाईल जब्त किया गया । आरोपी मोहित सोनी द्वारा बताया गया कि उक्त वर्ल्डकप क्रिकेट सट्टा मैंच की आई0डी0 प्रिंस बिदौलिया द्वारा देना बताया गया जिस पर थाना कोतवाली पर अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया ।सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारी / कर्मचारियों थाना प्रभारी कोतवाली विजय सिंह राजपूत, रक्षित निरीक्षक हेमंत बरहैया, प्र0आर0 राकेश अठ्या, सौरभ टंडन, अजित दुवे, सायवर सेल दमोह एवं प्र0आर0 महेश यादव, देवेन्द्र रैकवार थाना कोतवाली से प्र0आर0 अनिल गौतम, डेलन पटेल, पंकज अहिरवार, राजेश ठाकुर, आर0 रामकुमार, नरेन्द्र पटेरिया, कृष्णकुमार, देशराज, आकाश पाठक ।

कोतवाली पुलिस की बड़ी कार्रवाई, इनामी फरार आरोपी को किया गिरफ्तार

दमोह देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक दमोह सुनील तिवारी द्वारा फरार आरोपियों की धरपकड़ हेतु निर्देशित किया गया था जो अति0 पुलिस अधीक्षक संदीप मिश्रा दमोह, नगर पुलिस अधीक्षक दमोह अभिषेक तिवारी के मार्गदर्शन मे थाना प्रभारी कोतवाली विजय राजपूत के नेतृत्व में टीम गठित कर कोतवाली पुलिस द्वारा थाना कोतवाली के अपराध क्र. 131/23 धारा 307, 294, 506, ता. हि. 3 (1) द, ध, 3(2)5 क एससीएसटी एक्ट में घटना दिनाँक से फरार आरोपी मोहन ठाकुर पिता राम प्रसाद ठाकुर निवासी इंद्रा कालोनी दमोह को गिरफ्तार कर न्यायालय पेश किया गया। सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारी/कर्मचारियों विजय राजपूत, सउनि रमाशंकर, प्रधान आरक्षक राजकुमार बिदैल्या संजय पाठक, सूर्यकांत पाण्डेय, कामता, आलोक भारतद्वाज . आरक्षक देबेन्द्र ठाकुर, नवीन बेन।

पवई से मुकेश नायक और गुनौर से जीवनलाल को कांग्रेस ने बनाया प्रत्याशी

पन्ना, देशबन्धु। कांग्रेस पार्टी की बहु प्रतिक्षित सूची आखिर पार्टी द्वारा जारी कर दी गई है, जिसमें मप्र विधानसभा के 144 प्रत्याशियो को उम्मीदवार बनाया है। जिसमे पन्ना जिले की पवई विधानसभा क्षेत्र से पूर्व मंत्री मुकेश नायक को कांग्रेस पार्टी ने प्रत्याशी घोषित किया है। भारी विरोध होने के बावजूद पार्टी के शीर्ष नेत्रत्व ने उन पर विश्वास जताया है। ज्ञात हो कि मुकेश नायक कांग्रेस पार्टी के कद्दावर नेता है, पूर्व मे दो बार पवई से विधायक रह चुके है तथा 1993 मे दिग्विजय सिंह सरकार में खेल युवा कल्याण, उच्च शिक्षा मंत्री रहे है तथा 2013 मे वह फिर से पवई विधानसभा से विधायक चुने गये थे। श्री

नायक राष्ट्रीय प्रवक्ता सहित पार्टी के अन्य जिम्मेवार पदो पर भी रहे है उनका राजनैतिक जीवन इस प्रकार है, 1978 में महाविद्यालय के अध्यक्ष पद से राजनीति की शुरूआत की 1982 में भारतीय राष्ट्रीय संगठन के अध्यक्ष रहे 1985 में दमोह विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुने गये। 1991 में युवक कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रहें, अध्यक्ष मप्र रेडक्रास सोसाईटी सहित अन्य पदो पर रहे है। नायक को टिकिट मिलने से क्षेत्र में पार्टी के कार्यकर्ताओ में उत्साह का माहोल देखा जा रहा है। कांग्रेस पार्टी ने गुनौर विधानसभा क्षेत्र से जीवन लाल सिद्धार्थ को पार्टी का अधिकृत प्रत्याशी घोषित किया है। ज्ञात हो कि जीवन लाल पूर्व में बहुजन समाजवादी पार्टी में रहते हुए तीन बार विधानसभा का चुनाव लड चुके है तथा उन्होंने भाजपा तथा कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी को अच्छी टक्कर दी है, लेकिन वह लगभग आठ वर्ष पूर्व बहुजन समाजवादी पार्टी छोडकर कांग्रेस में शामिल हुए थे तथा वह लगातार पार्टी के लिए कार्य करते रहें। इसलिए पार्टी ने जीवन लाल को गुनौर विधानसभा से अधिकृत प्रत्याशी घोषित किया है। जबकी भारतीय जनता पार्टी ने पूर्व विधायक राजेश वर्मा को टिकिट दी है। राजेश वर्मा तथा जीवन लाल सिद्धार्थ के बीच मे मुकाबला होगा। वर्ष 2018 में गुनौर विधानसभा क्षेत्र से शिव दयाल बागरी विधायक चुने गयें थें। जिन्होने भाजपा प्रत्याशी राजेश वर्मा को लगभग 2 हजार मतो से चुनाव हराया था। वही राजेश वर्मा फिर से भाजपा की ओर से चुनाव लड रहें है।

अधिकारीयों ने चोपरा खुर्द और चोपरा रैयतवाड़ी के मतदान केंद्रों पर किया भ्रमण

दमोह देशबन्धु। विधानसभा निर्वाचन-2023 हेतु मतदाताओं को अधिक से अधिक संख्या में अपने मतदान का प्रयोग करने हेतु जिला निर्वाचन दमोह के प्रशासनिक अधिकारियों सहित स्वीप समिति द्वारा चोपरा खुर्द और चोपरा रैयतवाड़ी के आठ मतदान केंद्रों पर भ्रमण किया गया। जहां पहुंचकर ए.डी.एम एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी मीना मसराम, एस.डी.एम आर.एल. बागरी, डिप्टी कलेक्टर बृजेश सिंह सहित मतदान केंद्र 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239 एवं 240 कुल 8 मतदान केंद्रों के बी.एल.ओ., आंगनवाड़ी कार्यकर्ता/ सहायिका द्वारा मतदान केंद्रों में पहुंचकर एडीएम एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी मीना मसराम द्वारा ग्रामीण जनों की समस्याओं को शांतिपूर्वक सुनकर उनके समाधान बताकर उनको संतुष्टि किया गया एवं उन्हें अनिवार्य रूप से अपने मत का प्रयोग करने हेतु संदेश देकर मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाकर लोकतंत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने हेतु संकल्प दिलाया गया। इस दौरान स्वीप समिति द्वारा नागरिकों को जागरूक किया गया, जिसमें एनएसएस जिला संगठन/ यूथ नोडल अधिकारी स्वीप डॉ. जितेंद्र कुमार चौधरी द्वारा मतदाताओं को ष्हम भारत के लोग, मिलकर करेंगे वोटष् गीत के माध्यम से जागरूक करने का प्रयास किया गया तथा सिद्धार्थ जाउरकर एवं सौरभ खरे द्वारा ग्रामीण जनों को मतदान करने हेतु प्रेरित और प्रोत्साहित किया गया।

दिल्ली एम्स में पहुंचकर नौशीन ने जगह बनाई

दमोह देशबन्धु। मेडिकल नर्सिंग के क्षेत्र में दमोह जिले व संभाग को गौरवान्वित करने वाली दमोह की बेटी नौशीन खान जिन्होंने दिल्ली एम्स अस्पताल में इस वर्ष के नर्सिंग एग्जाम में क़ामयाबी हासिल कर एम्स में नर्सिंग ऑफ़िसर के पद पर सिलेक्ट होकर ना सिर्फजिला दमोह बल्कि सागर संभाग और बुंदेलखंड के नाम रौशन करने पर मुस्लिम समाज की जश्ने ईद मिलादुन्नबी शहर कमेटी के सभी सदस्यों ने नौशीन खान को घर पहुँचकर सम्मानित कर दुआएँ और मुबारकबाद शुभकामनाएं दी। मुस्लिम समाज के शहर कमेटी अध्यक्ष जनाब आरिफ उर्फ छिद्दन मिस्त्री ने बेटीनौशीन खान को पुष्प गुच्छ और

स्मृति चिह्न देकर उसके आगे के सफ़र के लिए दुआएँ दी। इस अवसर पर पत्रकार इम्तियाज़ चिश्ती , मास्टर तैयब एवं शहर कमेटी के सैकेट्री अबरार चिश्ती, उपाध्यक्ष अब्दुल मतीन खान एल आई सी ,आदिल ठेकेदार, रिज़वान बाबा,हारून मास्टर फ़िरोज खान, ज़फ़र खान, सलमान बिजली, आमिर ,मोना कुरैशी अता वारिश सहित अनेक लोगों ने मुबारकबाद दी ।

शत प्रतिशत मतदान के लिए ब्लॉक जबेरा के कई गांवों में आम लोगों को किया जागरूक

दमोह देशबन्धु। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मयंक अग्रवाल के निर्देशन एवं सीईओ जिला पंचायत एवं स्वीप नोडल अधिकारी अर्पित वर्मा के मार्गदर्शन में जिला निर्वाचन स्वीप अभियान के जिला सदस्य एवं शासकीय नवीन कन्या हाई स्कूल अभाना के प्राचार्य डॉक्टर आलोक सोनवलकर के नेतृत्व में उत्कृष्ट शिक्षा एवं स्वास्थ्य महिला समिति ने ब्लॉक जबेरा के विभिन्न ग्रामों में सबको मतदान हेतु संकल्प दिलाया एवं योग तन के लिए, वोट वतन के लिए, अपना वोट निडर और निर्भय होकर देने के लिए, आम जनमानस को जागरूक किया। कार्यक्रम में उत्कृष्ट शिक्षा एवं स्वास्थ्य महिला समिति, दमोह से अनीता राजपूत, वर्षा शुक्ला, पूरन सिंह आदि पदाधिकारीयो के द्वारा सभी को अपने वोट के अधिकार के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान सभी उपस्थित नागरिकों को 100 प्रतिशत मतदान की ष्सामूहिक शपथ भी दिलाई गई।

कांग्रेस की 3 सीटे घोषित, दमोह सीट दूसरी सूची में

दमोह देशबन्धु। जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रतनचंद जैन ने विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि जिले की चारो विधानसभाओं में दमोह विधानसभा सीट को छोड़कर पथरिया, जबेरा एवं अनुसूचित जाति वर्ग के लिये आरक्षित हटा विधानसभा से भी अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला एवं मप्र कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कमलनाथ की सहमति से जबेरा विधानसभा से पूर्व विधायक प्रताप सिंह लोधी, पथरिया से रावबृजेन्द्र सिंह एवं हटा से प्रदीप खटीक को कांग्रेस पार्टी का अधिकृत प्रत्याशी घोषित किया गया है एवं दमोह सीट की घोषणा द्वितीय सूची में की जावेगी। उक्त प्रत्याशियों की घोषणा द्वितीय सूची में की जायेगी। उक्त प्रत्याशियां की घोषणा से जिले के समस्त कांग्रेसजनों मं एवं क्षेत्रीय जनता में हर्ष व्याप्त है।

करंट की चपेट में आने से अधेड़ की मौत

पन्ना, देशबन्धु। पन्ना कोतवाली अन्तर्गत पुलिस चौकी ककरहटी के ग्राम देवरी निवासी भुल्लाइ अहिरवार पिता स्व. करंजू अहिरवार उम्र लगभग 50 वर्ष की करंट की चपेट में आने से मौत का मामला सामने आया है, घटना के बाद परिवार एवं गांव में मातम का माहौल है परिजनों की सूचना पर ककरहटी चौकी पुलिस के द्वारा मृतक का पीएम उपरांत अंतिम संस्कार के लिए शव परिजनों को सौंप दिया गया है, घटना के संबंध में मृतक के भतीजे स्वरूप अहिरवार ने जानकारी देते हुए बताया कि चाचा भुल्लाई अहिरवार पिता स्व. करंजू अहिरवार उम्र लगभग 50 वर्ष निवासी ग्राम देवरी विगत 13 अक्टूबर की शाम निमंत्रण से वापस आए थे और पड़ोस में क्रिकेट मैच देखकर रात में अपने घर के दरवाजे बंद करके सोने के लिए चले गए तभी शायद पंखा या बल्व चलाते समय वह करंट की चपेट में आ गए और उसकी मौत हो गई, परिजनों को 14 अक्टूबर को तब पता चला जब काफी देर तक दरवाजे नहीं खुले, दोपहर 2 बजे अंदर देखने पर वह मृत अवस्था में पड़े दिखे तब परिजनों के द्वारा ककरहटी चौकी पुलिस को सूचित किया गया, पुलिस के द्वारा 15 अक्टूबर को पंचनामा पोस्टमार्टम उपरांत मृतक का शव अंतिम संस्कार के लिए परिजनों को सौंप दिया गया है और मर्ग कायम कर विवेचना में लिया है।

नवरात्रि पर्व लिए शाहर में प्रवेश करने वाले भारी वाहन और बसों के मार्ग में किया परिवर्तन

दमोह देशबन्धु। नवरात्रि पर्व को देखते हुये शहर में विभिन्न स्थानों पर प्रतिमाओं की स्थापना की गई है। सुबह श्रदालुओं के द्वारा जल चढ़ाना एवं शाम के समय आरती, भजन संध्या, गरबा तथा चुनरी यात्रा आदि कार्यक्रम होने से शहर में प्रवेश करने वाले भारी वाहन एवं सवारी बसों के मार्ग में परिवर्तन किया गया है, जिससे आम जनता एवं नवरात्रि पर्व पर कोई जाम की स्थिति निर्मित न हो और कानून व्यवस्था एवं आम जनता के लिये यातायात सुगम संचानल बना रहे।

परिवर्तित मार्ग अुनसार कटनी एवं कुम्हारी पटेरा तरफसे आने वाली बसें मारूताल बाईपास से सीधे बालाकोट रोड से सीधे किल्लाई नाका एवं बस स्टैण्ड पहुंचेगी। जबलपुर से आने वाली सभी बसे मारूताल से बालाकोट रोड से होते हुये सेन्ट्रल स्कूल से सीधे किल्लाई नाका से बस स्टैण्ड पहुंचेगी। सागर, छतरपुर एवं पन्ना जाने वाली बसे किल्लाई नाका सेन्ट्रल स्कूल से बालाकोट रोड होते हुये जायेंगी। सागर से आने वाली सभी यात्री बस पावर ग्रिड से बालाकोट रोड होते हुये सेन्ट्रल स्कूल से किल्लाई नाका से सीधे बस स्टैण्ड पहुंचेगी। छतरपुर एवं पन्ना जिले से आने वाली बसे मुक्तीधाम चौक से न्यू ओवर ब्रिज से होते हुये पावर ग्रिड से होते हुये बालाकोड रोड से सीधे सेन्ट्रल स्कूल होते हुये किल्लाई नाका से बस स्टैण्ड पहुंचेगी तथा बस स्टैण्ड से वापिस किल्लाई नाका से सेन्ट्रल स्कूल से होते हुये बालाकोट रोड से बाहर जायेगी। बस स्टैण्ड दमोह से सभी मार्गों पर जाने वाली बसे किल्लाई नाका से सेंट्रल स्कूल होते हुऐ बालाकोट रोड से जायेगी।

वाहनों की चैंकिग कर की गई चालानी कार्यवाही

दमोह देशबन्धु। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मयंक अग्रवाल द्वारा दिये गये निर्देशों के तहत जिले में लगातार वाहनों की चैंकिग कर चालानी कार्यवाही की जा रही हैं। इस सबंध में जिला परिवहन अधिकारी क्षितिज सोनी ने बताया आज वाहनों की चैंकिग के दौरान 23 हजार 500 रूपये के चालान काटे गये है।

नाबालिग पर बुरी नियत से हमला करने वाले आरोपी को 3 वर्ष का कारावास

पन्ना, देशबन्धु। जिला लोक अभियोजन अधिकारी पन्ना के मीडिया प्रभारी सहा. जि. लोक अभि. अधि. ऋषिकांत द्विवेदी के बताये अनुसार घटना संक्षेप में इस प्रकार है कि 14 जुलाई 2022 को अभियोक्त्री ने थाना अमानगंज में उपस्थित होकर इस आशय का लिखित शिकायत आवेदन प्रस्तुत किया कि 13 जुलाई 2022 को रात्रि लगभग 10 बजे उसके माता-पिता एवं भाई घर के दरवाजे के बाहर बैठे थे तथा वह घर के पीछे तरफ बने बाथरूम में बाथरूम करने गयी तो अचानक उसके पीछे से अभियुक्त फूलचंद्र आया और आकर उसका बुरी नियत से दाहिना हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचने लगा, वह जोर से चिल्लाई तथा अपना हाथ खींचकर छुड़ाया तथा उसने बल्ब की रोशनी में अभियुक्त को पहचाना है। उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर उसके माता-पिता तथा उसका भाई दौडे तो वह पीछे के रास्ते से भाग गया। रात्रि होने से वह रिपोर्ट करने नहीं आयी है, आज रिपोर्ट करने आयी है। अभियोक्त्री के उक्त लिखित शिकायत आवेदन के आधार पर अभियुक्त के विरुद्ध थाना अमानगंज में अपराध पंजीबद्ध कर प्रकरण विवेचना में लिया गया। सम्पूर्ण विवेचना उपरांत अभियुक्त के विरूद्ध अभियोग पत्र न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया। न्यायालय महेन्द्र मंगोदिया विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट पन्ना के न्यायालय में प्रकरण का विचारण हुआ। शासन की ओर से पैरवी जिला लोक अभियोजन अधिकारी संदीप कुमार पाण्डेय के मार्गदर्शन में विशेष लोक अभियोजक वरिष्ठ सहा. जिला लोक अभियोजन अधिकारी दिनेश खरे द्वारा की गयी। अभियोजन द्वारा साक्ष्य को क्रमबद्ध तरीके से लेखबद्ध कराकर न्यायालय के समक्ष आरोपी फूलचरण उर्फ फूलचंद्र चौधरी के विरूद्ध अपराध को संदेह से परे प्रमाणित किया तथा आरोपी के कृत्य को गंभीरतम श्रेणी का मानते हुये कठोर से कठोरतम दंड से दंडित किया जाने का अनुरोध किया। अभिलेख पर आई साक्ष्य और अभियोजन के तर्को एवं न्यायिक दृष्टांतो से सहमत होते हुए न्यायालय महेन्द्र मंगोदिया विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट पन्ना के न्यायालय द्वारा आरोपी फूलचरण उर्फ फूलचंद्र चौधरी को क्रमशः धारा. 354 भादसं एवं 7/8 पॉक्सो एक्ट के आरोप में क्रमशः 01 वर्ष एवं 03 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 1000 रूपए, 2000 रूपए के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया।

अग्रसेन जयंती पर निकला चल समारोह, हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम

भेरुन्दा/नसरूल्लागंज, देशबन्धु। अग्रकुल प्रवर्तक महाराजाधिराज अग्रसेन महाराज की जयंती इस वर्ष समाज के नवीन अग्रसेन भवन में मनाई जा रही है। जहां एक सप्ताह तक महिलाओं और बच्चों के विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम व प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। अग्रसेन जयंती की पूर्व संध्या पर खाटू श्याम की भजन संध्या का भव्य आयोजन किया गया। इस वर्ष समाज का चल समारोह समाज के आचाय रज्जू भैया शर्मा के सानिध्य में गांधी चौक से आरंभ किया गया। चल समारोह का रायल मार्केट में पूनम साड़ी सेंटर पर रीना मुकुल अग्रवाल ने स्वागत किय। इसके बाद जे पी मार्केट में मोहन अग्रवाल मोहन रेडिमेड, इसके बाद नगर परिषद अध्यक्ष मारूति शिशिर, मांगीलालजी खंडेलवाल चंद्रकांत खंडेलवाल रितेश मकवाना, महेन्द्र जाट, नीरज शर्मा, पवन , एवं अन्य सहयोगियों ने पुष्प बर्षा कर स्वागत किया। इसके बाद बस स्टैंड पर बाबा कचौड़ी कार्नर पर स्वागत किया गया। अग्रसेन चौराहे पर महाराज अग्रसेन की प्रतिमा पर सामाजिक बंधुओं द्वारा माल्यार्पण किया गया। चल समारोह भोपाल रोड स्थित अग्रसेन धर्मशाला में पहुंच कर एक सभा में परिवर्तित हो गया। समारोह की अध्यक्षता समाज के आचार्य रज्जू भैया वैध ने की । मुख्य अतिथि के रूप में डां अनिता गोयल, विशेष अतिथि के रूप में शैलेन्द्र अग्रवाल पूर्व मंडी सचिव, राजेश अग्रवाल अधिमान्य पत्रकार एवं अध्यक्ष केमिस्ट एसोसिएशन, कैलाश अग्रवाल एवं अग्रवाल समाज के बुजुर्गो के सानिध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रमों में सफल रहे प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। अग्रवाल समाज अध्यक्ष मुकेश अग्रवाल, कोषाध्यक्ष सुशील अग्रवाल , महिला मंडल अध्यक्ष शशि कैलाश अग्रवाल, नवयुवक प्रभारी हिमांशु अग्रवाल, मुरारी अग्रवाल, वीरेंद्र अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल एवं अन्य समाजजनों का सराहनीय योगदान रहा।

भारतीय जन मोर्चा पार्टी की पहली सूची जारी

दमोह देशबन्धु। भारतीय जन मोर्चा पार्टी की केन्द्रीय चुनाव समिति ने मध्यप्रदेश में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव के नामों की पहली सूची जारी कर दी है जिसमें करीब 15 प्रत्यासियों के नाम सूची में जारी हुए है। जिसमें दमोह विधानसभा से परम बंशल एवं पथरिया विधानसभा से डॉ.मनोज विश्वकर्मा को पार्टी द्वारा प्रत्याशी घोषित किया गया है साथ ही जल्द ही पार्टी अपनी पूरे प्रत्याशियों की सूची जारी कर देगी।

शारदीय नवरात्र विशेष

तीन रूपों में दर्शन देती है मां शीतला

वीरू ठाकुर, राहतगढ़। बीना नदी के किनारे बनेनीघाट के पास मां शीतला का मंदिर श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। मंदिर के पुजारी पं. अरुण पांडे बबलू महाराज ने बताया कि इस मंदिर में विराजमान मां शीतला की प्रतिमा के दर्शन करने से श्रद्धालुओं को मां तीन रूप में दर्शन देती हैं। ऐसी मान्यता है कि मां की प्रतिमा सुबह नौ वर्ष की कन्या के रूप में, दोपहर के समय युवा अवस्था में एवं शाम होते ही वृद्ध मां के रूप में दर्शन देती है। इस मंदिर के बारे में अनेक किवंदती शामिल है। कहा जाता है कि राहतगढ़ नगर के प्राचीन ऐतिहासिक किला के राजा भी मां शीतला के तीन रूपों के दर्शन करने के लिए इसी मंदिर में आते थे, इनमें राजा दरकसिंह जो अपने किसी जरूरी कार्य एवं युद्ध जैसे विशेष कार्य करने से पहले शीतला माता के दर्शन करने जरूर आते थे, इसके बाद वह मां का आशीर्वाद लेकर जाते थे, इसी तरह राजा ज्वालासिंह जिनका ओरछा सहित पूरे बुंदेलखंड में बोलबाला था। उन पर मैहर वाली मां शारदा की विशेष कृपा थी, वह भी इस मंदिर में विराजमान मां शीतला के दर्शन करके अपने आप को धन्य समझते थे।

नवरात्रि में नौ तरह से श्रंगार

नवरात्रि पर मां शीतला का श्रद्धालु नौ दिन तक बदल बदल कर विशेष श्रृंगार किया करते हैं। माताराती को बदलते स्वरूप के अनुसार के श्रंगार किया जाता है। नगर के वार्ड नंबर चार में टेकरीधाम में विराजमान मां खेरापति दरबार, मां खेरापति मढ़ा मंदिर सहित ब्लॉक क्षेत्र के मां ज्वाला देवी मंदिर जलंधर, ग्राम सागोनी की पहाड़ी पर स्थित मां शारदा दरबार में नौ दिन तक आस्था का सैलाब उमड़ेगा।

पंडालों में देवी मूर्तियां स्थापित

शारदीय नवरात्र रविवार से शुरू हो गया। शक्ति की भक्ति में सारा नगर लगा हुआ है। माताराती को मनाने श्रद्धालु अपने अपने तरीके से माता की भक्ति में लीन रहेंगे।

वही नगर के दुर्गा चौक पुराना थाना, शनिचरा बाजार, बस स्टैंड, ब्लॉक कालोनी, बुधवारा, बिजली ऑफिस, बड़ापुरा आदि मुख्य स्थानों पर देवी मूर्तियां विधि विधान से स्थापित हुई। पंडालों में विशेष साज सज्जा की गई है। वही क्षेत्र के श्रद्धालु नवरात्रि की पंचमी पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मां ज्वाला देवी मंदिर वार्ड नंबर 15 से मां ज्वाला देवी मंदिर जलंधर नंगे पैर मां ज्वाला को झंडा चढ़ाने जाएंगे।

कांग्रेस की सूची जारी: पूर्व मंत्री सुरेंद्र चौधरी, हर्ष यादव, तरवर लोधी और नीरज शर्मा चुनाव मैदान में

शारदा खटीक का कांग्रेस से इस्तीफा

सागर, देशबन्धु। मप्र विधानसभा चुनाव को लेकर नवरात्रि के पहले दिन कांग्रेस ने अपने 144 प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी है। जिसमें जिले की आठ में से चार विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार घोषित किए हैं। इसमें नरयावली सुरक्षित सीट से पूर्व मंत्री सुरेंद्र चौधरी, देवरी से पूर्व मंत्री हर्ष यादव, बंडा से तरवर सिंह लोधी और नीरज शर्मा चुनाव मैदान में उतरेंगे। कांग्रेस ने जिले की चार सीटो सागर, बीना, खुरई और रहली को रोक कर रखा है। उधर बीजेपी ने बीना को छोड़कर सभी जगह प्रत्याशी घोषित कर दिए है। जिले की हाई प्रोफाइल सीट सुरखी विधानसभा से भाजपा के प्रत्याशी केबिनेट मंत्री गोविंद सिंह राजपूत के खिलाफ कांग्रेस ने दो माह पहले भाजपा छोड़कर आए नीरज शर्मा को उम्मीदवार बनाया है। नीरज सुरखी के राहतगढ़ से जनपद और नगर पंचायत अध्यक्ष रह चुके है। नीरज शर्मा का यह पहला विधानसभा चुनाव है। वही देवरी विधानसभा से विधायक और कमलनाथ सरकार में मंत्री रहे हर्ष यादव को कांग्रेस ने उम्मीदवार बनाकर मैदान में उतारा है। उनका मुकाबला बीजेपी के बृजबिहारी पटेरिया से है। बृज बिहारी पटेरिया ने एक साल पहले कांग्रेस छोड़ दी थी। अब मुकाबला आमने सामने है। हर्ष यादव 2003 में हारने के बाद 2013 और 2018 में लगातार जीते। वही बीजेपी उम्मीदवार बृज बिहारी पटेरिया का यह तीसरा चुनाव है। वे देवरी सीट से 1998 में जीते और 2008 में हारे। बंडा विधानसभा से विधायक तरवर सिंह लोधी पर कांग्रेस ने भरोसा जताया है। उनका मुकाबला बीजेपी के वीरेंद्र सिंह लोधी से है। तरवर का यह दूसरा चुनाव है। बंडा सीट पर बीजेपी असंतोष का सामना कर रही है। बीजेपी के पूर्व सांसद लक्ष्मी नारायण यादव के बेटे और बंडा सीट से दावेदार सुधीर यादव और बीजेपी नेता रंजोर सिंह बुंदेला ने पार्टी को छोड़ दिया है। रंजोर सिंह को बसपा ने बंडा से प्रत्याशी बनाया है। नरयावली सुरक्षित सीट से भाजपा प्रत्याशी प्रदीप लारिया और सुरेंद्र चौधरी पर कांग्रेस फिर भरोसा जताया। दोनो के बीच यह तीसरा मुकाबला है। नरयावली सीट से सुरेंद्र चौधरी पांचवी दफा चुनाव मैदान में होंगे। सुरेंद्र चौधरी पहला चुनाव 1998 में जीते थे और दिग्विजय सिंह सरकार में कृषि राज्य मंत्री बने थे। इसके बाद तीन चुनाव 2003, 2013, 2018 में हार गए थे। वही बीजेपी के प्रदीप लारिया लगातार तीन जीत हासिल कर चुके है। नरयावली विधानसभा मे दोनो पार्टी के प्रत्याशियो की उम्मीदवारी से पार्टी में असंतोष सामने आया है। वरिष्ठ कांग्रेस नेत्री और तीन बार से जिला पंचायत सदस्य शारदा खटीक ने कहा कि वे कांग्रेस से इस्तीफा दे रही हूं। मेने क्षेत्र में खूब काम किया है। नरयावली विधानसभा क्षेत्र से मैने कांग्रेस से टिकिट की दावेदार की थी।

मकरोनिया नपा में शारदा खटीक के बेटे जितेंद्र खटीक कांग्रेस के पार्षद है। उधर बीजेपी की सूची आने पर पूर्व जिला पंचायत सदस्य और अनुसूचित जाति मोर्चा के जिला अध्यक्ष अरविंद तोमर ने बीजेपी से त्याग पत्र दे दिया। अरविंद नरयावली सीट से दावेदार थे। इसके पहले विधायक प्रदीप लारिया के चचेरे भाई हेमंत लारिया ने भी बीजेपी से नाता तोड़कर कांग्रेस का दामन थाम लिया था। वही जिले की 4 विधानसभा सीटो पर कांग्रेस ने प्रत्याशियों की घोषणा नही की है। इनमें सागर, रहली, खुरई और बीना शामिल है। इनमे तीन सीटें हाई प्रोफाइल हैं। जिसमें रहली विधानसभा से भाजपा 8 बार के विधायक व मंत्री गोपाल भार्गव, खुरई विधानसभा से मंत्री भूपेंद्र सिंह, सागर से तीन बार के विधायक शैलेंद्र जैन को उम्मीदवार बनाकर मैदान में उतारा है। इन सीटो पर कांग्रेस मजबूत प्रत्याशी उतारने के लिए मंथन कर रही है। बीना सीट को बीजेपी ने भी रोक के रखा है। दो तीन दिन में इन सीटो पर प्रत्याशियों की घोषणा हो सकती है।

नौ दिन नौ रात जय माई की भक्ति का पर्व आरंभ

मालथौन, देशबन्धु। नौ दिन नौ रात भक्ति का पर्व आज रविवार से आरंभ हो गया। माताराती का दरबार प्यारा सजा है भक्तों की लगने लगी कतार। नगर के ह्रदय स्थल में विराजमान आदि शक्ति भवानी का स्वरूप महाकाली के दरबार में भक्तों भीड़ लगने लगी है। पहले दिन रविवार की सुबह 5 बजे से समूचे नगर से माताराती के भक्त नंगे पैर हाथों में कलश एवं पूजा की थाली सजाकर माताराती के चरणों में जल अर्पित कर आराधना में जुट गए। नगर समेत ग्रामीण अंचल में अनेक जगह माताराती पंडालो में पधारी है, साथ में जवारे बोय गए है। शारदीय नवरात्रि का भक्तो में उत्साह के साथ स्वागत किया ढोल ढमाकों के साथ पंडालो में मां दुर्गा जी की झांकियो को सुशोभित किया गया पंडा पुजारियों द्वारा स्थापना कराई गई। देर रात तक स्थापना दौर चलता रहा। नगर के प्राचीन किला महाकाली मंदिर में हर वर्ष की भांति नवरात्रि में नव दिवसीय अखण्ड रामायण पाठ की स्थापना की गई। शाम को संगीतमय महाआरती में बड़ी संख्या में श्रृद्धालु शामिल हुए।

शक्ति की भक्ति के लिए नगर में की गई आकर्षक सजावट पंडालों में विराजी माताराती

बण्डा, देशबन्धु। शारदीय नवरात्र शुरू होते ही नगर के चिन्हित स्थानों पर जहां दुर्गा प्रतिमा स्थापित की जाती हैं दुर्गा कमेटियों द्वारा आकर्षक सजावट की गई, दुर्गा कमेटियों ने पंडालों के साथ साथ नगर को भी सजाया है जिससे चारों तरफ सुंदरता भक्ति रस सराबोर हो रहा है। नगर में कचहरी दुर्गोत्सव समिति अध्यक्ष रोमी तिवारी, झंडा चौक दुर्गोत्सव समिति अध्यक्ष पन्ना पार्षद, बरायठा तिराहा अध्यक्ष नारायण साहू पचमढ़ी दुर्गोत्सव समिति अध्यक्ष दुष्यंत सिंह बिट्टू भैया, नवयुवक दुर्गोत्सव समिति अध्यक्ष श्रीकांत सराफबरा चौराहा, अध्यक्ष अभिषेक ठाकुर नया मुहल्ला दुर्गोत्सव समिति अध्यक्ष दीपक दुबे ने सभी क्षेत्र वासियों से एवं श्रद्धालुओं से दर्शन लाभ लेने की अपील की है इसके साथ ही संजय कॉलोनी, मंडी प्रांगण, गायत्री मंदिर सहित लगभग चौबीस स्थानों पर विराजेंगी जगत जननी मां दुर्गा नवरात्रि पर्व के चलते अंबेडकर वार्ड स्थित खैर माता के मंदिर में और पुरानी कचहरी स्थित मनसा माई के मंदिर में प्रतिदिन शाम 7 बजे से मां की संगीतमय आरती की जाती है कमेटी अध्यक्ष मनोज तिवारी ने सभी श्रद्धालुओं से आरती में शामिल होकर धर्म लाभ लेने की अपील की है। आचार संहिता के चलते प्रशासन भी अलर्ट है। प्रशासन ने सभी को आदर्श आचार संहिता के संबंध में जानकारी दी और शासन के निर्देशानुसार नवरात्रि के पर्व पर उत्सव मनाने को कहा।

शहर आपका अपना है, सौंदरीकरण को क्षतिग्रस्त न करें, आपकी अपनी संपत्ति है: कलेक्टर

सागर, देशबन्धु। संपूर्ण सागर शहर आपका अपना है, शहर में किये जा रहे सौंदरीकरण को क्षतिग्रस्त न करें यह आपके ही पैसों की संपत्ति है इसे सुरक्षित बनाएं रखने में प्रशासन का सहयोग करें। उक्त अपील कलेक्टर दीपक आर्य ने की है। कलेक्टर ने बताया कि सागर को सुंदर स्वच्छ बनाने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहे हैं इसी कड़ी में सागर स्मार्ट सिटी एवं नगर निगम के माध्यम से भी अनेक सौंदरीकरण के कार्य लगातार प्रगति रथ हैं और कई कार्य पूर्ण हो चुके हैं। उनको सुरक्षित बनाए रखने में जिला प्रशासन, नगर निगम का सहयोग करें। विगत दिवस देखने में आया कि संजय ड्राइव पर लगाए गए स्मार्ट सिटी के बोर्ड कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा क्षतिग्रस्त किए गए हैं, क्षतिग्रस्त होने से सुंदरीकरण में दाग दिखाई देने लगा है। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति सौंदरीकरण या अन्य शासकीय संपत्ति को क्षतिग्रस्त करता है तो इसकी सूचना तत्काल दें जिससे की कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके। शीघ्र ही सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं जिसके माध्यम से क्षतिग्रस्त करने वाली असामाजिक तत्वों पर कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जा सकेगी। इसी प्रकार शहर का महत्वपूर्ण एलिवेटेड कॉरिडोर पर भी कुछ और सामाजिक तत्वों द्वारा रात्रि के समय गंदगी की जा रही है जिससे कि एलिवेटेड कॉरिडोर गंदा दिखाई देता है। शहरवासी यदि इस प्रकार की कोई घटना करते पाया जाये इसकी सूचना तत्काल जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन को जिससे की उन पर कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके और शहर को स्वच्छ सुंदर बनाने में मदद मिल सके।

एक दिवसीय फिंगर प्रिंट कार्यशाला का आयोजन

सागर, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक अभिषेक तिवारी के आदेशानुसार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लोकेश सिन्हा के निर्देशन में पुलिस कन्ट्रोल रूम में रविवार को एक दिवसीय फिंगर प्रिंट प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें न्यायालयो से कुल 46 पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित हुए। एडीपीओ अमित जैन द्वारा निर्णय स्लिप, स्थाई वारंट एवं गिरफ्तारी वारंट जारी करने एवं तामीली हेतु भेजने के सम्बंध में निर्देश दिए। डीएसपी फिंगर प्रिन्ट विजय भूमरकर एवं उपनिरीक्षक फिंगर प्रिंट अनिल कुमार द्वारा इनवेस्टिगेशन में फिंगर प्रिंट की महत्वपूर्ण उपयोगिता, साफ व स्पष्ट फिंगर प्रिंट तैयार करने एवं भारत सरकार की बहुउद्देशीय परियोजना नेफिस के संबंध में महत्तवपूर्ण जानकारी दी गई।

शाकाहार को अपने जीवन का अंग बनाए: मुनिश्री

सागर, देशबन्धु। वर्तमान परिपेक्ष्य में शाकाहार एक वैज्ञानिक दृष्टि विषय पर अविजित समूह विदिशा एवं चार्तुमास समिति भाग्योदय के तत्वाधान में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसके पुरूस्कार वितरण भाग्योदय तीर्थ में मुनिश्री अजितसागर महाराज और निर्दोष सागर महाराज के ससंघ सानिध्य में आयोजित सिद्धचक्र महामंडल विधान के दौरान प्रदान किए गए। इस अवसर पर मुनिश्री अजित सागर महाराज ने कहा कि शाकाहार को अपने जीवन का अंग बनाएं। प्रतियोगिता में सागर शहर की 28 स्कूलों के नौवी से बारहवी तक के 1958 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। निर्णायक मंडल द्वारा चयनित छात्र-छात्रओ को पुण्यार्जक विजय जैन फांऊड्री परिवार खुरई के द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं 10-10 सांत्वना पुरूस्कार प्राप्त छात्र-छात्राओं को 5100, 3100, 2100, 1100 की नगद की राशि के साथ स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। मंचासीन अतिथियों में रविशंकर स्कूल के प्राचार्य डॉ. महेंद्र प्रताप तिवारी, जैन पब्लिक स्कूल के प्राचार्य रजनीश जैन, संतोष बिलहरा, सुरेंद्र डबडेरा, प्राचार्य उषा सतभैया, प्राचार्य सुरेंद्र कुमार जैन, अनीता जैन, जेके जैन, अजय सराफ, अभिषेक जैन, मनोज जैन मालथौन ने सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन मनोज शास्त्री एवं ब्र. वीरेंद्र भैया हीरापुर ने किया। निबंध संकलन राजकुमार मिनी ने किए। इस अवसर पर ब्र. संजीव भैया कंटगी ने विधान के समापन पर हवन संपन्न कराया। मालूम हो कि समिति द्वारा शाकाहार निबंध प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आवेदन पत्र जमा कराए गए थे। निबंध लेखन कर जमा कराए गए।

शाकाहार निबंध प्रतियोगिता में 28 स्कूलों के 1958 छात्र-छात्राएं शामिल, समिति द्वारा पुरूस्कृत

निःशुल्क शतरंज प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न

सागर, देशबन्धु। रविवार को रोटरी क्लब ऑफ सागर के रोटरी कम्युनिटी कॉर्प आरसीसी के द्वारा रोटरी कम्युनिटी कोर्प आरसीसी शतरंज प्रशिक्षण रविवार सुबह 9 बजे कांची रेस्टोरेंट सिविल लाइन में बालकृष्ण जैसवाल सेवा निर्मित प्रिंसिपल डिग्री कॉलेज सागर के मुख्य अतिथि आरसीसी अधि. बीनू शमशेर जंग बहादुर राणा, आशीष त्रिपाठी, अजय उपाध्याय, रजनी वर्मा, प्रभात राणा की उपस्थिति में किया गया। इस प्रशिक्षण में 18 बच्चों ने सहभागिता की। यह प्रशिक्षण हर रविवार को सुबह 9 से 11 तक निशुल्क कांची रेस्टोरेंट में दिया जाएगा। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य शतरंज में बच्चों की दिलचस्प बड़े और जिससे उनके खेल के स्तर में बढ़ोतरी हो एवं आगामी 5 वर्षों में सागर के छात्र-छात्राओं को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त हो सके।

डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय विकसित करेगा ताइवान के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंध

ताइवान दौरे में कुलपति कई विश्वविद्यालयों से हुई चर्चा, एक्सचेंज प्रोग्राम होगा अकादमिक साझेदारी का अहम हिस्सा

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज के प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में ताइवान का दौरा किया। उन्होंने युशान फोरम ऑन एशियन डायलॉग फॉर इनोवेशन एंड प्रोग्रेस ऑन टैलेंट एक्सचेंज एंड एन्हांस रीजनल रेजिलिएंस में भाग लिया और ताइवान के विश्वविद्यालयों में चल रहे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के बारे में चर्चा की। ताइवान के शिक्षा विभाग के उपमंत्री, मोन ची लियो द्वारा एक रात्रि भोज का आयोजन किया गया, जहां दल ने मंत्रालय के अन्य अधिकारियों और ताइवान विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ भारत और ताइवान के बीच आगे के सहयोग और दोहरे डिग्री कार्यक्रमों पर चर्चा की। कुलपति ने प्रतिनिधिमंडल के साथ ताइवान के नेशनल ताइपे टेक्नोलोजिकल यूनिवर्सिटी ताइपेइ, नेशनल सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, ताओयुआन, नेशनल त्सिंग हुआ यूनिवर्सिटी सिंचु, नेशनल यांग मिंग चियाओ तुंग यूनिवर्सिटी सिंचु, नेशनल चुंग हिसंग यूनिवर्सिटी ताइचुंग, नेशनल चेंग कुंग यूनिवर्सिटी ताइनान का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल ने प्रत्येक विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं का निरीक्षण किया। इस दौरान विभिन्न संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के निदेशकों और डीन के साथ अनुसंधान और शैक्षणिक कार्यक्रमों के संबंध में आपसी सहयोग पर विचारों का आदान प्रदान किया। प्रतिनिधिमंडल ने इस बात पर खुशी जताई कि भारतीय छात्र सेमीकंडक्टर, भौतिकशास्त्र, अर्थ साइंस, लाइफ साइंस, मानव विज्ञान आदि क्षेत्रों में काफी विशेषज्ञता हासिल कर रहे हैं। प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय छात्रों के साथ अलग-अलग बैठकें आयोजित की और उनसे बातचीत की। भारतीय छात्रों ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि हमने अपने रूचि के क्षेत्रों को पढने के लिए चुना और ताइवान के विश्वविद्यालय हमें इसके लिए उपयुक्त लगे इसलिए अध्ययन के लिए हमने यहां के संस्थान चुने। यहां अनुभवात्मक शिक्षा अधिक है और हम विशेष रूप से अपने व्यावहारिक कार्यों में शामिल होते हैं।

हमारे शिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि हम वास्तव में सीखें। हम तकनीक सीखें और अपने दम पर उपकरणों को संभालने में सक्षम हों। सभी छात्रों ने कहा कि हम अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद भारत वापस लौटना चाहेंगे और ज्ञान को बढ़ाने, सेमी कंडक्टर सुविधाओं का निर्माण करने और परियोजनाओं को पूरा करने के लिए भारत के समग्र विकास में योगदान देंगे।

एक्सचेंज प्रोग्राम होगा अकादमिक साझेदारी का अहम हिस्सा

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों पर विस्तार से चर्चा की, जिसमें आदान प्रदान कार्यक्रमों को केंद्र में रखते हुए इस बात विचार विमर्श किया गया कि दोनों देशों के छात्रों को कैसे लाभान्वित किया जा सकता है। उन्होंने कुलपतियों को रुचि की अभिव्यक्ति की पेशकश की। कई विश्वविद्यालय इसके लिए सहर्ष तैयार हुए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के निदेशकों और डीन के साथ चर्चा के बाद, वह सार्थक सहयोग के लिए आगे बढ़ेंगी। इस तरह के सहयोग से डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय एक सफल भागीदार के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित होगा।

स्वामी पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि.के लिए प्रकाशक गिरिराज चाचा मुद्रक गिरिराज चाचा द्वारा दैनिक भास्कर प्रेस (डी बी कार्प लि.) प्लाट नं. 36 इंडस्ट्रीयल एरिया सागर म.प्र. सागर से मुद्रित एवं 56 अग्रवाल बिल्डिंग एक्सिस बैंक के पीछे 10 सिविल लाईन्स, सागर मप्र से प्रकाशित, संपादक: **पलाश सुरजन,** कार्यकारी संपादक: **ज़ाकिर अली** * प्रबंध संपादक **डॉ. योगेश दत्त तिवारी** फोन 07582-228742 ई-मेल. deshbandhusgr@yahoo.in **प्रेस पंजीयन-** MPHIN/2016/69061 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।